`

दो वर्षीय

बैचलर ऑफ एजुकेषन कार्यक्रम

Two year

Bachelor of Education (B.Ed.) Programme

पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम

Curriculum Framework and Syllabus

for

Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bhagalpur

B.Ed. Syllabus Development Committee

Vision and Guidance

- Prof. R. S. Dubey, Vice Chancellor, TMBU, Bhagalpur
- Prof. A. K. Roy, Pro-Vice Chancellor, TMBU, Bhagalpur
- Dr. Rakesh Kumar, Dean, Education, TMBU, Bhagalpur

Core Members

- Dr. Ali Imam, Member, Eastern Regional Committee, NCTE
- Dr. Gyandeo Mani Tripathi, Member, NCTE, New Delhi
- Shri Chandan Shrivastava, CIE, Department of Education, University of Delhi, Delhi
- Dr. Rakesh Kumar, Principal, Govt. College of Teacher Education, Bhagalpur
- Dr. Achyut Kumar Singh, Principal, Rahmani B.Ed. College, Munger
- Dr. Ajit Kumar Pandey, Principal, P.B.T.T. College, Naragara Kothi, Bhagalpur
- Dr. Kameshwar Singh, Principal, Teachers' Training College, Barari, Bhagalpur
- Dr. Dharmendra Lal, Principal, B.N. College of Education, Dhoraiya
- Dr. Usha Singh, Prof. Incharge, V.B.College of Education, Saboor,Bhagalpur

Coordinators

- Dr. A. K. Mishra, C.C.D.C, TMBU, Bhagalpur
- Dr. M. K. Singh, Inspector of Colleges, TMBU, Bhagalpur
- Dr. Ashutosh Prasad, Inspector of Colleges, TMBU, Bhagalpur

Guiding Principles

In the light of recent transformations in teacher education, we engaged in the process of envisioning our two year B.Ed. programme. While developing the document, that would satisfy the needs of our time, we agreed on certain broad principles that should inform this process. First, our thinking on teacher education should be integrative and flexible. It must not be a prescriptive endeavour. Second, the curriculum of teacher education should capture the global canvas of contemporary knowledge required for preparing effective teachers. Third, the potential of socio-cultural context of learners as a source for rejuvenating teaching-learning is very important. Therefore, the content of curriculum should emphasize context based understanding of learners. Fourth, there is a need to acknowledge the existence of a diversity of spaces and curriculum sites for the learning of teachers. Along with this, we should also appreciate the diversity of learning styles of learners and their learning contexts in which teachers have to function, such as oversized classrooms, language, ethnic and social diversities, children suffering disadvantages of different kinds. Fifth, any pedagogical knowledge has to constantly undergo through the process of modification to meet the needs of diverse contexts through critical reflection by the teachers on their practices. Therefore, a teacher education programme should be designed to enhance the essential professional capacities in teachers to construct knowledge, to deal with diverse contexts and to develop autonomy for taking their professional decisions. Lastly, the curriculum should also have enriching space for developing positive professional identity in teachers which is very significant for the motivation and their effective functioning.

Against this backdrop and keeping in view the curriculum framework for two years, B.Ed. programme envisioned by NCTE, it is a humble effort to develop this syllabus document for B.Ed. programme.

प्रस्तावना

अब तक के पारम्परिक षिक्षक–प्रषिक्षण कार्यक्रमों में प्रषिक्षुओं को एक ऐसी व्यवस्था में समायोजित करने के लिए प्रषिक्षण दिया जाता रहा है जिसमें षिक्षा के बारे में यह मान्यता रही है कि उसमें केवल सूचनाओं का प्रसार होता है और इसलिए उन कार्यक्रमों का एकमात्र उद्देष्य षिक्षकों को कुछ खास सूचनाओं और कौषलों से लैस कर देना ही भर रहा है। उन कार्यक्रमों में न तो स्कूल व समाज से जुड़े मुद्दों के विषय में चर्चा करने का पर्याप्त अवसर होता था और न ही नए प्रकार के शैक्षणिक अनुभवों के लिए कोई जगह। उनमें ज्ञान को 'प्रदत्त' की तरह, बिना सवाल उठाए मान लेने की स्थापित संस्कृति अंतर्निहित थी। अतः पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का न तो प्रषिक्षुओं द्वारा परीक्षण किया जाता था और न ही वहाँ के अन्य षिक्षकों द्वारा। यदि विष्लेषण करें तो षिक्षक–प्रषिक्षण के पूर्ववर्ती पाठ्यचर्याओं में न तो भाषा की केंद्रीयता के महत्त्व को समझा गया और न ही विषय ज्ञान के महत्व को। साथ ही, अधिकतर षिक्षक–प्रषिक्षण कार्यक्रमों में प्रषिक्षुओं को अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति के अवसर भी नहीं थे। इन सब के कारण, आज सामान्यतः विद्यालय में षिक्षकों के कार्यों का यांत्रिक स्वरूप ही दिख पाता है जिनमें विष्लेषणात्मक नज़रिए का घोर आभाव होता है। यदि विष्लेषण करें कि षिक्षक–प्रषिक्षण कार्यक्रमों की ऐसी दयनीय स्थिति क्यों रही है तो हम पायेंगे कि इन कार्यक्रमों ने स्वयं को षिक्षा के बदलते सरोकारों के साथ नहीं बदला। जबकि समाज, संस्कृति और शैक्षिक नीतियों व विचारों में कई बदलाव लगातार आते रहे।

समकालीन शैक्षिक विमर्षों के अंतर्गत, शिक्षक की भूमिका में एक बड़ी तब्दीली आई है। अब तक षिक्षक को ज्ञान के स्रोत के रूप में केंद्रीय स्थान मिलता रहा है, लेकिन अब उसकी भूमिका ज्ञान के स्रोत के बदले एक सहायक की होगी जो सूचना को ज्ञान या बोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों से षिक्षार्थियों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों की पूर्ति में मदद करे। षिक्षक की यह भूमिका पहलेवाली केन्द्रीय भूमिका से भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें उसकी भूमिका का विस्तार हुआ है। अब तक उसके लिए सिर्फ ज्ञान देना ही महत्वपूर्ण था लेकिन नयी भूमिका में उसे बच्चों के सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ को भी समझना अहम है। दूसरी महत्त्वपूर्ण तब्दीली ज्ञान की अवधारणा में आई है। अब, ज्ञान को एक सतत प्रक्रिया माना जाने लगा है जो वास्तविक अनुभवों के अवलोकन, पुष्टिकरण आदि से उत्पन्न होता है। एक और बड़ा बदलाव शैक्षिक प्रक्रियाओं पर सामाजिक संदर्भों के प्रभाव की समझ से संबंधित है। अधिगम उस सामाजिक वातावरण या संदर्भ से बेहद प्रभावित होता है जहाँ से शिक्षार्थी और शिक्षक आते हैं। स्कूल और कक्षा का सामाजिक वातावरण सीखने की प्रक्रिया, यहाँ तक कि पूरी शिक्षा प्रक्रिया पर असर डालता है। इसको ध्यान में रखते हुए षिक्षार्थी की मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं की जगह उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भों की ओर अधिक बल देने की आवश्यकता है।

यह सारी समीक्षा, षिक्षक–प्रषिक्षण के कार्यक्रमों में क्रांतिकारी बदलावों की अपेक्षा करती है, जिसके आलोक में बी.एड. के इस नयी पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम को बनाया गया है। यह पाठ्यचर्या प्रषिक्षुओं को इस प्रकार से तैयार होने का अवसर देगी कि वे उत्साहवर्धक, सहयोगी और मानवीय बन सकें तथा जिनके माध्यम से षिक्षार्थी अपनी संभावनाओं का पूर्ण विकास कर जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाएँ। इस दृष्टि को साकार करने के लिए, यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि षिक्षक–प्रषिक्षण में ऐसे तत्व समाहित हों जो प्रषिक्षुओं को निम्न दिषाओं में सक्षम बनाए :

- शिक्षार्थियों के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ को समझने की क्षमता उनमें विकसित हो ताकि कक्षा में वे उनकी विविधता और अनुभावों का सम्मान कर सकें।
- सीखना किस प्रकार होता है, इसकी समझ उनमें हो और वे उसके अनुकूल माहौल बनाए।
- ज्ञान को व्यक्तिगत अनुभव के रूप में समझें जो सीखने–सिखाने के साझे अनुभव के रूप में प्राप्त किया जाता है, न कि पाठ्यपुस्तकों के बाह्य यथार्थ के रूप में।
- ज्ञान को पृथकता में न समझकर उन्हें षिक्षार्थियों से सम्बंधित हर आयाम से जोड़कर देख सकें।
- देश में षिक्षा का जो अतीत रहा है, उसके प्रति सुविज्ञ दृष्टिकोण विकसित कर सकें तथा उनके आलोक में षिक्षा की समकालीन परिस्थितियों का विष्लेषण कर सकें।

- विद्यालय संस्कृति के प्रक्रियाओं में एक सजग एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोणवाले षिक्षक की भूमिका निभा सकें अथार्त उन प्रक्रियाओं का षिक्षक सिर्फ पालन न करे बल्कि उनको परखना सीखे।
- षिक्षा को समझने में जिन–जिन स्रोतों से मदद मिलती है, उनके प्रति उत्साही बने।
- उन सामाजिक, पेषेवर और प्रषासनिक संदर्भों के प्रति उनमें संवेदनषीलता हो जिनमें उन्हें काम करना पड़ता है।
- स्वयं में षिक्षणषास्त्रीय नज़रिए को विकसित कर सके ताकि वे शैक्षिक प्रक्रियाओं को एक षिक्षक के तौर पर विष्लेषित करे न कि सामान्य व्यक्ति के रूप में।
- कक्षागत प्रक्रियाओं की सैद्धांतिक समझ बना सके तथा उनमें एवं व्यवहार में जो अंतर है, उसके कारणों की पड़ताल कर सके।
- भाषा की गहरी समझ और दक्षता हासिल करें।
- अपनी आकांक्षाओं, स्व–समझ, क्षमताओं व रुझानों को पहचाने तथा उनके अनुरूप अपने अस्मिता का विकास करे।
- वे षिक्षक के रूप में पेशेवर उन्मुखीकरण का प्रयास करे।
- मूल्यांकन को सतत शैक्षिक–प्रक्रिया माने।
- कला षिक्षा के माध्यम से षिक्षार्थियों में कला और सौंदर्यबोध समझ का विकास कर सकें।
- वंचित बच्चों और विभिन्न असमर्थताओं वाले बच्चों की आवष्यकताओं सहित सभी बच्चों की सीखने की आवष्यकताओं को समझ सके।
- अपने परिवेष एवं समुदाय के प्रति स्वयं को जिम्मेवार बना सके।
- मार्गदर्षन व परामर्ष के कौषल और क्षमताओं का विकास कर सके ताकि बच्चों के शैक्षणिक, व्यक्तिगत और सामाजिक स्थितियों का समाधान सुझाने में उन्हें सुविधा हो।
- कार्य के द्वारा विभिन्न विषयों का ज्ञान विविध मूल्यों और विविध कौषलों के विकास के साथ किस प्रकार प्राप्त होता है इसकी षिक्षा देना सीखे।
- नयी तकनीकों को अपने कार्य का हिस्सा बना सके तथा उनका लगातार अद्यतन कर सके।

उपरोक्त तत्वों की प्राप्ति के लिए षिक्षक–प्रषिक्षण के अवयवों का आधार विस्तृत किया गया है जिसमें विषयपत्रों का एक नया और उपयोगी स्वरूप निकलकर आया है। साथ ही, इस षिक्षक–प्रषिक्षण कार्यक्रम की मान्यता है कि सिद्धांत और व्यवहार को समन्वित रूप में देखा जाना चाहिए न कि दो अलग–थलग पहलुओं के रूप में। अतः सभी विषयपत्रों में सिद्धांत और व्यवहार दोनो ही अवयवों को समाहित किया गया है। इस षिक्षक–प्रषिक्षण कार्यक्रम में, साल में एक बार मूल्यांकन के चलन की जगह उसे एक सतत प्रक्रियागत गतिविधि के रूप में पहचानने की भी आवष्यकता पर बल दिया गया है। इससे षिक्षक–प्रषिक्षक, प्रषिक्षुओं के सहयोग, सहकार्य, पर्यवेक्षण, लिखित–मौखिक क्षमता, दृष्टिकोण, प्रस्तुति आदि में मौलिकता को परख सकेंगे। इस कार्यक्रम का मानना है कि सभी मूल्यांकनों का लक्ष्य सुधार है। अतः प्रषिक्षुओं की शक्तियों और कमियों को समझते हुए यह पता करना सबसे महत्वपूर्ण है कि किन क्षेत्रों में उन्हें और मज़बूत किए जाने की ज़रूरत है ताकि सीखने की प्रक्रिया के अगले लक्ष्यों की पहचान की जा सके। यह मूल्यांकन ज्यादातर अंक आधारित (संख्यात्मक) न होकर एक पैमाने पर (गुणात्मक) किया जाएगा। संक्षेप में, यह नया षिक्षक–षिक्षण कार्यक्रम अपनी नयी दृष्टि के साथ विद्यालय व्यवस्था में बदलावों के प्रति अधिक संवेदनषील होगा क्योंकि यह पूरे नज़रिए में बड़े परिवर्तन की कल्पना करता है।

इस पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम को बनाने के दौरान दो महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है। पहला यह कि इसके निर्माण में राष्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई) द्वारा सुझाये गए बी.एड. पाठ्यचर्या की रूपरेखा को आधार के रूप में माना जाए और दूसरा यह कि राज्य मे षिक्षा की अपनी आवष्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम की संरचना एवं विषयपत्रों को निर्मित किया जाए। इस प्रकार, यह पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम राष्ट्रीय और स्थानीय, दोनो अपेक्षाओं को पूरा कर सके। यदि देखें तो पाठ्यचर्या में तीन व्यापक घटक हैं।

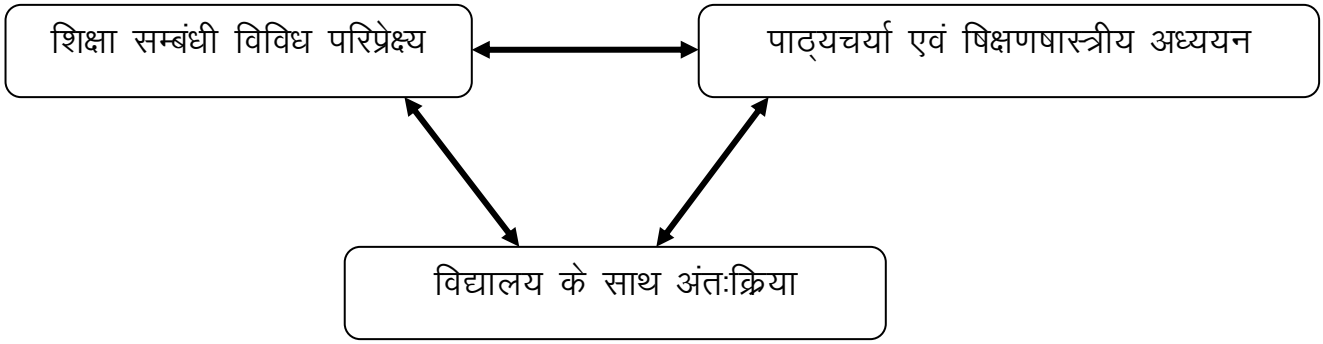

उपरोक्त तीनों घटकों को एक साथ रखकर हीं इस पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम के सभी विषयपत्रों का विकास किया गया है। हालांकि, यह हो सकता है कि विषयपत्रों में इनमें से कोई एक घटक केन्द्रीय स्थिति में हो और बाकि दो सहायक के रूप में। अतः विषयपत्रों के अंदर विभिन्न इकाइयों में आपको इन तीनों घटकों की छवि मिलेगी।

इस पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम में निम्नलिखित प्रकार के विषयपत्रों को शामिल किया गया है :

- आधारभूत विषयपत्र(Core Courses)
- पेषेवर क्षमता का विकास (Enhencing Professional Capacitites)
- पाठ्यचर्या की समझ (Understanding of Curriculum)
- विषयवस्तु सम्वर्धन विषयपत्र (Content Enrichment Courses)
- षिक्षणषास्त्रीय विषयपत्र (Pedagogy Courses)
- वैकल्पिक विषयपत्र (Optional Courses)

इनके साथ–साथ 'विद्यालय इन्टर्नषिप कार्यक्रम' भी पाठ्यचर्या के अभिन्न अंग हैं। आषा है कि इस पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम के माध्यम से तैयार होनेवाले षिक्षकों में षिक्षा की खास समझ पायी जाएगी।

***

An Overview of the yearly distribution of Courses

Year-1					
Code	**Course Title**	**Marks**			
		Credit	Practicum	Theory	Total
C-1	Childhood and Growing up	4	20	80	100
C-2	Contemporary India and Education	4	20	80	100
C-3	Learning and Teaching	4	20	80	100
C-4	Language across the Curriculum	2	10	40	50
C-5	Understanding Disciplines and Subject	2	10	40	50
C-6	Gender, School and Society	2	10	40	50
C-7a	Pedagogy of a School Subject- Part I	2	10	40	50
EPC-1	Reading and Reflection on Texts	2	10	40	50
EPC-2	Drama and Art in Education	2	10	40	50
EPC-3	Critical Understanding of ICT	2	10	40	50
Engagement with the field: Tasks and Assignments for Course 1-6 & 7a		-	-	-	-
	Total	*26*	*130*	*520*	**650**

Year-2					
Code	**Course Title**	**Marks**			
		Credit	Practicum	Theory	Total
C-7b	Pedagogy of a School Subject–Part II	2	10	40	50
C-8	Knowledge and Curriculum	4	20	80	100
C-9	Assessment for Learning	4	20	80	100
C-10	Creating an Inclusive School	2	10	40	50
C-11	**Optional Courses** (the following four options)	2	10	40	50
	(a) Basic Education				
	(b) Health, Yoga and Physical Education				
	(c) Guidance and Counselling				
	(d) Environmental Education				
EPC-4	Understanding the Self	2	10	40	50
School Internship		10			250
Engagement with the Field: Tasks and Assignments for Courses 7b & 8-10		-	-	-	-
	Total	*26*	*130*	*520*	**650**

Marking Scheme for Practicum of Core, EPCs and Optional Courses

	Break up	Marks
Courses with internal marks 20	Internal Test	10
	Assignments, Projects, Classroom participation and Regularity*	10
	Total	**20**
Courses with internal marks 10	**Break up**	**Marks**
	Internal Test	05
	Assignments, Projects, Classroom participation and Regularity*	05
	Total	**10**

Index

Core Courses			
S. No.	**Code**	**Course Name**	**Page No.**
1	C-1	Childhood and Growing up	
2	C-2	Contemporary India and Education	
3	C-3	Learning and Teaching	
4	C-4	Language across the Curriculum	
5	C-6	Gender, School and Society	
6	C-8	Knowledge and Curriculum	
7	C-9	Assessment for Learning	
8	C-10	Creating an Inclusive School	
Enhancing Professional Capacities (EPC)			
S. No.	**Code**	**Course Name**	**Page No.**
9	EPC-1	Reading and Reflection on Texts	
10	EPC-2	Drama and Art in Education	
11	EPC-3	Critical Understanding of ICT	
12	EPC-4	Understanding the Self	
Courses related to Subject and Pedagogy			
S. No.	**Code**	**Course Name**	**Page No.**
13	C-5	Understanding Disciplines and Subject	
14	C-7a	Pedagogy of a School Subject- Part I	
15	C-7b	Pedagogy of a School Subject–Part II	
Optional Courses			
S. No.	**Code**	**Course Name**	**Page No.**
16	C-11 (a)	Basic Education	
17	C-11 (b)	Health, Yoga and Physical Education	
18	C-11 (c)	Guidance and Counseling	
19	C-11 (d)	Environmental Education	
20	**School Internship**		

Core Courses

Code	Course Title		Marks		
			Practicum	Theory	Total
C-1	Childhood and Growing up	1st year	20	80	100
C-2	Contemporary India and Education	1st year	20	80	100
C-3	Learning and Teaching	1st year	20	80	100
C-4	Language across the Curriculum	1st year	10	40	50
C-6	Gender, School and Society	1st year	10	40	50
C-8	Knowledge and Curriculum	2nd year	20	80	100
C-9	Assessment for Learning	2nd year	20	80	100
C-10	Creating an Inclusive School	2nd year	10	40	50

C-1

Childhood and Growing up

Unit-1	
शिक्षार्थी : बचपन और विकास	**Learner : Childhood and development**
• बचपन की अवधारणा : ऐतिहासिक व समकालीन परिप्रेक्ष्य; प्रमुख विमर्ष • बचपन के दौरान प्रमुख कारक : परिवार, पड़ोस, समुदाय और विद्यालय • बच्चे, बचपन और उनका विकास : समकालीन वास्तविकता, बिहार के विषेष संदर्भ में	• Concept of Childhood : Historical and contemporary perspectives; major discourse • Key Factors during Childhood: Family, Neighbourhood, Community and School • Children, Childhood and their development: The Contemporary realities with special focus on Bihar
बच्चे तथा बचपन की संकल्पना काल व स्थान के अनुसार सदैव बदलती रही है। अतः ऐतिहासिक विकास की मोटी–मोटी समझ से इस इकाई की शुरूआत करना उपयुक्त होगा। ऐतिहासिक विकास के अंतर्गत बच्चों और बचपन को लेकर अलग–अलग काल व समाज में बनी धारणाओं की चर्चा की जाएगी। बचपन को प्रभावित करनेवाले कारकों की चर्चा के साथ–साथ उनके द्वारा बच्चे पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी संक्षिप्त चर्चा यहां होगी। विकास के मामले में भी बच्चे का बचपन बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए बचपन की संकल्पना के साथ–साथ बच्चों के विकासात्मक पक्ष की चर्चा भी करनी होगी, लेकिन यहां पर विकास के आयामों को बचपन पर ही केन्द्रित रखा जाएगा, उससे आगे की चर्चा आगे की इकाईयों में की जाएगी।	

Unit-2	
मानव विकास की समझ	**Understanding Human Development**
• मानव विकास में प्रमुख अवधारणाएं : वृद्धि, परिपक्वता एवं विकास की अवधारणा; वृद्धि रेखा तथा मानव विकास के संदर्भ में इसकी उपयोगिता; विकास के बुनियादी सिद्धांत • प्रमुख मुद्दे : प्रकृति बनाम पालन–पोषण, निरन्तरता बनाम असातत्य; सार्वभौमिक बनाम संदर्भगत • षिक्षार्थी का विकास : शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, भावात्मक, सामाजिक व नैतिक; इनके बीच का अंतर्सम्बंध और शैक्षिक निहितार्थ (पियाजे, इरिक्सन, कोह्लबर्ग और गिलिगन के सिद्धांतों के विषेष संदर्भ में)	• Major Concept in Human Development: Growth, Maturation and Development; Growth Curve and its implications for the Human Development;Basic Principles of Development • Debates: Nature v/s Nurture, Continuity v/s Discontinuity, Universal v/s Contextual • Development of learner: physical, cognitive, language, emotional, social and moral; their interrelationships and implications for teachers (special reference to theories given by Piaget, Erikson, Kohlberg and Giligan).
मानव के विकास के संदर्भ में कई अवधारणाएं निरन्तर आती रही है जिसमें बचपन से लेकर बुढ़ापे तक के जीवन विकास को समझा जाता रहा है। इस इकाई का जोर मानव विकास के कुड महत्वपूर्ण अवधारणाओं को समझने पर है जिससे बच्चों व किषोरों के विकास को लेकर षिक्षकों की विस्तृत समझ बन सके। यहां मानव विकास से सम्बंधित कुछ विवादित मुद्दों की भी चर्चा की गयी है जिसके प्रति सुविज्ञ दृष्टिकोण विकसित किया जाएगा। इकाई के तीसरे बिन्दु के अंतर्गत, कुछ प्रमुख सिद्धांतों की विषेष चर्चा करते हुए षिक्षार्थी के विकास के शारिरीक, भाषायी, भावात्मक, सामाजिक व नैतिक विकास को समझने की कोषिष की गयी है।	

Unit-3	
किशोरावस्था में षिक्षार्थी	**Learner in Adolescence**
• किशोरावस्था की अवधारणा : रूढ़िगत मान्यताएं, सही समझ की जरूरत, प्रमुख मुद्दे और कारक • किषोरावस्था को विषेष ध्यान में रखते हुए विकास की अवस्थाओं एवं उनकी विषेषताओं की समझ • किषोरावस्था में षिक्षार्थियों की गतिविधियां, आकांक्षाएं, द्वंद एवं चुनौतियां, और उनसे बर्ताव करने के तरीके	• Concept of Adolescence: stereotypes, need of right understanding, major issues and factors • Understanding stages of development and their characteristics with special emphasis on adolescence • Activities, aspirations, conflicts and challenges of an adolescent learner and ways to deal with them.
बी.एड. करनेवाले प्रषिक्षुओं को माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से 12) की कक्षाओं में षिक्षण करना होता है जिसमें मूलतः किषोरावस्था में बच्चे होते हैं। अतः इस इकाई में किषोरावस्था की विस्तृत समझ अर्थात विकास की अवस्थाएं, उनकी विषेषताएं एवं चुनौतियां, आदि पर चर्चा की जाएगी जिससे कि षिक्षक अपने विद्यार्थियों के मन एवं व्यवहार दोनों को समझते हुए अपने षिक्षण को कर पाएं। यहां भी यह बात लागू होती है कि किषोरावस्था भी कोई एक निष्चित संकल्पना नहीं है। समाज, जगह और संदर्भ के अनुसार, इसके प्रति सोंच में	

कई अंतर है, इसलिए इसकी समझ बनाते हुए बिहार में किषोर–किषोकियों की स्थिति का विष्लेषण भी इस इकाई में किया जाएगा। किसी भी व्यक्ति के जीवन में किषोरावस्था एक महत्वपूर्ण काल होता है जिसमें वह अपने विकास के कई नये पहलुओं से परिचित होता है और उनसे अंतःक्रिया के माध्यम से व्यक्ति की जो सोंच बनती है वह उसके आगे के जीवन को आकार देती है। अतः समाज में किषोर–किषोरियों के साथ कैसा बर्ताव किया जाए, यह एक अहम मुद्दा है क्योंकि उसी बर्ताव वह उसके जीवन की आगे का निर्णय टिका होता है। इन बातों को ध्यान में रखकर इस इकाई में किषोरों के संदर्भ में षिक्षा कैसी हो, तथा उसमें सबकी क्या भूमिका होनी चाहिए, इसपर विमर्ष को प्रस्तुत किया जाना है। यह इकाई एक प्रकार से कई नयी संकल्पनाओं से परिचय कराती है।

Unit-4	
समाजीकरण और षिक्षार्थी का संदर्भ	**Socialization and the Context of Learner**
• समाजीकरण की अवधारणा : प्रमुख विमर्ष, इसके माध्यम के रूप में षिक्षा तथा प्रमुख कारक; समाजीकरण का पारिस्थितिक सिद्धांत (ब्रोनफेनब्रेनर) • समाजीकरण की संस्थाएं एवं उनकी भूमिका : परिवार, समुदाय, विद्यालय, मित्रमंडली, षिक्षक, मीडिया, बाजार, अन्य औरचारिक व अनौपचारिक संस्थाएं; सामाजिक संस्थाएं जैसे संस्कृति, वर्ग, जाति, जेण्डर आदि • समाजीकरण की प्रक्रिया और सामाजिक वास्तविकताएं : असमानता, द्वंद, हाषियाकरण और इनका बच्चों व किषोरों पर पड़ता प्रभाव	• Concept of Socialization: Major perspectives, education as a medium and key factors; Ecological system theory given by Bronfenbrenner • Institutions of Socialization and their role: The context of family, community, school, peers, teacher, media, market, other formal and informal organization; social institution such as culture, class, caste, etc. • Process of Socialization and social realities (with special focus on Bihar): Inequalities, conflict, marginalization and their impact on learner

चाहे बचपन हो या किषोरावस्था या आगे का विकास, इन सब के दौरान समाजीकरण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है लेकिन इस प्रक्रिया के प्रकृति में कई परिवर्तन होते रहते हैं। अतः इस इकाई में समाजीकरण की प्रक्रिया के जटिल संरचना एवं उसके कारकों की विस्तृत चर्चा करनी है। समाजीकरण के प्रमुख परिप्रेक्ष्यों में मूलतः प्रकार्यात्मक (Functionalist) और आलोचनात्मक (Critical) परिप्रेक्ष्यों को समझा जाएगा। समाजीकरण को लेकर एक सैद्धांतिक समझ भी बने, इसके लिए ब्रोनफ्रेनब्रेनर के मॉडल की चर्चा की गयी है जो बच्चे के परिवेष के कारकों, उनकी स्थिति एवं प्रभाव की उपयोगी समझ प्रस्तुत करता है। यह इकाई समाजीकरण से जुड़े अन्य अवधारणाओं की भी समझ देगा। अतः अन्य अवधारणाओं की बात तो यहां होगी लेकिन केवल समाजीकरण से जोड़कर और उसमें षिक्षा की भूमिका को रेखांकित करते हुए। समाजीकरण की संस्थाएं मूर्त भी हैं और अमूर्त भी अतः दोनों की समेकित समझ इसमें प्रस्तुत की जाएगी। किसी व्यक्ति की सामाजिक अस्मिता को समाजीकरण की संस्थाएं किस प्रकार निर्मित करती हैं, उसकी संक्षिप्त समझ भी यहां प्राप्त की जाएगी।

Unit-5	
शिक्षार्थियों में विविधता की समझ	**Understanding diversity in learners**
• मानवीय विविधता की प्रकृति एवं अवधारणाः भिन्नता, विजातीयता तथा विलक्षणता को सम्मान देना; सामाजिक एंव सांस्कृतिक विविधता; • मनोवैज्ञानिक विषेषताओं के आधार पर भिन्नताओं के आयाम : बौद्धिकता, क्षमता, अभिरूचि, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता, व्यक्तित्व • विविध संदर्भों के षिक्षार्थियों की समझ : सामाजिक, सांस्कृतिक, समुदाय, धर्म, जाति, वर्ग, जेण्डर, भाषा और भौगोलिक स्थिति, मीडिया, बाजार, तकनीक व वैष्वीकरण • विद्यालय में विविधता की समझ	• Nature and Concept of Human Diversity: Variation, Heterogeneity and Celebrating Uniqueness; Social and Cultural Diversity; • Dimensions of differences: Intelligence, abilities, interest, aptitude, creativity, personality • Understanding children and adolescents from diverse contexts: Social, cultural, community, religion, caste, class, gender, linguistic and geographic location • Understanding Diversity in School

विद्यालय में कई तरह के बच्चे आते हैं लेकिन विद्यालय सबको एक जैसा ही मानता रहा है। यह दृष्टिकोण एक प्रकार से इस बात की अनदेखी करता है कि बच्चे अलग–अलग पृष्ठभूमि से आते हैं और सभी बच्चों का सीखने का अपना अलग तरीका हो सकता है। तभी, किसी भी विद्यालय के कोई भी विद्यार्थी एक दूसरे के समान नहीं होते हैं, सबमें भिन्न–भिन्न अभिरूचियां, क्षमताएं एवं सोंच होती है। अतः षिक्षक को षिक्षार्थियों की विभिन्नताओं को पहचानने और उसके अनुरूप काम करने की समझ जरूर होनी चाहिए। इस इकाई में षिक्षार्थियों की कुछ बुनियादी विभिन्नताओं की चर्चा की गई है। इकाई के विभिन्न विषयवस्तुओं के अंतर्गत कुछ तकनीकी शब्दों का प्रयोग भी किया गया है जिनके प्रति जागरूकता कम और भ्रातियां ज्यादा हैं। यह इकाई उनको स्पष्ट करने का प्रयास करेगी। साथ ही, षिक्षार्थियों की विभिन्नताओं को केवल समझना ही जरूरी नहीं है बल्कि उनके प्रति विद्यालय, समाज और षिक्षक क्या नजरिया अपनाता है, इसका विष्लेषण करना तथा आवष्यकतानुरूप उस में सुधार लाने के प्रति संवेदनषीलता महत्वपूर्ण है जिसपर यह इकाई केन्द्रित है।

Suggested Readings:

Aries, Philip (1962). Centuries of Childhood. New York: Vintage Books publications

Berk, L. E. (2011).*Child Development*. (8th ed.). New Delhi: Pearson Prentice Hall.

Berk, Laura E. (2006). Child Development. New Delhi: Printice Hall of India Pvt. Ltd.

Chand Kiran (2012), Shiksha Ka Samajik Paripreshya, New Delhi, Delhi Vishwavidhyala.

Kumar, Krishna (1993), Raj Samaj Aur Shiksha. New Delhi: Raj Kamal Prakahsan.

Kumar, Krishna. Bachpan ki avdharna aur Baal Sahitya. Shaikshanik Sandarbh, Issue-24.

Mishra, A. (2007). Everyday life in a slum in Delhi. In D. K. Behera (Ed.), Childhoods in South Asia. New Delhi: Pearson Education India.

Monstessori, Maria (1995). Secret of Childhood. Hyderabad: Orient Longman.

NCERT. (2006a). Position paper-National focus group on education with special needs (NCF 2005). New Delhi: NCERT.

NCERT. (2006c). Position paper-National focus group on problems of scheduled caste and scheduled tribe children (NCF 2005). New Delhi: NCERT.

Parekh, B. C. (2000). Rethinking Multiculturalism: Cultural diversity and political theory (pp. 213-230). Palgrave.

Pathak, A. (2013). Social Implications of schooling: Knowledge, pedagogy and consciousness. Aakar Books.

Piaget, J. (1926). *Language and Thought of the Child*. London: Routledge & Kegan Paul.

Piaget, J. (1951). *The Psychology of Intelligence*. London: Routledge & Kegan Paul.

Piaget, J. (1952). *The Origins of Intelligence in Children*. New York: International University Press.

Ranganathan.N. (2000).*The Primary School Child: Development and Education*. New Delhi : Orient Longman

Rogoff, B., Baker-Sennett, J., Lacasa, P., & Goldsmith, D. (1995). Development through participation in sociocultural activity. New Directions for Child and Adolescent Development, 1995(67), 45–65.

Santrock, J.W. (2010). *Lifespan Development*. (13th ed.). New York: McGraw-Hill Higher education

Sarasati, T.S. (1999). Culture, Socialization and Human Development. New Delhi: Sage.

Saraswathi, T.S. (1999). Adult-child continuity in India: Is adolescence a myth or an emerging reality? In T.S. Saraswathi (Ed.), Culture, socialization and human development: Theory, research and applications in India. New Delhi: Sage.

Saraswathi, T.S. (Ed). (1999). *Culture, Socialisation and Human Development: Theory, Research and Application in India*. New Delhi: Sage.

Sharma, N. (2003). Understanding adolescence. NBT India.

Steams, Peter N. (2006). Childhood in World History, New York: Routledge.

Sternberg, R.J. (2013). Intelligence, competence, and expertise. In A. J. Elliot & C. S. Dweck (Eds.), Handbook of competence and motivation (pp. 15–30). Guilford Publications.

Students of Barbiana School (1970). Letter to a teacher.

Woolfolk, A. (2014). *Educational Psychology*. (12th ed.). New Delhi: Pearson Education.

Woolfolk, A., Misra, G. &Jha, A.K. (2012).*Fundamentals of Educational Psychology*. (11th ed.). New Delhi: Pearson.

C-2
Contemporary India and Education

Unit-1	
भारत में षिक्षा : अतीत से वर्तमान तक	**Education in India: From Past to Present**
• हड़प्पा, वैदिक, बौद्ध, जैन एवं संगम काल के षिक्षा व्यवस्था पर चिंतन–मनन; प्राचीन षिक्षा केन्द्र • मध्यकाल में षिक्षा (मकतब, मदसरा व संस्कृत षिक्षा) एवं अठारहवीं शताब्दी के दौरान की देषज षिक्षा व्यवस्था • ब्रिटिष औपनिवेषिक काल के दौरान उभर कर आयी षिक्षा व्यवस्था : मिषनरी स्कूल, ब्रिटिष राज के अंतर्गत गठित औपचारिक षिक्षा की व्यवस्था; भारतीयों द्वारा गठित शैक्षिक संस्थाएं एवं आंदोलन (जैसे कि यंग बंगाल आंदोलन, देवबंद, आर्यसमाज, अलीगढ़, सत्यषोधक समाज, जामिया स्कूल, बुनियादी षिक्षा) • स्वतंत्रता पश्चात, भारत में षिक्षा का विकास (बिहार में षिक्षा के ऐतिहासिक विकास को ध्यान में रखते हुए)	• Reflecting on Education during Harrapan, Vedic, Buddhist, Jain and Sangam period; ancient education institutions • Education during medieval period (Maktab, Madarsa and Sanskrit Education), and Indigenous System of Education during eighteenth century • Education system emerged during British imperialism: Missionaries, Formal education system under British administration, Different Education systems or movements founded by Indians (i.e. Young Bengal Movement, Deoband, Aryasamaj, Aligarh, Satya Shodhak Samaj, Jamia school, Basic education) • Post-Independence development of Education System in India (including historical development of Education in Bihar)
आज भारत में जिस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था है वह केवल वर्तमान की देन नहीं है बल्कि उसका अपना अतीत भी है जिसको जानने से एक प्रषिक्षु के समझ के दायरे का विस्तार होगा। अपने अतीत की षिक्षा को समझना इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उससे षिक्षा के समृद्ध संस्कृति का भी बोध होता है और षिक्षा के ऐतिहासिक महत्व का भी ज्ञान होता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए इस इकाई में यह कोषिष की गई है कि प्रषिक्षुओं को भारत के शैक्षिक इतिहास के व्यापक स्वरूप से विष्लेषणात्मक परिचय कराया जाए। इस दिषा में, सिर्फ औपनिवेषिक ही नहीं बल्कि उससे पहले के कालों के संदर्भ में भी षिक्षा को समझने का प्रयास है। षिक्षा के इतिहास को यहां हड़प्पा सभ्यता से शुरू किया जा रहा है जो कि स्वयं में षिक्षा के प्रचिलित इतिहास में एक नया पन्ना जोड़ने जैसा है। हालांकि इसके अतिप्राचीन होने के कारण उपलब्ध साक्ष्यों एवं अनुमानों के आधार पर ही संक्षिप्त विष्लेषण किया जाएगा लेकिन वह विष्लेषण हमारे षिक्षायी चिंतन के प्रस्थान बिन्दु को समझने के लिए अहम है। प्राचीन शैक्षिक व्यवस्था को समझने के लिए वैदिक, बौद्ध और जैन काल की षिक्षा पर भी चर्चा की जाएगी। एक और नया पक्ष जो यहां जोड़ा गया है वह है संगम काल का, जोकि मुख्यतः दक्षिण भारत के शैक्षिक इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। हमारे इतिहास में कई शैक्षिक संस्थाओं व व्यवस्थाओं की भी उत्पति हुई है उनका भी संक्षिप्त परिचय इस इकाई से प्राप्त होगा। इस इकाई मे देषज शैक्षिक व्यवस्था पर विषेष बात की जाएगी। साथ ही, औपनिवेषिक काल के उन तमाम शैक्षिक प्रयासों की भी चर्चा की जाएगी जिसका असर आज की षिक्षा व्यवस्था में ही व्याप्त है। इस इकाई में स्वतंत्रता पश्चात के शैक्षिक विकास की चर्चा विस्तार से की जाएगी जिसमें बिहार के शैक्षिक विकास का विषेष उल्लेख किया जाएगा। बाकि, अन्य बिन्दुओं पर संक्षेप में ही चर्चा होगी।	

Unit-2	
शिक्षा की अवधारणा	**The Concept of Education**
• शिक्षा : महत्व एवं प्रकृति; 'षिक्षित व्यक्ति कौन है' इसका विष्लेषणात्मक समझ • भारतीय चिंतकों के षिक्षासम्बंधी विचारों का विष्लेषणात्मक समझ : सैयद अहमद खां, ज्योतिबा फुले, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्दो, पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ. जाकिर हुसैन, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ. एस. राधाकृष्णन, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, जे. कृष्णमुर्ति • पाष्चात्य चिंतकों के शैक्षिक विचारों का विष्लेषणात्मक समझ : प्लेटो, रूसो, जॉन डीवी, पॉलो फ्रेरे • गांधी के 'हिन्द स्वराज' और टैगोर के 'षिक्षा' के माध्यम से षिक्षा की समझ	• Education: Need and nature; analytical understanding of the notion of an educated person • Analysing the thoughts of various Indian thinkers: Sir Syed Ahmad Khan, Jyotiba Phule, Swami Vivekananda, Sri Aurobindo, Pandit Madan Mohan Malviya, Dr. Zakir Hussain, Maulana Abul Kalam Azad, Dr. S. Radhakrishnan, Dr. B.R. Ambedkar and J. Krishnamurti • Analyzing the thoughts of various western thinkers: Plato, Rousseau, John Dewey, Paulo Freire • Understanding of Education through *'Hind Swaraj'* by Gandhi and *'Shiksha'* by Rabindranath Tagore
शिक्षा की प्रकृति क्या हो, यह क्यों महत्वपूर्ण है तथा 'षिक्षित व्यक्ति कौन है' इन तीनों सवालों का जवाब काल और संदर्भ के अनुसार सदैव बदलता रहा है और आगे भी बदलता रहेगा। लेकिन अमूमन हम इनके उत्तरों को शाषाश्वत मानते है। इसीलिए इस इकाई की शुरूआत में षिक्षा की बदलती प्रकृति जिसमें औपचारिक–अनौपचारिक–निरौपचारिक, पारम्परिक–नवाचारी आदि के महत्व तथा 'षिक्षित' होने के मायने पर विमर्ष किया जाएगा। आगे उसी विमर्ष को बढ़ाने के लिए तमाम भारतीय चिंतकों के विचारों का विष्लेषण भी इसमें किया जाएगा। इसके अंतर्गत सर सैयद अहमद खां, ज्योतिबा फुले, पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ. जाकिर हुसैन,	

जे. कृष्णमर्ति ऐसे विचारक हुए जिन्होंने अपने द्वारा स्थापित संस्थानों के माध्यम से षिक्षा को एक अलग नजरिए से देखने की कोषिष की। उन संस्थानों में उन्होंने 'षिक्षा क्या, क्यों और कैसे' पर सम्पूर्ण विमर्ष किया। साथ ही, मौलाना अबुल कलाम आजाद जो स्वतंत्र भारत के पहले षिक्षा मंत्री रहे तथा नए भारत के षिक्षा की कल्पना में भूमिका निभायी, डॉ. एस. राधाकृष्णन जो आजादी के बाद षिक्षा पर बने पहले आयोग के अध्यक्ष थे तथा भारतीय दर्षन के ज्ञाता थे इस नाते उन्होंने षिक्षा को एक अलग नजरिए से देखने की कोषिष की। डॉ. बी.आर.अम्बेडकर के शैक्षिक चिंतन का प्रभाव संविधान के प्रावधानों पर भी पड़ा है, इसलिए उससे रूबरू होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। यदि स्वामी विवेकानन्द और श्री अरोबिन्दों की बात करें तो इन्होंने षिक्षा के भारतीय दर्षन को प्रस्तुत किया और इन्होंने भी अपने दर्षन पर आधारित शैक्षिक संस्थानों का निर्माण किया। यहां स्पष्ट करना है कि इस इकाई में इन सब चिंतकों के षिक्षा सम्बंधी चयनित विचारों को केवल प्रधान माना गया है न कि उनकी जीवनियों को। षिक्षा को लेकर कई महत्पूर्ण परिप्रेक्ष्य पाष्चात्य चिंतकों के माध्यम से भी दिया गया, अतःउनके विचारों को भी संक्षेप में यहां शामिल किया गया है। इकाई के अंत में गांधी द्वारा रचित 'हिन्द स्वराज' और टैगोर की कृति 'षिक्षा' के मौलिक अध्ययन के माध्यम से षिक्षा की प्रकृति को समझा जाना है। इन दोनो विचारकों की रचना को इसलिए अलग से लिया गया है क्योंकि इन्होंने भारत में शैक्षिक चिंतन को बहुत ही गहराई से प्रभावित किया है।

Unit-3	
शिक्षा का संवैधानिक एव सामाजिक संदर्भ	**Constitutional and Social Context of Education**
• **संवैधानिक संदर्भ : भारतीय संविधान में सामाजिक न्याय के साधन के रूप में षिक्षा** **संवैधानिक मूल्यों एवं षिक्षा (प्रस्तावना,मौलक अधिकारों एवं कर्तव्यों), निःषुल्क एवं अनिवार्य षिक्षा 2010 (आर0 टी0 ई0) का अधिकार एवं समावेषन, समवर्त्ती षिक्षा एवं इसके निहितार्थ** • **सामाजिक संदर्भ : भारतीय समाज की संरचना तथा षिक्षा के निहितार्थ : भाषा, धर्म,जाति, वर्ग,लिंग,क्षेत्र एवं असामान्य षिक्षार्थीयों के संदर्भ में असामान्य षिक्षार्थीयों के संदर्भ में असमान्यता, भेदभाव (पक्षपात), (अ व)वर्जन तथा हाषिये (पार्ष्व)पर रह रहे षिक्षार्थियों के जानने की समझ।दलितों,अतिपिछड़ों, अनुसूचित जनजातियों, बालिकाओं एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों के संदर्भ में मुद्दे एवं चुनौतियों।** • **विद्यालयी असामानता (सरकारी,निजि स्कूल,ग्रामीण–षहरी स्कूल)। उपर्युक्त वर्णित समुहों की षिक्षा में षिक्षकों एवं षिक्षा अभिकरणों की भूमिका। विविध सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से बच्चों के नजरिये से जाँच के एक क्षेत्र रूप में कक्षाकक्ष प्रकृति की समझ।**	• Constitutional Context: Education as a means of social justice in the Indian Constitution; Constitutional values and education (Preamble, Fundamental rights and duties); The Right to Free and Compulsory Education2010 (RTE) and inclusion; Education in the concurrent list and its implications • Social Context: Composition of Indian society and its implications for education: Inequality, discrimination, exclusion and marginalization in the context of language, religion, caste, class, gender, region, and disability; Issues and challenges in the education of *Dalits*, OBCs, the Scheduled Tribes, girls and religious minorities; Inequality in schooling (Govt.-private schools, rural-urban schools); the role and agency of teachers in the education of above mentioned groups; Classroom ethos as an area of enquiry from the perspective of children from diverse socio-cultural and economic backgrounds.
इस इकाई में में षिक्षा के उन मुद्दों की समझ बनायी जाएगी जिससे आज के षिक्षक जुझ रहे हैं। ये मुद्दे इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे षिक्षक के कार्य पर विषेष प्रभाव पड़ता है। अतः ये मुद्दे क्यों आएं, इनकी पृष्ठभूमि क्या है और इनके प्रति एक षिक्षक की क्या भूमिका है, इन सब बिन्दुओं की चर्चा पर ही इस इकाई को केन्द्रित रखा गया है। इनमें से कई मुद्दे ऐसे हैं जो षिक्षा के साकारात्मक पक्ष को दिखाते हैं तो कुछ ऐसे भी मुद्दे हैं जो हमारी षिक्षा व्यवस्था के कमजोरियों को उजागर करते हैं। हमारे देष के तमाम विद्यालयों के असल सच को भी इस इकाई में समझा जाएगा।	

Unit-4	
नीतियों के आलोक में षिक्षा की समझ	**Understanding Education in relation to Policies**

• नीतिगत परिप्रेक्ष्य में विद्यालय का विकासः भारत एवं बिहार के विद्यालयों में शैक्षिक प्रक्रियाओं (पाठ्यचर्या, षिक्षक, समुदाय)एवं तत्कालीन षिक्षा संरचना के स्त्रोत की समझ। • आयोग के प्रतिवेदनों एवं नीतिगत दस्तावेजों को विषयक दृष्टि से आलोचनात्मक परख। तत्कालीन संदर्भ के आलोक में स्वतंत्रता से ही उनकी विषेषताओं पर विमर्ष : यथाः मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग, एन0पी0 ई0 1986, राममूर्ति कामिटी 1990, यषपाल रिर्पोट 1993, अन्तिम दो एन0 सी0 एफ0, सी0 सी0 एस0 रिर्पोट 2007. • षिक्षक एवं षिक्षा–नीतियाँः कोठारी आयोग के संदर्भगत अध्याय, 1983–85 के राष्ट्रीय आयोग, एन0 सी0 एफ0 टी0 ई0 2009, जस्टिस वर्मा आयोग का रिर्पोट एवं अन्य अध्यत्न दस्तावेज की समझ।	• Development of School in the light of Policy perspectives: As a source to understand the contemporary structure and education process (curriculum, teacher, community) of schools in India as well as Bihar • A critical review of commission reports and policy documents through a thematic focus, linking the contemporary context with salient debates since independence: Mudaliar Commission, Kothari Commission, NPE 1986, Ramamurthy Committee 1992, Yashpal Report 1993, Last two NCFs, CCS report 2007 • Teacher and education policies: Special reference to relevant chapter in Kothari Commission, National Commission on Teacher 1983-85, NCFTE 2009, Justice Verma Commission Report and other recent documents.

इस इकाई का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को विद्यालय के विभिन्न आयामों का विश्लेषण इस प्रकार करने का अवसर प्रदान करना है जिससे उन्हें देश की प्रमुख शिक्षा नीतियों तथा उनके विकासक्रम का ज्ञान अपनी संस्था के संदर्भ में मिल सके। आमतौर पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में 'शिक्षा का इतिहास' एक शुष्क विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। इसमें शिक्षा से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों को प्रमुखता से चिन्हित किया जाता है, परन्तु ये तथ्य किसी संदर्भ से नहीं जुड़ पाते और इस कारण देश की शिक्षा नीतियों को लेकर एक विहंगम तथा संवेदित दृष्टि का विकास करने में असमर्थ रहते हैं। एक अन्य आम प्रवृति देश की शैक्षिक नीतियों को सिर्फ उनकी प्रमुख संस्तुतियों के दर्पण में देखने की है। किसी भी शिक्षा नीति के बनाये जाने की प्रक्रिया, उस समय की आवश्यकताएँ तथा बाध्यताओं को भी जानना महत्त्वपूर्ण है। एक शिक्षा नीति से दूसरी शिक्षा नीति का सफर उपलब्धियों और अधूरे रह गये लक्ष्यों की मिलीजुली कथा कहता है। अतः शिक्षा नीतियों को किस रीति से पढ़ाया जाए, यह महत्त्वपूर्ण है। यह इकाई इस बात का प्रयास करती है कि प्रशिक्षु किसी एक विद्यालय को आधार बनाकर शिक्षा नीतियों एवं आयोगों की अनुसंशाओं को लागू किये जाने में निहित चुनौतियों को समझ सके। किसी विद्यालय का नाम, उसकी स्थापना से लेकर आज तक में किये गये परिवर्तन स्वयं में षिक्षा नीति के विकास क्रम का संकेत होते हैं। विद्यालय का भवन स्वयं में विद्यालय के विकास की कहानी समेटे रहता है। विद्यालय में पढ़ाए जा रहे विषयों का समूहीकरण अथवा विभाजन किस पाठ्यचर्या के आधारों पर किया गया है, इसे नीतियों के आलोक में जानना चाहिए। साथ ही, विद्यालय में होनेवाली मूल्यांकन व्यवस्था का क्या इतिहास रहा है। इस समब के समझ से प्रषिक्षु विभिन्न शैक्षिक नीतियों को विद्यालय के भीतर समझ पाने में सक्षम हो सकेंगे। उपरोक्त बिन्दुओं को बिहार के संदर्भ में भी विषेष रूप से समझा जाएगा।

Unit-5	
<u>विद्यालय संगठन की समकालीन पद्धति।</u>	**The contemporary system of School orgnaisation**
• विद्यालय संगठन, अवधारणा और प्रमुख अवयव, समुदाय एवं महत्वपूर्ण अवयव के रूप में। विद्यालय संगठन के कार्य सम्बन्धी आधारभूत सिद्धांत। विद्यालय एक "संगठन" और "संगठन के अंग" के रूप में। • विद्यालय और अन्य शैक्षिक संगठनों के बीच संबंधः षिक्षक – षिक्षा संस्थान, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के संस्थान (एस0 सी0 ई0 आर0 टी0,एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, एन0 सी0 टी0 ई0, यु0 जी0 सी0, एन0 एच0 आर0 डी0) • विद्यालय प्रबंधन में योजना निर्माणः वार्षिक अकादमिक कैलेण्डर, दैनिक कार्यक्रम की रूप रेखा, समय सारणी, कर्मीयों की बैठक, गति विधियाँ, षिक्षार्थियों की समस्याएँ, गतिविधियाँ, विद्यालयी संस्थानों का प्रबंधन (विद्यालय भवन, विद्यालय का बजट, प्रयोगषाला,पुस्ताकालय्, खेल का मैदान, छात्रावास, विद्यालय का कार्यालय, स्वछता प्रबंधन एवं अधिकतम उपयोगिता,विद्यालय का अभिलेख) आपदा प्रबंधन एवं सुरक्षा की षिक्षा	• School Organization: Concept and major Components; Community as an important component; Basic Principles for the functioning of school organization; School as an 'organization' and as a 'part of organization' • Relation between Schools and other educational organizations: Teacher education institution, State and National level bodies (such as SCERT, NCERT, NCTE, NUEPA,UGC, MHRD) • Planning in school management: Annual school calendar, Day to day schedules, Time table, Staff meetings, Activities, Student issues, Monitoring, Managing school resources (the school Building, School budget, Laboratory, Library, Sports ground, Hostel, School office; Cleaniness, Maintenance and optimum utility, School records), Disaster management and safety education.

References

Aggrawal, J.C. (1966). Progress of Education in Free India, New Delhi: Arya Book Depot.,.1966

Balagopalan,S. (2003). Understanding educational innovation in India: the case of Ekalavya.*Education Dialogue 1(1): 97-121.*

Booth, T. Ainscow, M., Black-Hawkins, K. Vaughan, M.& Shaw, L. (2000). Index for inclusion: Developing learning and participation in schools. Centre for Studies on Inclusive Education.

Carini, P.F. (2001).Valuing the immeasurable. In starting strong: A different look at children, schools, and standards (pp. 165–181). New York: Teachers College Press.

Chandra, B. (2004) Gandhiji, Secularism and Communalism.*Social Scientist, Vol. 32, No. 1/2pp. 3-29*

De, A., Khera, R., Samson, M., & Shiva Kumar, A.K.(2011). PROBE revisited: A report on elementary education in India. New Delhi: Oxford University Press.

Ghosh, S.C. (2007). History of education in India. Rawat Publications.

GOI. (1966). Report of the education commission: Education and national development. New Delhi: Ministry of Education.

GOI. (1986). National policy of education. GOI.

GOI. (1992, 1998). National policy on education, 1986 (As modified in 1992). Retrieved from http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NPE86-mod92.pdf

GOI. (2009). The right of children to free and compulsory education act, 2009. Retrieved from http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/rte.pdf

GOI. (2011). Sarva Shiksha Abhiyan- Framework for implementation based on the right of children to free and compulsory education act, 2009. GOI.

Govinda, R. (2011). Who goes to school?: Exploring exclusion in Indian education. Oxford University Press.

Govinda, R. (ed). (2002). *India education report: a profile of basic education*. New Delhi: Oxford University Press.

Kabir, H. (1982). Education in New India. London: George Allen an Unwin

Leslie C. Soodak. Classroom Management in Inclusive Settings. *Theory into Practice* Vol. 42, No. 4, Classroom Management in a Diverse Society (Autumn, 2003), pp. 327-333

Mishra, A. K. and Gupta, Ruchika (2006). Disability Index: A Measure of Deprivation among Disabled. *Economic and Political Weekly.*Vol. 41, No. 38 (Sep. 23-29, 2006), pp. 4026-4029

Mukherjee, R.K. (1960). Ancient Indian Education, Delhi; Moti Mahal.

Mukherjee, S.N. (1955). History of Education in India, Baroda: Acharya Book Depot.

Naik, J.P. (1979) *Education Commission and After.* A P H Publishing Corporation: New Delhi. Also available in Hindi

Naik, J.P. (1982). The education commission and after. New Delhi: APH Publishing.

Nambissan, G. B. (2009). *Exclusion and discrimination in schools: Experiences of dalit children*. Indian Institute of Dalit Studies and UNICEF.

NCERT (2006/7) *National Focus Group Paper on the Problems of Scheduled Castes and Scheduled Tribes; National Focus Group Paper on Gender*. New Delhi: NCERT

NCERT(2005) National curriculum framework.: NCERT.

NCERT. (2006c). Position paper-National focus group on problems of scheduled caste and scheduled tribe children (NCF 2005). New Delhi: NCERT.

NCTE (2009) *National Curriculum Framework for Teacher Education*. New Delhi

Nurullaha & Naik, History of Indian Education, Bombay; Macmillan & Co.

Pathak, A. (2013). *Social implications of schooling: Knowledge, pedagogy and consciousness*. Aakar Books.

PROBE (1999) *Public report on basic education in India*. New Delhi: Oxford University Press.

Raina, V. (2010). FAQs on the right to free and compulsory education act 2009. Bharat Gyan Vigyan Samiti, UNICEF.

Rampal, A. & Mander, H. (2013, July. 13). Lessons on food and hunger: Pedagogy of empathy for democracy. *Economic and Political Weekly 48*(28), 50-57.

Saxena, S. (2012, Dec. 8). Is equality an outdated concern in education? *Political and Economic Weekly 47*(49), 61-68.

Singal, Nidhi. An ecosystemic approach for understanding inclusive education: An Indian case study.

The PROBE Team. (1999). Public report on basic education in India. Delhi: Oxford University Press.

Todd Lekan. Disabilities and Educational Opportunity: A Deweyan Approach Transactions of the Charles S. Peirce Society. Vol. 45, No. 2 (Spring 2009) (pp. 214-230)

UNESCO. (2006). United Nations convention on the rights of persons with disabilities. UNESCO.

UNESCO. (2009). Policy guidelines on inclusion in education. UNESCO.

Zastoupil, L., & Moir, M. (1999). The great Indian education debate: Documents relating to the Orientalist-Anglicist controversy, 1781-1843. Psychology Press.

C-3
Learning and Teaching

Unit-1	
अधिगम से सम्बंधित अवधारणाएं	**Concepts related to Learning**
• अधिगम/सीखना : विभिन्न विचारों से परिचय • अधिगम को प्रभावित करनेवाले प्रमुख कारक • सीखने में एकाग्रता की भूमिका एवं इसका संवर्धन • अंतर्सम्बंधों की विष्लेषणात्मक समझ : अधिगम और विकास, अधिगम और अभिप्रेरणा, अधिगम और बुद्धि	• Learning: Introduction to multiple views • Major factors affecting learning • Role of concentration in learning and its enhancement • Analytical understanding of relations: Learning and Development; Learning and Motivation; Learning and Intelligence

अधिगम या सीखने को किसी एक ढंग से परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसके विषय में अलग–अलग समाज एवं संस्कृतियों में भिन्न–भिन्न मान्यताएं हैं जो लोकसंस्कृतियों, लोकोक्तियों, रीति–रिवाज, संस्कार या फिर सामाजिक परम्पराओं के रूप में वहां विद्यमान हैं। इस विषय में, अलग–अलग व्यक्तियों की भी अपनी–अपनी मान्यताएं हो सकती हैं जैसे कि षिक्षार्थी, अध्यापक, अभिभावक, आदि। अतः इस इकाई की शुरूआत अधिगम से सम्बंधित उन सामान्य प्रचलित मान्यताओं को जानने से की जाएगी। उन मान्यताओं का कुछ हद तक विष्लेषण भी किया जाएगा। लेकिन उनके पूर्ण विष्लेषण के लिए कुछ सैद्धांतिक आधारों की जरूरत होगी जिनकी चर्चा अगली इकाई में है। इसलिए इस इकाई में उनका सामान्य सा विष्लेषण ही होगा। इस इकाई में अधिगम को प्रभावित करनेवाले कारक यथा व्यक्तिगत, सामाजिक, संस्थागत, मूर्त व अमूर्त आदि की भी सामान्य समझ प्राप्त की जाएगी। यहां एक महत्वपूर्ण कारक 'एकाग्रता' की विषेष चर्चा की जाएगी क्योंकि भारतीय देषज परम्परा में इस कारक को विषेष स्थान दिया जाता रहा है। साथ ही इस इकाई में अधिगम से सम्बंधित अन्य अवधारणाओं की भी बात की जाएगी। अधिगम की प्रक्रिया का विकास, अभिप्रेरणा और बुद्धि से क्या अंतर्सम्बंध है इसको विषेष रूप से इस इकाई में समझा जाएगा। अधिगम और विकास के अंतर्सम्बंध की मान्यताओं पर चर्चा, अभिप्रेरणा के सिद्धांत (आंतरिक वष्बाह्य अभिप्रेरणा, प्रक्रिया आदि) का विवरण और बुद्धि से सम्बंधित विकासात्मक सिद्धांतों (बिने, गिलफर्ड, गार्डनर) का विष्लेषण यहां किया जाएगा।

Unit-2	
अधिगम के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य	**Theoretical perspectives on Learning**
• अधिगम से सम्बंधित सिद्धांतों के विकास का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य • अधिगम से सम्बंधित सिद्धांतों की समझ : व्यवहारवादी, मानवतावादी, संज्ञानवादी, सूचना–प्रक्रियाकरण मत, सामाजिक–सर्जनवादी दृष्टिकोण - षिक्षार्थी और अधिगम सम्बंधी आधारभूत मान्यताएं - विविध शैक्षिक स्थितियों में उनकी उपयोगिता - सिद्धांतों की आलोचनात्मक समझ	• Reflecting on the development of theories on learning: Historical perspective • Theories related to Learning: Behaviourist, Cognitivist, Information-processing view, Humanist, Social-constructivist - Basic assumptions about learners and learning - applicability for different learning situations - critical understanding of the theories

इस इकाई की शुरूआत अधिगम के सिद्धांतों के ऐतिहासिक विकास के संक्षिप्त परिचय से की जाएगी जिसमें मनोविज्ञान से अधिगम के सिद्धांतों के विषेष सम्बंध पर चर्चा की जाएगी। इसके बाद अधिगम से सम्बंधित विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्यात्मक एवं विष्लेषणात्मक समझ प्रस्तुत की जाएगी। इस इकाई में दो बिन्दु ही लिये गये हैं क्योंकि दूसरा बिन्दु स्वयं में बहुत विस्तृत है जिसके अंतर्गत दिए गए विभिन्न सिद्धांतों की चर्चा की जाएगी। हालांकि अब तक यह देखा गया है कि उन सिद्धांतों को बहुत ही शुष्क रूप में ही प्रस्तुत किया जाता रहा है जिसमें उनसे सम्बंधित प्रयोगों का विवरण मात्र ही दिया जाता है जिससे प्रषिक्षुओं की 'सीखने' को लेकर कोई उपयोगी दृष्टिकोण नहीं बन पाता था। अतः विभिन्न सिद्धांतों की चर्चा को उपयोगी बनाने के लिए तीन निर्देषक बिन्दु भी निर्धारित कर दिया गया है। यदि सिद्धांतों की बात करें तो व्यवहारवादी में पैब्लव एवं स्कीनर, मानवतावादी में मैस्लो, संज्ञानवादी मे पियाजे, सूचना–प्रक्रियाकरण मत में एटकिंसन, सामाजिक–सर्जनवादी दृष्टिकोण में वाइगोत्सकी एवं बैण्डुरा जैसे मनोवैज्ञानिकों की विषेष चर्चा की जाएगी। अधिक जोर संज्ञानवाद और सामाजिक–सर्जनवाद के सिद्धांतों को विस्तार से समझने पर होगा।

Unit-3	
अधिगम और षिक्षण	**Learning and Teaching**
• अधिगम–षिक्षण प्रक्रिया से संबंधित विविध दृष्टिकोणों की समझ : षिक्षक–केन्द्रित, विषय–केन्द्रित एवं बाल–केन्द्रित; 'ज्ञान के सम्प्रेषक', 'आदर्ष', 'सुगमकर्ता' एवं 'सह–अधिगमकर्ता' के रूप में षिक्षक • षिक्षण के सामाजिक–सर्जनवादी प्ररिप्रेक्ष्य एवं इसके निहितार्थों की समझ • सृजनात्मक अधिगम : अवधारणा एवं षिक्षणषास्त्रीय निहितार्थों की समझ • अधिगम–षिक्षण के लिए सुगम माहौल का निर्माण : प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियां	• Understanding multiple views for learning-teaching process: teacher centric, subject centric and learner centric; Teacher as 'transmitter of knowledge', 'model', 'facilitator', 'co-learner' • Understaning Social-constructivist perspective of teaching and its implications • The idea of Creative Learning: Concept and its pedagogical implications • Creating facilitative learning-teaching environments: major points and concerns
इस इकाई में अधिगम और षिक्षक को एक साथ देखने पर बल दिया गया है। पिछली इकाई में अधिगम के सिद्धांतों की समझ पर जोर दिया गया था लेकिन उन सिद्धांतों की समझ तब तक उपयोगी नही है जब तक कि प्रषिक्षु द्वारा उनका कक्षायी माहौल में प्रयोग न किया जाए। यहां इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रषिक्षु अपने द्वारा सीखे गए शैक्षिक सिद्धांतों की उपयोगिता को स्वयं से परखकर देखें। कोई भी सिद्धांत षिक्षण में किस प्रकार से मददगार है इसकी गहन समझ प्रषिक्षुओं को अवष्य मिले। साथ ही, षिक्षण को लेकर जो विविध दृष्टिकोण दिए गए हैं, उनका सिद्धांतों से किस प्रकार जुड़ाव है, इसे भी यहां समझा जाएगा। आज के शैक्षिक विमर्ष में सामाजिक–सर्जनवाद का विषेष महत्व है, इसलिए इसको विषेष तौर पर समझा जाएगा। अधिगम–षिक्षण के दौरान कक्षा में कई ऐसी घटनाएं घटती है जिनको षिक्षक समझ नहीं पाते हैं और उसकी अनदेखी कर देते हैं जैसे कि बच्चों की सृजनात्मक सोंच एवं प्रतिभा। अतः इस इकाई में सृजनात्मकता को भी अधिगम–षिक्षण का अभिन्न अंग मानते हुए चर्चा की गयी है ताकि वैसे बच्चे छूट न जाए। साथ ही, अधिगम–षिक्षक की चुनौतियों की सैद्धांतिक समझ भी इस इकाई में प्राप्त की जाएगी।	

Unit-4	
कक्षायी प्रक्रियाएं एवं सीखने की योजना	**Classroom processes and Learning Plan**
• कक्षायी प्रक्रियाएं : प्रभावी कारक; प्रमुख चुनौतियां, समय प्रबंधन, षिक्षक का सम्प्रेषण कौषल, षिक्षार्थियों की भूमिका • विभिन्न कक्षायी गतिविधियों के अनुसार कक्षाकक्ष की बैठक व्यवस्था • कक्षायी गतिविधियों को पाठ्यचर्या, षिक्षणषास्त्र एवं षिक्षण संसाधनों के साथ जोड़ना • कक्षाकक्ष षिक्षण के संदर्भ में माइक्रो–टीचिंग और ब्लूम की टेक्सोनोमी का आलोचनात्मक समझ • 'सीखने की योजना' की अवधारणा को समझना : पारम्परिक पाठ योजना को बदलकर सीखने की योजना का प्रयोग	• Classroom processes: Factors affecting ; major challenges; time management, Communication skills of teacher, role of learners • Seating arrangements for various classroom practices • Relating Classroom practices with Curriculum, pedagogy and teaching resources • Critical understanding of micro-teaching and Bloom's taxonomy for classroom practices • Understanding the concept of 'Learning plan': replacing the traditional lesson plan of classroom teaching

Unit-5	
अधिगम, षिक्षण : प्रमुख मुद्दे एवं चुनौतियां	**Learning, Teaching and Assessment: major issues and challenges**
• अधिगम और षिक्षण : विद्यालयी प्रक्रियाओं की समकालीन वास्तविकता • प्रमुख मुद्दे : मार्किंग बनाम ग्रेडिंग, बच्चों को फेल न करने की नीति (अनवरोध की नीति), वस्तुनिष्ठता बनाम विषयनिष्ठता • अधिगम और षिक्षण का जुड़ाव : युक्तियां एवं चुनौतियां; षिक्षक की भूमिका	• Learning and Teaching: Contemprorary realities of school practices • Major issues : Marking vs Grading, Non-detention policy, Objectivity vs subjectivity • Relating learning and teaching: Strategies and challenges, Role of a teacher
इस इकाई में पिछले सभी इकाईयों में सीखी गई अवधारणाओं को एक दूसरे से जोड़कर देखा गया है। साथ ही, यहां उन्हें विद्यालय के वास्तविक परिदृष्य में समझने पर भी बल दिया गया है। विद्यालयी प्रक्रियाओं में अधिगम, षिक्षण और आकलन को एक समेकित प्रक्रिया के रूप में कैसे बनाया जाए तथा इसकी क्या सीमाएं हैं, इस पर यहां चर्चा की जाएगी। खासकर, इनसे सम्बंधित जो व्यावहारिक मुद्दे हैं उनको समझा जाएगा। साथ ही, अधिगम, षिक्षण और आकलन व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए क्या युक्तियां होनी चाहिए और उसमें षिक्षक की क्या भूमिका हो सकती है, इसपर विषेष चर्चा की जाएगी।	

References

Andrade, H. L. (2013). Classroom assessment in the context of learning theory and research. In J. H. McMillan (Ed.), Sage handbook of research on classroom assessment. California, USA: Sage.

Black, P. (2015). Formative assessment – an optimistic but incomplete vision. Assessment in Education: Principles, Policy & Practice, 22(1).

Broadfoot, P. (1979). Assessment, schools and society. London, USA: Methuen & Co.

Byrnes, D.A. (1989), Attitudes of students, parents and educators toward repeating a grade. In L.A. Shepard & M.L. Smith (eds.), Flunking grades: Research and policies on retention. London: Falmer Press.

Cumming, J., & Maxwell, G. S. (1999). Contextualizing Authentic Assessment. Assessment in Education: Principles, Policies and Practices, 6(2),

Darling-Hammond, L. (1998), Alternatives to grade retention. The School Administrator, 55,7.

Deshpande, J.V. Examining the Examination System Economic & Political Weekly, April 17, 2004 Vol XXXIX, No. 16.

Dweck, C. S. (2006). Mindset : The new psychology of success. New York: Ballantine Book

Eggen, P. &Kauchak, D. (1999). Educational Psychology: Windows on Classrooms. (4th ed.). New Jersey : Prentice Hall

Farrell, M. (2009).Foundations of Special Education: An Introduction. (4th ed.). Wiley Blackwell

Frederickson, N. & Cline, T. (2009).Special Educational Needs, Inclusion and Diversity. (2nd ed.). New York: McGraw Hill Education Open University Press

Gargiulo, R.M. (2015). Special Education in Contemporary Society 5e: An Introduction to Exceptionality. Canada: Sage

Gilligan, C. (1982). In a different Voice: Psychological Theory and Women's Development. Cambridge: Harvard University Press.

Hallahan, D.P., Kauffman, J.M. & Pullen, P.C. (2012).Exceptional Learners: An Introduction to Special Education. (12th ed.). New Jersey: Pearson Education.

Jalaluddin, A. K. (2011). Ratane se Arth Nirman tak: Pathyacharya, Shikshanshastra aur Mulyankan mein Ferbadal. Shiksha Vimarsh, March-April issue.

Kumar, K. (2004). What is worth teaching? (3rd ed.). Orient Blackswan.

Lampert, M. (2001). Chapter 1 & Chapter 2. In Teaching problems and the problems of teaching. Yale University Press.

Laser, R., Chudowsky, N., & Pellegrino, J.W. (Eds.). (2001). Knowing what students know: The science and design of educational assessment. National Academies Press.

Lefrancois, G.R. (1999). Psychology for Teaching. (10th ed.). London: Wadsworth Publishing.

Mukunda, K.V. (2009). What did you ask at school today? A handbook of child learning. Harper Collins.

Nawani, D (2012), Continuously and comprehensively evaluating children, Economic & Political Weekly, Vol. XLVIII, Jan 12, 2013.

Nawani, D (2015). Re-thinking Assessments in Schools, Economic & Political Weekly, Jan 17, Vol L, No. 3.

NCERT(2007) National Focus Group Paper on Examination Reforms

Ormrod. J.E. (2000).Educational Psychology: Developing Learners. (3rd ed.). New Jersey: Prentice Hall

Phillips, D. C. (1995). The good, the bad, and the ugly: The many faces of constructivism. Educational Researcher, 5–12.

Piaget, J. (1926). Language and Thought of the Child. London: Routledge & Kegan Paul.

Piaget, J. (1951). The Psychology of Intelligence. London: Routledge & Kegan Paul.

Piaget, J. (1952). The Origins of Intelligence in Children. New York: International University Press.

Piaget, J. (1997). Development and learning. In M. Gauvain & M. Cole (Eds.), Readings on the development of children. New York: WH Freeman & Company.

Ranganathan.N. (2000).The Primary School Child: Development and Education. New Delhi : Orient Longman

Sharma, P.L., A Teacher's Handbook on IED: Helping children with special needs, NCERT, New Delhi

Shepard, L. A. (2000). The role of assessment in a learning culture. Educational Researcher, 4–14.

Shepard, L. A. (2000). The role of assessment in a learning culture. Educational Researcher.

Shulman, L. S. (1986). Those who understand: Knowledge growth in teaching. Educational Researcher, 4–14.

Singh, Arun. K., Shiksha Manovigyan, Bharati Bhavan Publication, Patna.

Slavin, R. E. (1997).Educational Psychology: Theory and Practice. (5th ed.). New Jersey: Allyn and Bacon.

Stiggins, R. (2005). From formative assessment to assessment for learning: A path to success in standards-based schools. Phi Delta Kappan, 324–328.

Vygotsky, L. (1997). Interaction between learning and development. In M. Gauvain & M. Cole (Eds.), Readings on the development of children. New York: WH Freeman & Company.

Vygotsky.L. (1978).Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Cambridge: Harvard University Press.

Vygotsky.L. (1986).Thought and Language. Cambridge: The MIT Press.

Woolfolk, A. (2014). Educational Psychology. (12th ed.). New Delhi: Pearson Education.

Woolfolk, A., Misra, G. &Jha, A.K. (2012).Fundamentals of Educational Psychology. (11th ed.). New Delhi: Pearson.

C-4
Language across the Curriculum

Unit-1	
शिक्षार्थी और उनकी भाषा	**Learners and their languages**
• भाषा का अर्थ : विविध रूप, व्यवस्था, संरचना एवं विषेषताएं;भाषा 'अर्जित' करने और भाषा 'सीखने' में अंतर • शिक्षार्थियों में भाषा के ज्ञान को समझना; षिक्षार्थियों की शषिक पूंजी; मातृभाषा का महत्व • बच्चे भाषा कैसे सीखते हैंः चौम्स्की, ब्रुनर, पियाजे और वाईगोत्सकी के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए	• Meaning of Language: Various forms, Systems and properties; Difference between acquiring language and learning language • Understanding the knowledge of language in learners; Language capital of learners; importance of mother language • How children learn language: With special reference to Chomsky, Bruner, Piaget and Vygotsky
इस इकाई का उद्देष्य प्रषिक्षुओं को ''भाषा क्या है'' यह समझने में मदद करना है। भाषा की सबसे प्रचलित परिभाषा यह है कि भाषा संप्रेषण का माध्यम है। परन्तु यह भाषा की बहुत ही सीमित परिकल्पना है। इस इकाई में हम भाषा के विभिन्न पहलुओं के बारे में बातचीत करते हुए यह समझने का प्रयास करेंगे कि भाषा को किन–किन रूपों में समझा जा सकता है? साथ ही साथ, व्याकरण के दृष्टिकोण से ध्वनि, वाक्य एवं संवाद के धरातल पर भाषा की संरचना एवं विषेषताओं को समझने का भी प्रयास करेंगे। हम यह देखते हैं कि बच्चे अपने परिवेष के साथ सहज अन्तःक्रिया करते हुए भाषा सीख जाते है। यदि हम भाषा सीखने की इस प्रक्रिया पर ध्यान दें तो हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि कक्षा में भाषा सीखने की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए? इस इकाई में बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता, भाषा सीखने की प्रक्रिया व उसमें विभिन्न कारकों के योगदान पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। भाषा सीखने की प्रक्रिया के बारे में षिक्षाविदों मुख्यतः, चॉमस्की, ब्रुनर, पियाजे, वायगोत्सकी के दृष्टिकोण से भी प्रषिक्षुओं का इस इकाई में परिचय होगा। इस इकाई में प्रषिक्षु यह भी समझ पाएंगे कि भाषा कैसे समझ के निर्माण में सहयोग करती है।	

Unit-2	
भाषाओं का संदर्भ और बहुभाषिकता	**Context of languages and Multilingualism**
• भाषा, बोली और लिपि • बहुभाषिकता की अवधारणा; भारत और बिहार का बहुभाषिक परिदृष्य • भाषा का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भ • भाषा को अस्मिता, सत्ता और जेण्डर से जोड़कर देखना • भारत में भाषा सम्बंधी संवैधानिक प्रावधानों की समझ	• Language, dialect and script. • Concept of Multilingualism: Multilingual perspective of India and Bihar . • Social, Cultural and political context of language. • Relating Language with Identity, Power and Gender. • Constitutional provisions related to languages in India.
हमारे देष में कई प्रकार की विविधताएँ हैं। भाषायी विविधता भी उनमें से एक है। पूरे विष्व में लगभग 5000 भाषाएँ हैं उनमें से करीब 1600 से अधिक भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं। भारत के संदर्भ में यह कहना गलत नहीं होगा कि यहाँ अधिकांष व्यक्ति कम–से–कम दो भाषाएँ जानते हैं। यह जानते हुए भी कि भारत एक बहुभाषिक देष है स्कूलों में भाषा षिक्षण में ज़ोर किन्हीं एक या दो विषेष भाषाओं (अमूमन हिन्दी व अंग्रेजी) पर ही होता है। बच्चों की भाषाओं, जो कि इतनी विविधता लिये हुए होती है, उनको भाषा व बोली, शुद्ध भाषा, मानकीकृत भाषा जैसे मुद्दों के बीच दबा दिया जाता है। यह इकाई, भाषायी विविधता व बहुभाषिकता को समझने में मदद करेगी। इकाई में बिहार के बहुभाषिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए विस्तार से यह चर्चा की जाएगी कि हम इस भाषायी विविधता को स्वयं व बच्चों के भाषा के विकास के लिए एक संसाधन के रूप में उपयोग कैसे कर सकते हैं। भाषा इंसान की सामाजिक आवष्यकताओं को पूरा करने के लिए इंसान द्वारा सृजित की गई। इंसानों तथा उनकी आवष्यकताओं में अन्तर होता है इस वजह से उनकी भाषा में भी अन्तर होता है। इस कारण भाषा में विविधता तथा स्तरीकरण का गुण पाया जाता है। सामाजिक संरचना शक्ति की संकल्पना का सहारा लेती है। लोग शक्तिषाली तथा कमजोरों में बंटे हैं। लोग उत्पीड़ित तथा उत्पीड़कों में बंटे हैं। लोग अनेक अर्थो में एकजुट तथा संवदेनषील होते हैं। इन आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए लोग भाषा का अलग–अलग उपयोग करते हैं। भाषा समुदायों की पहचान को बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोगों की वैयक्तिक पहचान गढ़ने में भाषा गहराई से मदद करती है। सामाजिक स्तरीकरण का एक रूप स्त्री तथा पुरूष के बीच लिंग के आधार पर किया जाने वाला भेद भी है। भाषा के जरिए भेद को स्वीकारने तथा आत्मसात करने का वातावरण बनाया जाता है। साहित्य इस प्रकार के भेद को बढ़ाने या कम करने का काम कर सकता है। समतामूलक विचारों को भी पहुँचाने तथा स्वीकृत करवाने के लिए भी भाषा का उपयोग किया जाता है। इन सब के साथ–साथ, भाषा के संवैधानिक प्रावधानों की भी यहां चर्चा की जाएगी।	

Unit-3	
विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा	**Language in School Curriculum**
• भाषा एक 'विषय' और एक 'माध्यम' के रूप में • पाठ्यचर्या में भाषा की भूमिका एवं महत्व; मातृभाषा का स्थान; पाठ्यपुस्तकों की भाषा • भाषा सीखने के उद्देष्यों की समझ : कल्पनाषीलता, सृजनात्मकता, संवेदनषीलता, कौषल विकास • माध्यम भाषा : विभिन्न आयोगों व समितियों के सुझावों की चर्चा • कक्षायी विमर्षों में भाषा को लेकर प्रमुख मुद्दे : बहुभाषिकता के प्रति दृष्टिकोण, भाषा षिक्षण को लेकर चुनौतियां (बिहार के विषेष संदर्भ में)	• Language as a 'subject' and as a 'medium' in school • Role and importance of language in the curriculum: Place of mother language • Understanding the objectives of learning languages: imagination, creativity, sensitivity, skill development • Medium of instruction: suggestions of difference commissions. • Major issues about languages in classroom discourse: attitude towards multilingualism; Challenges of teachers in teaching language subjects (with special focus on Bihar)
शिक्षार्थी जब विद्यालय आते हैं तब वे अपने साथ अपनी भाषा भी लाते हैं। कक्षा में वे अपनी भाषा में व्यक्तियों के साथ संवाद करते है। दूसरी तरफ, वे कक्षा में भाषा को पढ़ते भी हैं। अतः भाषा को लेकर षिक्षार्थियों के अनुभव बहुत समृद्ध होते हैं, अन्य विषयों की तुलना में। अतः, यह महत्त्वपूर्ण है कि भाषायी रूप से परिपक्व बच्चों के भाषायी उपयोग एवं स्तर के विकास में षिक्षक अपनी भूमिका के बारे में समझ बनाए एवं उसका उपयोग करें। इस इकाई में विद्यालयी पाठ्यचर्या के अन्दर भाषा के स्थान को समझने की विषेष कोषिष की गई है जिसमें पाठ्यपुस्तकों की भाषा का विष्लेषण तथा मातृभाषा के स्थान, दोनों के विषय में प्रषिक्षु समझ बना पायेंगे। यहां यह स्पष्ट करना है कि इस विषय में भाषा को पूरी पाठ्यचर्या के संदर्भ में देखे जाने पर जोर दिया गया है और इसलिए प्रषिक्षुओं को यह समझने का अवसर दिया गया है कि उनके द्वारा पढ़े या पढ़ाए गए विषय का महत्त्वपूर्ण स्रोत भाषा है। इसकी मदद से वह अपने विषय में ज्ञान का सृजन, भण्डारण, सम्प्रेषण, मूल्यांकन एवं संषोधन करते हैं। इसी कारण भाषा का स्थान स्कूली षिक्षा के पूरे पाठ्यक्रम में सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। भाषा न सिर्फ सम्प्रेषण का माध्यम है बल्कि यह अपनी कल्पना, सृजनात्मकता, संवेदना और कौषलों की अभिव्यक्ति का भी सषक्त माध्यम है। इस सब बातों की विस्तृत चर्चा इस इकाई में की जाएगी।	

Suggested Readings:

Agnihotri, R. K. (1996). Kaun Bhasha Kaun Boli. Sandarbh 13, 37-43

Agnihotri, R.K. (1995). Multilingualism as a classroom resource. In K. Heugh, A. Siegrühn, & P. Plüddemann (Eds.), Multilingual education for South Africa (pp. 3–7). Heinemann Educational Books.

Agnihotri, R.K., & Kumar, S. (2001). Bhasha, boli aur samaj. Deshkal Publications.

Anderson, R.C. (1984). Role of the reader's schema in comprehension, learning and memory. In R.C. Anderson, J. Osborn, & R.J. Tierney (Eds.), Learning to read in American schools: Basal readers and content texts. Psychology Press.

Atwell, N. (1987). In the Middle: Writing, reading, and learning with the adolescents. Portsmouth:.Heineman.

Grellet, F. (1981). Developing reading skills: A practical guide to reading comprehension exercises. Cambridge University Press.

Kunwar, N. (2015). 'Right writing' in Indian classroom: learning to be artificial. Language and language teaching.Vol 4, No. 1, Issue 7.

NCERT. (2006d). Position paper-National focus group on teaching of Indian language (NCF 2005). New Delhi: NCERT.

Rai, M. (2015). Writing in Indian schools: the product priority. Language and language learning. Vol 4, No 1, Issue 7, 32-36

Sinha, S. (2009), Rosenblatt's theory of reading: Exploring literature, Contemporary Education

Sinha, S. (2012). Reading without meaning: The dilemma of Indian classrooms. Language and

C-6
Gender, School and Society

किसी भी समाज के मानवीय होने की कसौटियों में से एक महत्वपूर्ण कसौटी यह है की उसमें स्त्री और पुरुष के बीच सम्बन्ध कितने समतामूलक हैं। स्त्री और पुरुष के बीच असमानता को रचने के प्रयास बहुत पुराने हैं। अनेक कारणों से इनके बीच असमानता रचने वाले कारकों को पहचानने के प्रयास किये गये। भारतीय समाज तथा शिक्षा में इस प्रकार की असमानताओं के होने को समय–समय पर रेखांकित किया जाता रहा है। इसी प्रकार के प्रयासों में भिन्नता के होने तथा असमानता को रचे जाने के बीच फ़र्क को समझा गया। यह समझ में आने लगा कि स्त्री और पुरुष के बीच भिन्नता प्राकृतिक है लेकिन असमानता समाज द्वारा सृजित है।

इस विषय के माध्यम से प्रशिक्षु यह समझ बनाएँगे कि भिन्नता को असमानता में रूपांतरित करने के तरीक तथा प्रक्रियाएं कौन–कौन सी हैं। वे कौन से तरीके हैं जिनसे मर्द और औरत की छवियों को गढ़ा जाता है। वे इन छवियों को गढ़ने के तर्कों की समीक्षा करने में स्वयं को सक्षम बनाएँगे। प्रषिक्षु, मर्द और औरत कि गढ़ी जा रही छवियों के शिक्षा के साथ सम्बन्ध के बारे में समझ बनाते हुए छवियों का लोकतांत्रीकरण और मानवीकरण करने के प्रयासों के बारे में समझ बनाएँगे। वे मर्द और औरत की छवियों को रचने की प्रक्रियाओं को समझकर शिक्षा के जरिये लैंगिक–समानता स्थापित करने की दिशा में स्वयं तथा अन्य एजेंसियों की भूमिका के बारे में समझ बनायेंगे।

Unit-1	
जेण्डर की समझ	**Gender Issues: Key Concepts**
• जेण्डर और लिंग की अवधारणा • जेण्डर पक्षपात, जेण्डर सम्बंधी रूढ़ीगत मान्यताएं, जेण्डर सषक्तिकरण की समझ • भारत में जेण्डर का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य • जेण्डर और पितृसत्ता	• Concept of Gender and Sex • Understanding Gender bias, gender stereotyping and gender empowerment • Historical perspective of Gender in India • Gender and Patriarchy

Unit-2	
जेण्डर और समाजीकरण	**Gender and Socialization**
• औरत और मर्द का बनना • जेण्डर सम्बंधी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य : समाजीकरण का सिद्धांत, जेण्डर विभेद, संरचनात्मक सिद्धांत, पुनर्रचनात्मक सिद्धांत • जेण्डर अस्मिता और समाजीकरण की प्रक्रियाएं : धर्म, परिवार, समाज, मीडिया आदि की भूमिका	• Making of woman and man. • Theoretical perspectives related to Gender: Socialization theory, Gender Difference, Structural Theory, Deconstructive theory. • Gender Identities and Socialization Practices: Role of religion, family, society, media and School.

Unit-3	
जेण्डर अध्ययन :परिप्रेक्ष्यों का विकास	**Gender Studies: perspective development**
• स्त्री अध्ययन से जेण्डर अध्ययन की तरफ विकास • जेण्डर से संबंधित शोधों का संदर्भ • जेण्डर सम्बंधी प्रमुख सामाजिक सुधार आंदोलनों की समझ • जेण्डर सम्बंधी संवैधानिक, कानूनी एवं नीतिगत प्रयास	• Paradigm shift from women's studies to gender studies. • Context of researches related to gender. • Landmarks from social reforms movements,focus on women's experiences of education, legistlative. • Constitutional, legal and policy perspectives about Gender issues.

Unit-4	
जेण्डर और षिक्षा : पाठ्यचर्या, षिक्षणषास्त्र एवं षिक्षक	**Gender and Education: Curriculum, Pedagogy and Teacher**
• विद्यालय और पाठ्यचर्या : जेण्डर संवेदनषीलता का प्रष्न, जेण्डर और प्रच्छन्न पाठ्यचर्या, विद्यालय के जगहों एवं प्रक्रियाओं का जेण्डर के दृष्टिकोण से विष्लेषण • पाठ्यपुस्तकों एवं षिक्षणषास्त्र में जेण्डर : पाठ्यपुस्तकों तथा कक्षा षिक्षण में जेण्डर की छवि की समीक्षा • जेण्डर समानता में षिक्षा की भूमिका : लड़कियों के षिक्षा का महत्व • षिक्षक की परिवर्तनकारी एवं जेण्डर संवेदनषील भूमिका	• School and Curriculum: The question of gender sensitivity; gender and hidden curriculum; Analyzing school spaces and processes from the perspective of gender • Gender in text and pedagogy: Analyzing the 'Construction of gender' in textbooks and classroom practices • Role of Education for gender equality: Importance of schooling girls • Teacher: as an agent of change; gender sensitive professional

References

Chanana, Karuna. 1988 Socialization, Education and Women. Nehru Memorial Museum and Library: New Delhi

Dube, Leela. 2000 Anthropological Explorations in Gender: Intersecting Fields. Sage Publications: New Delhi

Dube, Leela 1997. Women and Kinship: Comparative Perspectives on Gender in South and South-East Asia (New York: United Nations University Press)

Beasley, Chris. 1999. What is Feminism: An Introduction to Feminist Theory. Sage: New Delhi

Conway, Jill K., et al. 1987. 'Introduction: The Concept of Gender', *Daedalus*, Vol. 116, No. 4, Learning about Women: Gender, Politics, and Power (Fall): XXI-XXX

Engineer, Asghar Ali. 1994. 'Status of Muslim Women', *Economic and Political Weekly*, Vol. 29, No. 6 (Feb.): 297-300

Erikson, Erik H. 1964. 'Inner and Outer Space: Reflection on Womanhood', *Daedalus*, Vol.93, No.2, The Woman in America (Spring): 582-606

Ganesh, K. 1994. 'Crossing the Threshold of Numbers: The Hierarchy of Gender in the Family in India', *Indian Journal of Social Science*, 7(3 & 4): 355-62

Ganesh, K. 1999. 'Patrilineal Structure and Agency of Women: Issues in Gendered Socialization' in T. S. Saraswathi (ed.), *Culture, Socialization and Human Development*Delhi: Sage Publication India Pvt. Ltd.

Gardner, Carol Brooks. 1983. 'Passing By: Street Remarks, Address Rights, and the Urban Female', *Sociological Inquiry* 50: 328-56

Gilligan, Carol. 1982. In a Different Voice England: Harvard University Press

Government of India. 1975 a. *Towards Equality: Report of the Committee on the Status of Women in India* (Delhi: Department of Social Welfare, Government of India)

Government of India. 1994.The Girl Child and the Family: An Action Research Study. Department of Women and Child Development Delhi: HRD Ministry, Government of India

Hasan, Zoya and Menon, Ritu.. 2005. Educating Muslim Girls: A Comparison of Five Indian Cities Delhi: Women Unlimited

Kumar, Krishna. 2010. 'Culture, State and Girls: An Educational Perspective' *Economic and Political Weekly* Vol. XLV No. 17 April 24

Kumar, Krishna. 2013 *Choodi Bazar Mein Ladki.* Rajkamal: New Delhi

Patel, Tulsi. 2007.'Female Foeticide, Family Planning and State-Society Intersection in India' in Tulsi Patel (ed.), *Sex- Selective Abortion in India* Delhi: Sage Publications

Ridgeway, Cecilia L. and Correll, Shelley J. 2004. 'Unpacking the Gender System: A Theoretical Perspective on Gender Beliefs and Social Relations', *Gender and Society*, Vol. 18, No. 4 Aug.

West, Candace and Zimmerman, Don H. 1987. 'Doing Gender', *Gender and Society*, Vol. 1, No. 2 Jun.: 125-151

C-8
Knowledge and Curriculum

Unit-1	
ज्ञान और षिक्षा	**Knowledge and Education**
• षिक्षा, ज्ञान और दर्षन के बीच अर्न्तसंबंध की समझ। • षिक्षा के दर्षन में बुनियादी अवधारणा षिक्षार्थी की प्रकृति, वृद्धि एवं विकास के संदर्भ में षिक्षण,प्रषिक्षण, अधिगम एवं षिक्षा,ज्ञान के संबंध में सूचना धारणा और सत्य की अवधारणा तथा उनका ज्ञान के साथ संबंध • ज्ञान के आधार के रूप में षिक्षा का प्रयोजन व्यक्तिगत या सामाजिक विकास, ज्ञान या सूचना प्रदान, भौतिक या आध्यात्मिक विकास, उपयोगिता की कसौठी एवं षिक्षा का राजनैतिक एजेंडा • विज्ञान,षिक्षा एवं मुल्यः षिक्षा के प्रयोजन में मूल्यों का स्थान, मूल्य क्या है? वे सापेक्ष है या निरपेक्ष? मूल्यों का सृजन कौन करते है? संदभों के साथ मूल्यों में परिवर्तन कैसे होता है और वे किस प्रकार षिक्षा के प्रयोजन को प्रभावित करते है।	• Understanding relation between education, knowledge and philosophy. • Basic Concepts in Philosophy of Education: teaching, training, learning and education in the context of the child's nature, growth and development; Concept of information, belief and truth in relation to knowledge. • Purpose of Education as a basic of knowledge: individual or social development, providing knowledge or information, materialistic or spiritual development; criteria for worthiness and political agenda of education. • Knowedge, Education and Value: Place of value in the purpose of education; what are values? Are they relative or absolute? Who creates values? How values change according to context and how they impact the purpose of education.

Unit-2	
ज्ञानमीमांसा और षिक्षा	**Epistemology and Education**
• **षिक्षा का ज्ञानमीमांसीय आधारः ज्ञान,तर्क एवं मान्यता, (तार्किकता): विद्यालयी विषयों के संदर्भ में अनुभव एवं जागरूकता, मूल्यों एवं आदर्षों की समझ।** • **ज्ञानमीमांसाः प्रमुख विचारधाराएँ (वाद) और भारतीय दर्षन के क्षेत्र में पद्धति का विचार : विकल्प, मानवीय प्रक्रिति के संबंध में मान्यताएँ, व्यवहारवादी की समालोचना एवं इसके तीन विकल्पः गतिविधिः (अ) गाँधी जी की "नई तालिम" एवं अधिगम पर डिवी के विचार और गाँधी के नई तालिम के संदर्भ में** **(ब) खोजः बच्चों के बोधिक विकास के लिए मोनटेष्वरी विचार**	• ***Epistemological Basis of Education:*** knowledge, reason and belief, rationality; experience and awareness, values and ideals with reference to school subjects • Epistemology: Schools of thought (isms) and Indian Philosophy • ***Methodological Options in Education:*** Assumptions about human nature; critique of behaviorism and its three alternatives: (a) Activity: With reference to Dewey's ideas on learning and Gandhi's NaiTalim; (b) Discovery: With reference to Montessori's description

का वर्णन एवं डिवी के जिज्ञासा की अवधारणा के संदर्भ में खोज। (ई) संवादः प्लेटो (एलगोरी ऑन द केभ), उपनिषदों (नाचिकेता–यम संवाद), षिक्षक एवं छात्रों के बीच वुबर के संवादीय विचार (मैं और तुम) तथा षिक्षक की मूमिका के संदर्भ में विमर्ष।	of children's intellectual growth and Dewey's concept of inquiry; (c) Dialogue: With reference to Plato (Allegory of the Cave), the Upanishads(The Nachiketa-Yama dialogue) and Buber's idea of a dialogue between teacher and student ('I and Thou') along with a discussion on the role of a teacher

Unit-3	
	Understanding Curriculum
• पाठ्यचर्या की समझ • पाठ्यचर्या : अवधारणा एवं महत्वः पाठ्यचर्या की रूपरेखा,पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की अवधारणा के मध्य स्पष्टतया। • ज्ञान एवं पाठ्यचर्चा के बीच संबंधः दार्षनिक एवं समाज शास्त्रीय पहलू। • पाठ्यचर्या के निर्धारकः लक्ष्य एवं उद्धेष्य, नियम,ज्ञान का वर्गीकरण, वैचारिक दृष्टिकोण, षिक्षार्थी का सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ, विद्यालयी व राष्ट्रीय स्तर के कारक प्रछन्न पाठ्यचर्या के कारक।	• Curriculum: Concept and importance; Clarity among curriculum framework, curriculum, syllabus and textbook • Relation of knowledge and Curriculum: Philosophical and sociological aspects. • Curriculum determinants: Vision and objectives, Criteria, knowledge categories, ideological stances, Socio-cultural context of learners, Nation and school level determinants; factors of hidden curriculum

Unit-4	
	Approached to Curriculum Development
• पाठ्यचर्या विकास के प्रति विविध उपागमः प्रमुख सिद्धांत विषय – केन्द्रित उपागम, संदर्भ केन्द्रित उपागम, व्यवहारवादी उपागम, योग्यता– आधारित उपागम, बाल केन्द्रित उपागम एवं सर्जनवादी उपागम। • विद्यालय– षिक्षा के मौजूदा पाठ्यचर्या की आलोचनात्मक समझः ज्ञान के स्वरूप के संबंध में, जानना और समाज के सामाजिक–सांस्कृतिक पहलूओं में इनका संबंध। • विद्यालय पाठ्यचर्या का विकासः प्रमुख अवयव तथा उनकी प्रकृति, षिक्षक एवं षिक्षार्थी की भूमिका, क्रियान्वयन की प्रमुख चुनौतियाँ।	• Different approaches towards curriculum development: major principles; Subject-centered; context-centered; behaviourist; competency-based, learner-centered and constructivist. • Critical Understanding of existing curriculum of school education: in relation to form of knowledge, knowing and its relation to socio-cultural aspects of society • Developing School Curriculum: Major components and their nature; role of teacher and learner; challenges of its transaction
विद्यालय में सीखने–सिखाने की जो प्रक्रिया चलती है, उसका आधार मूलतः पाठ्यचर्या होती है। बच्चों को विद्यालय में क्या सीखना है, क्यों सीखना है और कैसे सीखना है, इन सब सवालों पर पाठ्यचर्या बात करती है, अतः इसे समझकर एक षिक्षक अपने कार्य को बेहतर बना सकते हैं। लेकिन, पाठ्यचर्या की अवधारणा के प्रति कई बार भ्रम भी हो जाता है और इसे किसी अन्य संबंधित अवधारणा के समतुल्य मान लिया जाता है। इसीलिए, इस इकाई की शुरूआत सबसे पहले पाठ्यचर्या तथा अन्य सम्बंधित पदो के मध्य स्पष्ट समझ से की जा रही है ताकि शब्द और अर्थ के अदला बदली से बचा जा सके। पाठ्यचर्या के 'क्या सीखना है' और 'क्यों सीखना है' पर चिंतन करने के लिए इसके निर्धारक कारकों एवं प्रमुख उपागमों की बात यहां की जानी है। लेकिन 'कैसे सीखना है' वाली बात की छोटी झलक ही यहां दिया जा सकता है क्योंकि इस पूरे बी.एड. कार्यक्रम को 'कैसे' वाले पक्ष को लेकर ही बनाया गया है।	

Unit-5	
विद्यालय : ज्ञान, पाठ्यचर्या और षिक्षा का संदर्भ	**School : The Context of knowledge, Curriculum and Education**

• विद्यालय में 'ज्ञान' और 'जानना' : स्वरूप, स्थान और प्रक्रियाएं; पैराडाइम षिफ्ट (ज्ञान–फलक में बदलाव) • विद्यालय में ज्ञान को आकार देने में पाठ्यचर्या एक प्रमुख निर्धारक के रूप में • विद्यालय के बाहर के परिवेष से षिक्षा का जुड़ाव • ज्ञान, पाठ्यचर्या और षिक्षा : षिक्षणषास्त्र की समझ के साथ षिक्षक की भूमिका	• Knowledge and knowing in school: Forms, sites and processes; paradigm shift. • Curriculum as key determinants of knowledge in School. • Linkage of Education with outside school experiences. • Knowledge, Curriculum and Education: Role of teacher as a critical pedagogue.

ज्ञान, पाठ्यचर्या और षिक्षा का विमर्ष बहुत व्यापक है। लेकिन एक षिक्षक के लिए वे तभी उपयोगी हो पाएंगे जब उनकी चर्चा विद्यालय के संदर्भ में की जाए। इस इकाई में पिछले चार इकाईयों के विमर्षों को विद्यालय से जोड़कर देखने की कोषिष की गई है। जैसे कि विद्यालय में ज्ञान का जो एक अलग स्वरूप होता है, उसके सृजन के क्या तरीके और सीमाएं हैं। साथ ही, जिस प्रकार से ज्ञान का स्वरूप लगातार बदलता रहा है, क्या विद्यालय ने भी उसे समझा और अपनाया है, इसपर समझ बनाना भी इस इकाई का उद्देष्य है। उदाहरण स्वरूप अब तक की पाठ्यचर्या में बच्चों के विद्यालय के बाहर के ज्ञान को कोई विषेष स्थान नहीं मिल पाया है और उनके किताबी ज्ञान को अत्यधिक महत्व दिया जाता रहा है, ऐसा क्यों होता रहा है समझना जरूरी है ताकि उससे आगे बढ़ा जा सके। इस इकाई में ज्ञान, पाठ्यचर्या और षिक्षा के अंतर्सम्बंधों को भी समझा जाएगा। कोई ज्ञान पाठ्यचर्या का हिस्सा क्यों बनता है और विद्यालय में उसकी षिक्षा क्यों दी जाती है, इसको षिक्षणषास्त्रीय नज़रिए से देखना एक षिक्षक के लिए अति आवष्यक है जिस पर इस इकाई मे चर्चा की जानी है।

Suggested Readings:

Apple, M.W. (2008). Can schooling contribute to a more just society? Education, Citizenship and Social Justice, 3(3), 239–261.

Apple, M.W., & Beane, J.A. (2006). Democratic schools: Lessons in powerful education.

Buber, Martin. 2006'Teaching and Learning' in The Writings of Martin Buber. Author: Will Herberg.Universal Digital Library.The World Publishing Company: New York.

Carr, D. (2005). Making sense of education: An introduction to the philosophy and theory of education and teaching. Routledge.

Chand Kiran (2006), Shiksha Ka Darshnik Pariprekshya, New Delhi, Delhi Vishwavidyalay.

Cohen, Brinda. 1969. Educational Thought: An Introduction. Macmillan: Britain

Daya Krishna, Gyan Mimansha, Jaipur, Raj Hindi Granth Academy.

Delpit, L. D. (1988). The silenced dialogue: Power and pedagogy in educating other people's children. Harvard Educational Review, 58(3), 280–299.

Deng, Z. (2013). School subjects and academic disciplines. In A. Luke, A. Woods, & K. Weir (Eds.), Curriculum, syllabus design and equity: A primer and model. Routledge.

Dewey, John. (2004). Democracy and education. Courier Dover Publications.

Dewey, John. (1902). The Child and the Curriculum. Chicago: The University of Chicago Press

Dewey, John. (1915). The School and Society. The University of Chicago Press

Dhankar, Rohit (2006) Shiksha Aur Samajh Haryana: Aadhar Prakashan

Elmhirst, L.K. (1994). Rabindranath Tagore: Pioneer in Education. Delhi: Sahitya Chayan.

Freire, P. (1998). Pedagogy of freedom: Ethics, democracy, and civic courage. Rowman & Littlefield.

Freire, P. (2000). Pedagogy of the oppressed. Continuum.

Hanh, ThichNhat, 2013 *Peace of Mind.:Becoming Fully Present*. Bantam Press.

Hodson, D. (1987). Science curriculum change in Victorian England: A case study of the science of common things. In I. Goodson (Ed.), International perspectives in curriculum history. Croom Helm.

Illich, Ivan (1973). Deschooling Society, Penguin Books.

Krishnamuri, J. (1992). Education and the Significance of Life. India: Krishnamurti Foundation India.

Krishnamurti, J. (1992). Education and world peace. In Social responsibility. Krishnamurti Foundation.

Kumar, Krishna (1993), Raj Samaj Aur Shiksha, New Delhi, Raj Kamal Prakahsan.

Kumar, Krishna. (1998). Shaikshik Gyan Aur Varchasv. Delhi: Granthshilpi

Kumar, Krishna. (2004). What is Worth Teaching? Delhi: Orient Longman

Mascaro, Juan, (1965). The Upanishads. England: Penguin

Montessori, Maria. (1965). Spontaneous Activity in Education New York: Schocken Books

Montessori, Maria. (2012). The Absorbent Mind. New Delhi: Aakar Books

Moore, T.W. (1974). Educational Theory: An Introduction. London: Routledge & Kegan Paul

Pathak, A. (2009). Recalling the Forgotten: Education and Moral Quest. Delhi: Aakar Books.

Plato. (2009). Reason and persuasion: Three dialogues (Chapter 6). In J. Holbo (Ed.), Meno: Reason, persuasion and virtue. Pearson.

Raja, Munis (1997), Shiksha Aur Vikas Ke Samajik Ayam, New Delhi, Granth Shilp.

Sabyasachi, B. (1997). The Mahatma and the poet: Letters and debates between Gandhi and Tagore. National Book Trust.

Tagore, R. (2003). Civilization and progress. In Crisis in civilization and other essays. New Delhi: Rupa & co.

Valerian Rodrigues. (2002). Democracy. In The essential writings of B. R. Ambedkar (pp. 60–64). New Delhi: Oxford University Press.

Valmiki, Om Prakash (2006, May-June), Hamari Shiksha Padhtti Avr Dalit, Shiksha Vimarsh.

Wilson, J and Cowell, Barbara. 1928. Taking Education Seriously. London: The Falmer Press

Woozley, A.D. 1949. Theory of Knowledge: An Introduction. London: Hutchinson's University Library. (Hindi Translation: Gyanmeemansa Parichay Patna: Bihar Hindi Granth Academy)

C-9
Assessment and Learning

Unit-1	
	Basics of Assessment
	• Basic Concepts: assessment, evaluation, measurement, test, examination, formative and summative evaluation, continuous and comprehensive assessment mandated under RTE, and grading. • Purpose of assessment in different paradigms: (a) behaviourist (with its limited view on learning as behaviour), (b) constructivist paradigm and (c) socio-culturalist paradigm; distinction between 'assessment of learning' and 'assessment for learning'; assessment as a basis for taking pedagogic decisions

Unit-2

	Analyzing existing practices of Assessment
	• A critical review of current evaluation practices and their assumptions about learning and development; examination for selection or rejection; role of traditional examinations in maintaining social and cultural hierarchy; impact of examination-driven teaching on school culture and on pedagogy; content-confined testing; critique of prevailing quiz culture and popular tests such as ASSET and Olympiad; commercialization of testing • Impact of the prevailing assessment practices on students' learning, their motivation and identity; detrimental effects of labeling students as slow or bright or declaring them failures; perspective behind no-detention policy in elementary grades under RTE

Unit-3	
	Assessment in Classroom
	• Expanding notions of learning in a constructivist perspective; ability to develop indicators for assessment; tasks for assessment: projects, assignments, formulating tasks and questions that engage the learner and demonstrate the process of thinking; scope for original responses, observation of learning processes by self, by peers, by teacher; organising and planning for student portfolios and developing rubrics for portfolio assessment, teachers' diaries, group activities for assessment • Dimensions and levels of learning, assessing conceptual development, recall of facts and concepts, application of specific skills, problem-solving; application of learning to diverse and new situations. • Assessment of meaning-making propensity, abstraction of ideas from experiences, identifying links and relationships; inference, analysis and reflection, originality and initiative, flexibility.

Unit-4	
	Assessment in Classroom
	• Feedback as an essential component of assessment; types of teacher feedback (written and oral); feedback to students and feedback to parents; peers' feedback, scores, grades and qualitative descriptions, • Developing and maintaining a comprehensive learner profile; challenges of assessment

Suggested readings:

Deshpande, J.V. Examining the Examination System *Economic & Political Weekly*, April 17, 2004 Vol XXXIX, No. 16.

Nawani, D (2015). Re-thinking Assessments in Schools, *Economic & Political Weekly*, Jan 17, Vol L, No. 3.

Nawani, D (2012), Continuously and comprehensively evaluating children, *Economic & Political Weekly*, Vol. XLVIII, Jan 12, 2013.

NCERT(2007) National Focus Group Paper on Examination Reforms

Shepard, L. A. (2000). The role of assessment in a learning culture. *Educational Researcher*.

Peer feedback and evaluation in Sanctuary Schools Dr Sudha Premnath and Ranjani Ranganathan (http://www.ashanet.org/projects-new/documents/701/Peer%20feedback%20and%20evaluation%20in%20Sanctuary%20Schools.pdf)

Black, P. (2015). Formative assessment – an optimistic but incomplete vision. *Assessment in Education: Principles, Policy & Practice, 22*(1).

Broadfoot, P. (1979). *Assessment, schools and society.* London, USA: Methuen & Co.

Byrnes, D.A. (1989), Attitudes of students, parents and educators toward repeating a grade. In L.A. Shepard & M.L. Smith (eds.), *Flunking grades: Research and policies on retention.* London: Falmer Press.

Darling-Hammond, L. (1998), Alternatives to grade retention. *The School Administrator, 55*,7.

Dweck, C. S. (2006). *Mindset : The new psychology of success.* New York: Ballantine Book

Andrade, H. L. (2013). Classroom assessment in the context of learning theory and research. In J. H. McMillan (Ed.), *Sage handbook of research on classroom assessment*. California, USA: Sage.

Cumming, J., & Maxwell, G. S. (1999). Contextualizing Authentic Assessment. *Assessment in Education: Principles, Policies and Practices, 6*(2),

Source Books on Assessment for Grades I-V for Hindi, English, Mathematics and EVS NCERT (2008)

ए. के. जलालुद्दीन. (मार्च – अप्रैल, 2011).रटनसेअर्थनिर्माणतक: पाठ्यचर्या , शिक्षणशास्त्रऔरमूल्यांकनमेंफेर –बदल. शिक्षाविमर्श.

वैजयंतीशंकर. बड़ेपैमानेपरआंकलन: अनुभवऔरनजरिया. शिक्षा- विमर्श. मार्च – अप्रैल, 2013.

C-10
Creating an Inclusive School

Unit-1	
समावेषी विद्यालय का निर्माण	**Concept of Special needs and Inclusion**
• विविधताओं की समझ अवधारणाः प्रकार, (विविधताओं के आयाम के रूप में विकलांगता)। • सामाजिक संरचना के रूप में विकलांगता, विकलांगता का वर्गीकरण और इसके शैक्षिक निहितार्थ, (क)तंत्रिका संबंधी–दुर्बलता, (श्रवण दुर्बलता,दृष्टि दुर्बलता, और मूक बधिर,दृष्टिहीन), (ख) संज्ञात्मक अयोग्यताएँः (स्वलीनता वर्णक्रम विकार, बौद्धिक अयोग्यता) (ग) शारीरिक अक्षमताएँ (दिमागी पक्षाघात और चलन अच्मता या गतिहीनता)। • विकलांग बच्चों के विषिष्ट संदर्भः में समावेषी दर्षनः (सभी स्तरों पर अच्छे विकल्प के रूप में समावेषी –षिक्षा पर विचार–विमर्ष और विकलांगता की श्रेणीयाँ), • विकलांग बच्चों के लिए विषिष्ट और समावेषी विद्यालयों के स्थापन का महत्व, समावेषी भाषा– पहले व्यक्ति को प्राथमिकता देना चाहे वह विकालांग व्यक्ति हो • समावेषी की प्रक्रियाः विकलांगता से सम्बन्धित : विविध षिक्षार्थियों के समावेषन का संदर्भीकरणः आकलन सहित पाठ्यक्रम का सुधारः षिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सार्वभौलिक रूपरेखाः अचित आवासः अनुदेषात्मक अनुकूलन	• Understanding diversities: concept, types (disability as a dimension of diversity) • Disability as a social construct, classification of disability and its educational implications: (a) Sensory Impairment (Hearing Impairment, Visual Impairment and Deaf Blind); (b) Cognitive Disabilities: (Autism Spectrum Disorder, Intellectual Disability and Specific Learning Disability); (c) Physical Disabilities: (cerebral palsy and loco motor) • Philosophy of inclusion with special reference to children with disabilities: (Discussion on Inclusive education as the best alternative across all levels and categories of disabilities); The significance of the positioning of special schools and inclusive schools in the education of children with disabilities; The language of inclusion- putting people first rather than the disability a person may have) • Process of inclusion: Concerns and issues across disabilities; Contextualization of inclusion for diverse learners; Modification of curriculum including assessment; Universal design for teaching learning process; Reasonable accommodations; Instructional adaptations

Unit-2	
एतिहासिक परिपेक्ष्य और समकालीन प्रवृत्तियाँ	**Towards Inclusion: Paradigm and policy perspectives**
• एतिहासिक परिपेक्ष्य और समकालीन प्रवृत्तियाँ; धमार्थ संगठन द्वारा यात्रा,चिकित्सा ,मानव, अधिकार या आधारित सामाजिक आदर्ष, उत्तराधिकार से पृथ्रक्करण , एकीकरण और समावषीकरण ,संवैधानिक प्रावधान और अन्य नीतियों,पी.डब्ल्यू .डी. स्वतः (1995),षिक्षा अधिकार (2006), विकलांगता के साथ विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय षिक्षा नीति (1986) , सलामाका कथन(1994) और यू.एन.सी.आर.पी.डी.(2006),आई. ई.डी.एस.एस.(2000) • विकलांग विद्यार्थियों के लिए संस्थाओं की विषिष्ट भूमिका; आर. सी. आई.(2002), विकलांगता के राष्ट्रीय संस्थान (भारतीय), राष्ट्रीय न्यास (1999)	• Historical perspective and contemporary trends: Journey from charity , medical, social towards human rights based model; Succession from segregation, integration and inclusion • Constitutional provisions and other policies: PWD Act (1995), RTE (2006), NPE of Students with Disabilities (1986); Salamanca Statement (1994) and UNCRPD (2006), IEDSS (2000), • Special role of institutions for education of Children with Disabilities: RCI (2002), National Institutes of disabilities (Indian), National Trust (1999) and NGO's

प्रशिक्षुओं को समावेषी षिक्षा की समझ इसलिए होनी जरूरी है ताकि वे अपने विद्यालय में आनेवाले हर तरह के विद्यार्थी के साथ न्याय कर सकें। आज समावेषी षिक्षा के प्रति हर विद्यालय की प्रतिबद्धता को मजबूत किया जा रहा है ताकि कोई भी बच्चा सीखने के वास्तविक अवसर से वंचित न रह जाए। लेकिन, यह प्रतिबद्धता हमेषा से नहीं थी। इस अवधारणा के विकास का अपना एक इतिहास रहा है जिसकी समझ हम इस इकाई में बनाएंगे। समावेषी षिक्षा से सम्बंधित कुछ नीतिगत दस्तावेजों के कुछ अंषों का विष्लेषण भी इस इकाई में किया जाएगा। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है समावेषी षिक्षा के चिंतन को विद्यालयी स्तर पर उतार पाने का नजरिया। अतः एक समावेषी विद्यालय की संकल्पना क्या हो सकती है, इसके मूर्त एवं अमूर्त पक्षों के बारे में चर्चा की जाएगी। साथ ही, समावेषी षिक्षा को लेकर विद्यालयों की समकालीन स्थिति और चुनातियां क्या हैं, इसकी बात भी यहां की जाएगी।

Unit-3	
	Inclusive practices in Classrooms
	• School readiness (infrastructural including technologies, pedagogical and attitudinal) for addressing the diverse needs of children with disabilities • Role of Teachers (both regular and special) • Pedagogical strategies: cooperative learning strategies in the classroom, peer tutoring, social learning, buddy system, reflective teaching, multisensory and multidisciplinary approach • Supportive services required for meeting special needs in school and collaboration required for meeting special needs in the classroom: general teacher, special teacher, speech therapist, occupational therapist, child and clinical psychologist and other outsourced experts, family, multi disciplinary team (along with child in the decision making process) • Collaboration between teacher and special educator, parents, outsourced experts, students and others as a continuous process

प्रषिक्षुओं को समावेषी षिक्षा की समझ इसलिए होनी जरूरी है ताकि वे अपने विद्यालय में आनेवाले हर तरह के विद्यार्थी के साथ न्याय कर सकें। आज समावेषी षिक्षा के प्रति हर विद्यालय की प्रतिबद्धता को मजबूत किया जा रहा है ताकि कोई भी बच्चा सीखने के वास्तविक अवसर से वंचित न रह जाए। लेकिन, यह प्रतिबद्धता हमेषा से नहीं थी। इस अवधारणा के विकास का अपना एक इतिहास रहा है जिसकी समझ हम इस इकाई में बनाएंगे। समावेषी षिक्षा से सम्बंधित कुछ नीतिगत दस्तावेजों के कुछ अंषों का विष्लेषण भी इस इकाई में किया जाएगा। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है समावेषी षिक्षा के चिंतन को विद्यालयी स्तर पर उतार पाने का नजरिया। अतः एक समावेषी विद्यालय की संकल्पना क्या हो सकती है, इसके मूर्त एवं अमूर्त पक्षों के बारे में चर्चा की जाएगी। साथ ही, समावेषी षिक्षा को लेकर विद्यालयों की समकालीन स्थिति और चुनातियां क्या हैं, इसकी बात भी यहां की जाएगी।

Enhancing Professional Capacities (EPC) Courses

Code	Course Title		Marks		
			Practicum	Theory	Total
EPC-1	Reading and Reflection on Texts	1st year	10	40	50
EPC-2	Drama and Art in Education	1st year	10	40	50
EPC-3	Critical Understanding of ICT	1st year	10	40	50
EPC-4	Understanding the Self	2nd year	10	40	50

EPC-1
Reading and Reflection on Texts

शिक्षा के साहित्य से तात्पर्य है ऐसे साहित्य से परिचय जो शिक्षा के विभिन्न आयामों पर विशेष प्रकाश डालता हो। वैसा साहित्य जो शिक्षा से संबंधित तमाम मुद्दों को समझने के लिए एक दृष्टिकोण देता हो तथा जिसे पढ़कर हमारी दृष्टि संवेदित होती है। एक शिक्षक के लिए ऐसा साहित्य कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा के साहित्य के माध्यम से प्राप्त होने वाली आलोचनात्मक समझ द्वारा एक शिक्षक विभिन्न शैक्षिक विमर्शों को कहीं बेहतर ढंग से समझ सकता है। अलग–अलग कालखंडों में शिक्षा के स्वरूप एवं उसमें हुए परिवर्तनों को जानना और साथ ही उस दौरान समाज के बदलते नजरिये को समग्रता से समझना भी शिक्षकों के लिए अपरिहार्य है। इनकी छवि विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक रचनाओं में देखी जा सकती है जो अपने समय की शिक्षा व्यवस्था से जुड़े विभिन्न मुद्दों का काव्य, लेखों, कहानियों, व्यंग्य आदि के माध्यम से परिलक्षित करते हैं। ऐसी रचनाएं शिक्षा के स्वरूप में आए प्रमुख बदलावों के विभिन्न पहलुओं को जानने एवं समझने के लिए आज भी प्रासांगिक हैं। ये रचनाएँ आज के शिक्षाशास्त्र की विषयवस्तु के अलग–अलग पहलुओं पर एक विशेष तरह का प्रकाश डालती हैं। इनके द्वारा शिक्षा के दर्शन, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान की आपसी समझ पर हुए प्रभावों को जाना व समझा जा सकता है। इसे जानने और समझने का प्रयास प्रशिक्षुओं की चिन्तन प्रक्रिया को व्यापक करने में सहायक सिद्ध होगा। यह विषय उनके लिए संवेदनाओं के प्रशिक्षण का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस विषय में चार बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहला है 'रचना का काल संदर्भ' जिसका तात्पर्य है रचना के विषयवस्तु/प्रसंग को काल–खण्ड में स्थापित करके समझना; समय के अनुसार शिक्षा के बदलते स्वरूप को समझना; काल–विशेष में शिक्षा से सामाजिक अपेक्षाओं व प्रभावों की समीक्षा करना। दूसरा बिन्दु है 'रचना की मीमांसा' जिससे तात्पर्य है कि किसी साहित्य से शिक्षा के किस पहलू पर प्रकाश पड़ता है, इसे समझना। उदाहरणतः समवय समूह सम्बंध, शिक्षक की प्रकृति, समाज की शिक्षा के ऊपर दृष्टिकोण, बाल मानस, इत्यादि। तीसरा बिन्दु है 'रचना से अनुभूति' जिससे तात्पर्य है कि पाठक के रूप में वह आपकी किन अनुभूतियों अथवा स्मृति संदर्भों को जगाती हैं अर्थात ऐसे प्रसंग जो आपके अनुभवों से मेल खाते हो। चौथा बिन्दु है 'विवेचना की बहुआयामिता' से तात्पर्य है स्वतंत्र विवेचना का हक। यानि, प्रत्येक पाठक अपने अनुसार पढ़े गये रचनाओं का विवेचना करे। किसी भी प्रकार का मानक विवेचना पाठक पर आरोपित न की जाये।

<table>
<tr><th colspan="2">Unit-1</th></tr>
<tr><th>प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य</th><th>Ancient and Medieval Literature</th></tr>
<tr><td>इस इकाई में प्राचीन एवं मध्यकाल के कुछ वैसे साहित्यों का पठन किया जाएगा जो उस समय की षिक्षा को दर्षाते हैं। इस दिषा में, निम्नलिखित साहित्यों को मूल अध्ययन के लिए चुना गया है :

• उपनिषदों से संवाद अंष
• पंचतत्र की कहानियां
• बौद्ध साहित्य से कथाएं (जातक, थेरी एवं थेर गाथा)
• जैन साहित्य से कथाएं
• गुलिंस्ता–बोस्ता से कथाएं एवं अन्य साहित्य

इस इकाई में और भी कई प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्यों को जोड़कर सवंर्धित किया जा सकता है।</td><td>This unit is focused on reading some ancient and medieval literatures which are relevant to understand education of their time. The following literatures are identified as key readings:
• Dialogue from Upanishada
• Stories from Panchtantra
• Stories from Buddhist literature (Jataka, Theri & Ther Gatha)
• Stories from Jain literature
• Stories from Gulinsta-Bosta and other related literature
The unit is flexible in nature. Many more ancient and mediaval literatures can be added to this unit to make it more enriched.</td></tr>
<tr><td colspan="2">इस इकाई में जिन प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्यों का उल्लेख किया गया है, उनसे सिर्फ कुछ चयनित अंषों का ही इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत अध्ययन किया जाएगा जिससे उस काल की षिक्षा को समझने में मदद मिलती है।</td></tr>
</table>

Unit-2	
आधुनिक और समकालीन साहित्य	**Modern and Contemporary Literature**
इस इकाई में वैसे आधुनिक व समकालीन साहित्यों को पढ़ने पर जोर है, जिसमें षिक्षा के मुद्दों को सार्थक तरीके से उठाया गया है। इस इकाई में विभिन्न भाषाओं व सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों से साहित्यों को प्रस्तुत किया गया है। इस दिषा में, निम्नलिखित साहित्यों को मूल अध्ययन के लिए चुना गया है : • बिनोवा भावे की रचना 'षिक्षक' • प्रो. डी. एस. कोठारी द्वारा रचित 'षिक्षा और जीवन मूल्य' • महादेवी वर्मा कृत 'षिक्षा का उद्देष्य' • श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित 'रागदरबारी' के अंष • कृष्ण कुमार द्वारा रचित 'चुड़ी बाज़ार में लड़की' से 'अभिमन्यु की षिक्षा' वाला अंष • प्रो. अनिल सद्गोपाल का लेख 'साक्षरताः राष्ट्रीय ध्येय या शैक्षिक मापदण्ड' • अवधेष प्रीत द्वारा रचित 'तालीम' • तुलसीराम द्वारा रचित 'मुर्दहिया' • डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी का लेख 'एक स्कूल का बयान' • बिरेन्द्र सिंह रावत का लेख 'क्या कहते हैं सवाल' उपरोक्त साहित्यों के अलावा और भी साहित्यों को इस इकाई में जोड़ने की पूरी छूट है।	This unit is related to read some modern and cotemporary literatures which have reaised the issues of education meaningfully. The unit contains literatures from different languages and socio-cultural contexts, so that it will provide an enriched space for reflection. The following literares are identified as key readings • *'Shikshak'* by Binova Bhave • *'Shiksha aur Jeevan Mulya'* by Prof. D.S. Kothari • *'Shiksha ka Uddeshya'* by Mahadevi Verma • Excerpts from *'Ragdarbari'* by Shrilal Shukl • *'Abhimanyu ki Shiksha'* from 'Churi Bazaar mein Ladaki' written by Krishna Kumar • *'Saksharata: Rashtriya Dhyey ya Shaikshik Maapdand'* by Prof. Anil Sadgopal • *'Taleem'* story written by Avdhesh Preet • *'Murdahiya'* written by Tulsiram • *'Ek School ka Bayan'* by Dr. Gyandeo Mani Tripathi • *'Kya kahate hain Savaal'* by Birender Singh Rawat *The development of contemporary literatures is limitless. Therefore, besides these key readings, there is ample space to add many more new contemporary literatures in this unit.*
शिक्षा की समकालीन समझ के नजरिए से यह इकाई विषेष महत्व का है। इसमें जिन साहित्यों को लिया गया है, उनके अध्ययन से षिक्षा और समाज के भिन्न–भिन्न मुद्दों की समझ मिलेगी।	

Unit-3	
स्थानीय साहित्य	**Local Literature (Bhojpuri)**
यह इकाई षिक्षा के मुद्दों से सम्बंधित स्थानीय साहित्यों के पठन पर आधारित है, जो निम्नलिखित हो सकते है : • स्थानीय कथाएं • लोकोक्तियां • लोक गीत • जीवन कथाएं संस्थान अपने स्तर पर इन साहित्यों का संकलन करेगी जिसमें इसके षिक्षक एवं प्रषिक्षुओं की भूमिका होगी।	This unit is focused on collecting and reading local literatures related to education and its issues. The literatures can be : • local stories • folktales • folk songs • life stories *The institution will make a collection of above mentioned literatures at its level with the help of the trainee teachers and faculties. They will search the local literature resources.*
शिक्षक को अपने स्थानीय संस्कृति के प्रति सगज बनाने तथा स्थानीय स्तर के षिक्षायी मुद्दों को अकादमिक रूप से समझने के उद्देष्य से इस इकाई की कल्पना की गई है। इसलिए, यह एक ऐसी इकाई है जिसकी सामग्री को षिक्षकों एवं प्रषिक्षुओं द्वारा स्वयं खोजकर और फिर उनका संकलन करके अध्ययन करना है। इसमे उन तमाम स्थानीय साहित्यों को शामिल करने की सम्भावना है जो समाज में तो मौजूद है लेकिन षिक्षक के चिंतन का विषय नहीं बन पाए हैं।	

EPC-2
Drama and Art in Education

हमारे समाज को प्राचीन काल से ही इसका गहरा बोध है कि मानव की षिक्षा में कला का विषेष स्थान है और बच्चों से तो इसका गहरा संबंध है। प्लेटो ने लिखा है कि ''हमें ऐसे कलाकारों और षिल्पकारों की खोज करते रहना चाहिए जो इस जानकारी के माहिर हैं कि प्रकृति में क्या सुन्दर है। तभी हमारे नवयुवक स्वस्थ वातावरण में रहकर समझेंगे कि जीवन में वह क्या है जो उनके वातावरण को स्वस्थ बनाता है। हमें यह देखना है कि उन्हें बचपन से ही पहचान हो कि क्या सुन्दर है और क्या उचित।.....और इसीलिए षिक्षा का चरण बड़ा निर्णायक है।'' इस प्रकार कला एवं कला शिक्षा शैक्षिक प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है और इसके महत्त्व को अब षिक्षा के हर स्तर पर स्वीकार किया जाने लगा है। इसके बावजूद बिहार या देश के अन्य किसी भाग में इसे व्यवहार में उतारने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया है। आमतौर पर, कला को पाठ्येतर गतिविधि समझा जाता है, वह भी बगैर किसी महत्त्व के, जिसका इस्तेमाल कुछ खास अवसरों पर महज दिखाने भर के लिए होता है। अधिकांश माता–पिता और शिक्षक/शिक्षिका कला और खेल को अध्ययन से अनावश्यक विचलन मानते हैं, मगर शिक्षार्थियों का मन सामान्यतः आकादमिक विषयों के अध्ययन से कहीं ज्यादा इन्हीं दोनों में लगता है। इसके सृजनात्मक या सौंदर्यशास्त्रीय पहलू सदा उपेक्षित रह जाते हैं। यदि देखा जाए तो कला और शिल्प की शिक्षा, शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व के विकास का उपयोगी जरिया हो सकती है। व्यक्तित्व के विकास, सौंदर्यबोध के विकास और प्रवृत्तियों व मूल्यों के निर्माण में कला का प्रत्यक्ष योगदान होता है। शिक्षाशास्त्रीय उद्देश्य से कला, शिल्प और संस्कृति का अनेक तरीके से उपयोग किया जा सकता है– संसाधन के रूप में, माध्यम के रूप में और विकसित किए जा सकने वाले कौशल के रूप में। कलाएँ जहाँ हमारे जीवन और अधिगम को समृद्ध बनाते हैं, वहीं इनका उपयोग शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं को सरल, सुगम, आनन्ददायी और रोचक बनाने में भी किया जा सकता है। इस विषय के विभिन्न इकाइयों के माध्यम से हम नाट्य और कला षिक्षा के बारे में चर्चा करेंगे। नाट्य एक ऐसी विधा है जो षिक्षण को जीवन्त और सरल बना सकती है अतः प्रषिक्षुओं की इसकी सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक समझ पहली इकाई मे दी जाएगी। इसके अलावा अन्य दृष्य कलाओं व षिल्पों को भी समझना तथा षिक्षा में उनके प्रयोग को सुनिष्चित करने पर भी दूसरी एवं तीसरी इकाई में चर्चा की जाएगी। साथ ही यह स्पष्ट करना होगा कि यह एक प्रायोगिक विषय है अतः सिर्फ सिद्धांतों को समझने मात्र से काम नहीं चलेगा बल्कि उनका प्रयोग जरूरी है।

Unit-1	
प्रदर्षन कला के रूप में नाट्य	**Drama as Performing Art**
• नाट्य : अवधारणा की समझ और षिक्षा में इसका महत्व • नाट्य एक षिक्षणषास्त्र के रूप में • नाट्य का आयोजन : तैयारी और संसाधन, ड्रैमेटिक सोसाईटी या नाट्य समूह का निर्माण • नाट्य के स्वरूप : एकल, समूह • नाटक करना : कहानी, संवाद, चरित्र, संकेत, मंच की सजावट, रौषनी, भिन्न–भिन्न स्थितियों का निर्माण करना • भारतीय और क्षेत्रीय नाट्य परम्पराओं का ज्ञान • शिक्षार्थियों में नाट्य कला को प्रोत्साहित करना • नाट्य प्रदर्षन की समीक्षा और आकलन	• Understanding the concept of Drama and its relevance for Education • Drama as a pedagogy • Organizing Drama: preparatory activities and resources, dramatic society • Forms of Drama: Solo, group • Playing Drama: Story, dialogue, characters, symbols, decoration of floor, lighting, creating different situations. • Knowledge of Indian and regional drama traditions • Appreciating art of Drama in learners • Review and assessment of performing art 'Drama'

Unit-2	
दृष्य कला एवं षिल्प	**Visual Arts and Crafts**
• दृष्य कला एवं षिल्प की समझ तथा षिक्षा में उनका महत्व • दृष्य कला एवं षिल्प एक षिक्षणषास्त्र के रूप में • दृष्य कला एवं षिल्प : विविध स्वरूप, बुनियादी संसाधन तथा उनकी उपयोगिता • क्षेत्रीय लोक कलाओं एवं षिल्प परम्पराओं का ज्ञान • समकालीन दृष्य कलाओं, षिल्पों एवं कलाकारों का ज्ञान • शिक्षार्थियों में दृष्य कला एवं षिल्प को प्रोत्साहित करना • दृष्य कला एवं षिल्प की समीक्षा और आकलन	• Understanding visual Arts and Crafts with their relevance for Education. • Visual Arts and Crafts as pedagogy. • Visual Arts and Crafts: different forms, basic resources and their use. • Knowledge of Indian Craft Traditions and regional folk arts. • Knowledge of Indian Contemporary Visual Arts & Crafts and Artists. • Appreciating visual arts and crafts in learners. • Review and assessment of visual arts and crafts.

Unit-3	
कला–आधारित अधिगम और षिक्षक की भूमिका	**Art-aided Learning and role of a teacher**
• नाट्य कला को विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ जुड़ाव • दृष्य कला एंव षिल्प को विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ जुड़ाव • विद्यालय और कक्षाकक्ष को कला–आधारित अधिगम के जगह के रूप में देखना • कला आधारित अधिगम के लिए षिक्षक की तैयारी	• Integrating Drama with School Curriculum • Integrating Arts and Crafts with School Curriculum • Visualizing School and Classroom as a space for art aided learning • Preparation of teacher for art aided learning

References

Aanderson, T. And Milbrandet,M.K. (2004). “Art For Life : Authentic Instruction In Art”, Mcgraw Hill.

Armstrong, M. (1980). The practice of art and the growth of understanding. In Closely observed children: The diary of a primary classroom (pp. 131–170). Writers & Readers.

Davis, J.H. (2008). Why our schools need the arts. New York: Teachers College Press.

Heathcote, D., & Bolton, G. (1994). Drama for learning: Dorothy Heathcote’s mantle of the expert approach to education. Portsmouth. NH: Heinemann Press.

Jeswani, K. K. (1966). Art in Education. Atma Ram and Sons, Delhi.

Jeswani, K. K. (1965). Teaching and Appreciation of Art In Schools, . Atma Ram and Sons, Delhi, 1965.

John, B., Yogin, C., & Chawla, R. (2007). Playing for real: Using drama in the classroom. Macmillan.

Lakhyani,Susmita (2012). “Art Creativity and Art Education”, Lap Lambert Academic Publishing, ISBN-978-3-8473-7821-1.

Lowenfeld, Victor (1952). Creative and Mental Growth. Macmillan Company, New York.

Mago, P.N. (2000). Contemporary Art in India - A Perspective. National Book Trust, New Delhi, India. 2000.

Prasad, Devi (1998). Art as the basis of education. National Book Trust. Retrieved from http://www.vidyaonline.net/list.php?pageNum_books=2&totalRows_books=62&l2=b1%20&l1=b1%20&l3=b1tp

EPC-3
Critical Understanding of ICT

वर्तमान समय में सूचना एवं संचार तकनीकी हमारे सामाजिक अंतःक्रिया का एक आवश्यक अंग बन चुकी है। शिक्षा में तकनीकी का इस्तेमाल कोई नई बात नहीं है। संचार प्रौद्योगिकी के विभिन्न अन्वेषणों के द्वारा शिक्षा व्यवस्था में क्रान्तिकारी बदलाव लाये जा रहे हैं। आज अनेक प्रकार के सूचना व संचार तकनीक समर्थित शिक्षा व अध्यापन विधियों का प्रयोग शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान को सवंर्द्धित करने के लिये किया जा रहा है। इन तकनीकों के कारण शिक्षा में हो रहे नवाचार के साथ–साथ सूदूर क्षेत्रों तक शिक्षा का प्रसार भी हो रहा है। सूचना व संचार तकनीक के विभिन्न माध्यमों द्वारा सूचनाओं के संग्रहण, संचयन, सुगम उपयोग तथा तेजी से आदान–प्रदान की सुविधा है। शिक्षा के क्षेत्र में नई संचार तकनीकों के उपयोग ने शिक्षक की भूमिका को सवंर्धित, शिक्षण में अद्यतन ज्ञान के समावेशन, बच्चों में प्रभावकारी अधिगम को उत्साहित करने का काम किया है। साथ ही साथ, तकनीकी के प्रयोग ने शिक्षक के अन्य कार्यों जैसे मूल्यांकन, रिकार्डों के सुगम संधारण, अभिभावकों से सम्पर्क, आदि को सरल एवं प्रभावकारी बनाया जा सकता है। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के लिए भी सूचना व संचार तकनीक का विषेष महत्त्व है। एक अध्यापक इस तकनीक के कुशल प्रयोग द्वारा अपने कार्यों को व्यवस्थित तथा अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकता है। आई.सी.टी. तकनीकी का शिक्षण अधिगम कार्यों में उपयोग के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षकों में इसके प्रयोग से शिक्षण कौशल की क्षमता विकसित की जाये। इस विषयपत्र के विषयवस्तु के माध्यम से प्रशिक्षु नवीन आई.सी.टी. संसाधनों को शैक्षिक प्रक्रियाओं में प्रयोग करने की समझ विकसित कर पाएंगे। यहां यह स्पष्ट करना है कि यह मूलतः एक प्रायोगिक विषय है अतः इसके लिए सैद्धांतिक समझ के साथ–साथ प्रयोगों को करना बहुत महत्वपूर्ण है जिसकी अपेक्षा प्रषिक्षुओं से है।

Unit-1	
सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.) से परिचय	**Introduction to Information & Communication Technology (ICT)**
• सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.) : अवधारणा एवं षिक्षा के लिए महत्व • भारत में विद्यालयी षिक्षा के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी की राष्ट्रीय नीति के लक्ष्यों एवं उद्देष्यों की समझ • आई.सी.टी. संसाधनों के प्रकार तथा विद्यालय में उनकी उपयोगिता : ऑडियो–विजुअल (श्रव्य–दृश्य) एवं कम्प्यूटर मीडिया • विद्यालयों में आई.सी.टी. को समावेषित करने की चुनौतियां : बिहार के विद्यालयों की स्थिति पर विषेष ध्यान देते हुए	• Concepts of ICT and its relevance for education • Aims and Objectives of National Policy on Information and Communication Technology (ICT) in School Education in India • Types of ICT resources and their utility in schools: audio-visual and computer media • Challenges of Integrating ICT in School; the scenario of schools in Bihar

Unit-2	
ऑडियो–विजुअल एवं कम्प्यूटर मीडिया की समझ	**Understanding Audio-Visual and Computer media**
• रेडियो एवं ऑडियो मीडिया का उपयोग : संवाद लिखना, कहानी वाचन, गीत–संगीत, आदि • षिक्षा में टेलिविज़न एवं विडियो की उपयोगिता • षिक्षा में समाचार पत्र की उपयोगिता • विविध प्रकार के प्रोजेक्टरों को चलाने का ज्ञान • कम्प्यूटर चलाने का ज्ञान : चालू व बन्द करना, इसके विभिन्न हार्डवेयर के कार्य की सामान्य जानकारी; कम्प्यूटर के डेस्कटॉप और मेमोरी के कार्यों की समान्य जानकारी; वर्ड प्रोसेसिंग, पावर प्वाईंट का प्रयोग, एक्सेल, स्प्रेडषीट, पेन्ट; फाईल, डॉक्यूमेंट, सॉफ्ट कॉपी, आदि का अर्थ	• Use of radio and audio media: Script writing, storytelling, songs, etc. • Use of television and video in education • Use of newspaper in education. • Functional knowledge of operating projectors of various types • Functional knowledge of operating computers: on/off, simple knowledge of hardwares; simple knowledge of the function of desktop and

एवं कार्य • कम्प्यूटर एक 'लर्निंग टूल' के रूप में : अपना ई–मेल आई.डी. बनाना, ई–मेल भेजना, इन्टरनेट पर उपयोगी सूचनाओं की खोज करने के तरीके को समझना तथा उसका उपयोग करना, डॉउनलोडिंग सीखना, ऑनलाईन फार्म भरना, आदि सीखना; ई–लर्निंग, मोबाईल–लर्निंग, ऑनलाईन–लर्निंग, मैसीभ ओपेन ऑनलाईन कोर्सेज, वीक्कीपिडिया • शैक्षिक साफ्टवेयरों को षिक्षण–अधिगम के दौरान प्रयोग में लाने की क्षमता का विकास	memory; word processing, use of power point, excel, spreadsheet, paint; meaning of file, document, soft copy, etc. • Computer as a learning tool: making own email ID, sending emails; Effective browsing of the internet for selecting relevant information; Downloading relevant material, online forms filling; general Introduction to E-learning, Mobile-learning, Wikipedia, On-line learning, Massive Open Online Courses • Competencies in handling educational softwares in teaching-learning process

Unit-3	
आई.सी.टी. समर्थित कक्षा की संकल्पना	**Visualizing ICT-Supported classroom**
• लर्निंग प्लान को बनाने में उपयोग • ऑडियो–विजुअल सामग्रियों के प्रयोग से कक्षा में सीखने को रोचक व सहज बनाना • कक्षाषिक्षण के लिए पी.पी.टी. स्लाईड्स बनाना और उनका प्रेजेन्टेशन करना • विषयसम्बंधी साफ्टवेयरों का प्रयोग करना • विद्यार्थियों से आई.सी.टी. का प्रयोग करवाते हुए प्रदत्त कार्य या प्रोजक्ट बनवाना • आई.सी.टी. की मदद से ग्रुप लर्निंग करना : वेब ग्रुप बनाना, ब्लॉग बनाना, सोषल नेटवर्किंग साईट्स, मेसेजिंग ऐप्प, आदि • अलग–अलग विषयों में किन–किन प्रकार के आई.सी.टी. सामग्रियां विषेष मदद कर सकती हैं, इसकी समझ • आई.सी.टी. के नवाचारी प्रयोगो से सम्बंधित केस स्टडी	• Utility in preparing learning plans • Use of audio-visual materials for making classroom learning more interesting and easy • Developing PPT slide show for classroom use • Generating subject-related demonstrations using computer software • Enabling students to plan and execute projects (using computer based research) • Group learning through ICT: Participation in web groups, creation of 'blogs', social networking sites, common messaging apps • Understanding the subject specific utility of ICT materials • Innovative usage of technology: Some case studies

References

Centre for Educational Research and Innovation. (2007). Open Educational Resources – Conceptual Issues. In Giving Knowledge for Free: The Emergence of Educational Resources. OECD.

Cheng, I., Safont, L.V. & Basu, A. (2009). *Multimedia in Education: Adaptive Learning and Testing*. New Jersey: World Scientific Pub Co Inc.

Collins, J., Hammond, M. & Wellington, J.J. (1997). *Teaching and Learning with Multimedia.* London: Routledge.

Dale, E. (1969). *Audiovisual Methods in Teaching,* (Edn 3). New York: Dryden Press. D'Antoni, S. & Savage, C. (eds) (2009). *Open Educational Resources: Conversations in Cyberspace*. New York: United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.

Doering, A.&. (2009). Teaching with Instructional Software. In M. R. Doering (Ed.), Integrating Educational Technology into Teaching (pp. 73-108). Upper Saddle River, NJ: Pearson Education.

Douglas Comer (2007). The Internet Book: Everything You Need to Know about Computer Networking and How the Internet Works, Prentice Hall, 2007

Free Software, Free Society: Selected Essays of Richard M. Stallman , digital book available on www.notabug.com/2002/rms-essays.pdf

Goswamy, B. P. (2006). *Shaikshik Takniki Evam Kaksha-Kaksh Prabandh*. Delhi: Swati Publication.

Information and Communication Technologies in Schools - A Handbook for Teachers or How ICT can create

New Open Learning Environments www.unesdoc.unesco.org/images/0013/001390/139028e.pdf

Information and Communication Technology Policy in School Education-2010 www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Revise_ICT_School.pdf

James, K.L. (2003). The Internet: A User's Guide. Prentice Hall of India Pvt. Ltd: New Delhi

Jonassen, D.H. (ed) (2003). *Learning to Solve Problems with Technology: A Constructivist Perspective*, (Edn 2). California: Merrill.

Kanvaria, V. K. (2014). A comprehension on educational technology and ICT for education. New Delhi: GBO. (Retrieved from http://www.amazon.in/Comprehension- Educational-Technology-ICT-Education-ebook/dp/B00VV8KYZ6/ref=pd_rhf_se_p_img_1)

Lockyer, L. B. (2009). *Handbook of Research on Learning Design and Learning Objects: Issues, Applications, and Technologies.* Hershey: Information Science Reference.

MHRD. (2012). National policy on information and communication technology (ICT) in school education. MHRD, Government of India.

Mishra, S.(Ed.) (2009). STRIDE Hand Book 08: E-learning. IGNOU : New Delhi. Available at http://webserver.ignou.ac.in/institute/STRIDE_Hb8_webCD/STRIDE_Hb8_index.html

National Mission in Education through ICT: www.iitg.ernet.in/cet/MissionDocument_20Feb09.pdf

Orit Hazzanet. al. (2011) Guide to Teaching Computer Science: An Activity-Based Approach, Springer, London.

Schank, R.C. (2001). Virtual Learning. New Delhi: McGraw Hill.

Singh, Y.K., Nath, Ruchika (2005). Teaching of Computer Science New Delhi: APH Publishing House.

Song, H. &. (2010). Handbook of Research on Human Performance and Instructional Technology. Hershey: Information Science Reference

UNESCO (2015). Copyright. In Open Access for Researchers: Intellectual Property Rights. Paris: UNESCO

EPC-4

Understanding the Self

समकालीन षिक्षायी विमर्ष में एक नए विषय ने विषेष स्थान बनाया है, वह है– स्व की अवधारणा जिसे अध्यापक की अस्मिता से जोड़कर देखा जा रहा है। इस विषय के आने के पीछे यह समझ है कि अध्यापक अपने विद्यालय में जिस प्रकार का षिक्षण करते हैं उसमें उनकी अपनी मान्यताओं एवं धारणाओं की विषेष भूमिका होती है जो अध्यापक के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के अनुभव पर आधारित होते हैं। इस प्रकार, अध्यापकों के षिक्षण की समझ और उनके जीवन के मध्य अटूट जुड़ाव है। अतः यदि विद्यालयों के लिए सक्षम अध्यापकों या षिक्षकों को निर्मित करना है तो अध्यापक की अस्मिता को महत्व देना बहुत महत्वपूर्ण है। इस सोंच के साथ समकालीन अध्यापक षिक्षा कार्यक्रमों में अध्यापक के अस्मिता के विमर्ष को शामिल किया गया है। इस विषय पत्र की मान्यता है कि एक 'व्यक्ति' से 'षिक्षक या षिक्षिका' बनने की प्रक्रिया स्वयं में कई परिवर्तनों को लिये हुए है जिसकी समझ प्रषिक्षुओं को होनी चाहिए ताकि वे अपने बदलती अस्मिता को आत्मसात कर सकें तथा इसके अनुरूप अपनी सोंच एवं धारणा में बदलाव ला सकें। अक्सर षिक्षकों द्वारा भी अपनी अस्मिता की अनदेखी की जाती रही है क्योंकि वे इसके प्रति सजग नहीं हैं, जिसके कारण वे एक सक्रिय अभिकर्ता के रूप में तैयार नहीं हो पाते हैं। आज, समाज में षिक्षक की प्रतिष्ठा का जो ह्रास हो रहा है उसके पीछे भी षिक्षक की अस्मिता की उपेक्षा एक बड़ा कारण है। अतः आवष्यकता है कि षिक्षकों की अस्मिता को गहराई से समझा जाए। षिक्षकों की अस्मिता को लेकर शोधों का एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य है जिसमें षिक्षक के जीवन, उसकी दिनचर्या, उसमें होनवाले बदलावों एवं उसको प्रभावित करनेवाले उन तमाम कारकों का अध्ययन किया जा रहा है जिससे कि षिक्षक के कार्य को समझने की दिषा मिल सके। साथ में, यह इसलिए भी विषेष है क्योंकि भारतीय संदर्भ में षिक्षकों की अस्मिता में समयानुसार एक बड़ा बदलाव आया है जो कि कई प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव है। अतः हमारे देष या राज्य में षिक्षक जिस प्रकार से अपने कार्य को समझते रहे हैं और समाज षिक्षकों के कार्य को जिस नजरिए से देखती रही है, उसमें कई परिवर्तन हुए है। इसका एक उदाहरण है षिक्षक का 'गुरू' से 'प्रोफेषल' बनने तक की यात्रा, जिसका विष्लेषण इस विषयपत्र में किया जाएगा। यहाँ, अध्यापक की अस्मिता की संकल्पना को समझने के लिऐ मूलतः इसके तीन प्रमुख आयाम– वैयक्तिक, सामाजिक एवं वृत्तिक पर ध्यान दिया गया है। ये तीनों आयाम वास्तविक रूप में एक–दूसरे से अंतर्सम्बंधित एवं एक दूसरे से अति प्रभावित होते हैं। इनमें से किसी भी अस्मिता की संकल्पना हम एकांकी रूप से नहीं कर सकते हैं। अतः यदि अध्यापक को एक सक्रिय अभिकर्ता के रूप में तैयार करना है तो यह आवष्यक है कि उसकी अस्मिता के महत्व को समझा जाए तथा वृत्तिक विकास के संदर्भ में उसकी स्वयत्तता को स्थापित किया जाए, जिसकी समझ इस विषय से प्राप्त की जाएगी।

Unit-1	
स्व का बोध और इसका अस्मिता से संबंध	**Understanding Self and its relation to Identity**
• स्व की अवधारणा की समझ और अस्मिता के साथ इसके संबंध; • व्यक्तिगत, सामाजिक तथा (वृतिक)पेषेवर स्व का प्रत्यय; अपवत्य (अनेक) अस्मिता की समझः व्यक्ति के संदर्भ में एवं वैयक्तिक विष्वास का बोध • स्व,एवं अस्मिता के निमार्ण में स्वयं अपने समाजिकरण प्रक्रियाओं का प्रभाव • सैद्धांतिक परियेक्षणः षिक्षक स्व समकालीन वार्त्तालाप, एक आदर्ष षिक्षक के विचार • भारतीय परिदृष्य में षिक्षकों के स्व में परिवर्त्तनः गुरू से प्रोफेसनल तक।	• Understanding the concept of self and its relation with identity; Concept of personal, Social and professional Self; Understating of multiple identities: the context of the person understanding personal beliefs. • The impact of one's own socialization processes on the making of self and identity. • Thereotical perspectives: Teachers' self-contemporary discourse, Notion of an ideal teacher • Transition of teachers' self in Indian scenario: From Guru to Professional.

Unit-2	
शिक्षकों में स्व का निर्माण	**Consturction of 'Self' in Teachers**
• छात्र, व्यस्क और छात्राध्यापक के रूप में, अपने बदलते अस्मिता की जागरूकता • एक षिक्षक बनने में अपनी स्वयं की आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करना तथा अस्मिता के निमार्ण में इसकी भूमिका। • शिक्षकों के स्व और अस्मिता को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकः सामाजिक सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक संदर्भः षिक्षक षिक्षा कार्यक्रम की भूमिका। • षिक्षको के वृतांत(चरित्र) को उत्पन्न करना और उसमें प्रतिबिम्बित करना । • ज्ञान और वृतिक नीतिषास्त्र का अभ्यास। • शिक्षकों के स्वषासनः अस्मिता विकास का विकास	• Awareness of one's own shifting identities as student adult and student-teacher. • Reflection on one's own aspirations in becoming a teacher and its role in identity formation. • Major factors affecting teachers' self and identity: socio-cultural, political, economical context: Role of Teacher Education Programmes. • Creating case narratives of teachers and reflecting on them. • Knowledge and practice of professional ethics. • Teacher's autonomy : Significance of an identity development. • Visualizing an enriching space for the development of teacher's identity.

Unit-3	
	Teachers' Self and Leadership Quality
नेतृत्व का प्रत्ययः मूलभूत सिद्धांत और स्कूल में निर्णय करना।	• Concept of Leadership: Basic theories and decision making in schools. • Idea of Democratic and Distributive leadership in the schools; effective leadership skills. • Leadership style and its impact on Teachers' self and role in school.
कोई भी विद्यालय बिना कुषल नेतृत्व के उन्नति नहीं कर सकता। हर दिन विद्यालय में कई गतिविधियों से सम्बंधित निर्णय लेने होते हैं और कई समस्याओं का समाधान भी करना होता है। इन सभी परिस्थितियों में कुषल नेतृत्व करनेवाले व्यक्तियों की आवष्यकता होती है जिनमें प्रबंधन की समझ और उसके क्रियांवयन की क्षमता हो। इस संदर्भ में, षिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि उसे हर रोज बहुत सारे गतिविधियों का नेतृत्व करना होता है। लेकिन, इस इकाई में किसी एक षिक्षक या षिक्षिका में नेतृत्व गुण के विकास पर केवल जोर नहीं है बल्कि विद्यालय की सम्पूर्ण संस्कृति में कुशल नेतृत्व के गुण को कैसे लाया जाए, इसकी विषेष चर्चा है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि नए विमर्षों के अनुसार, नेतृत्व क्षमता हर व्यक्ति में होती है और नेतृत्व करने के अवसर से उस व्यक्ति के व्यक्तित्व में और विकास होता है। अतः विद्यालय के अलग–अलग क्षेत्रों में नेतृत्व के कार्य का किस प्रकार से प्रबंधन करें कि सभी को अपने नेतृत्व क्षमता के प्रयोग का मौका मिल सके और साथ ही विद्यालय का प्रबंधन सहज और सरल बन सके। इन सब बातों पर इस इकाई में विस्तार से चर्चा की जाएगी।	

Suggested Readings:

Andy Hargreaves (2000). Four Ages of Professionalism and Professional Learning. Teacher and Teaching: History and Practice, Vol. 6, No.2 pp 151-182

Batra, P. (2005). Voice and agency of teachers: Missing link in national curriculum framework 2005. Economic and Political Weekly, 4347–4356.

Beijaard, D, Meijer, P.C. & Verloop, N. (2004). Reconsidering research on teachers' professional identity. Elsevier: Teaching and Teacher Education, 20, pp. 107-128

Korthagen, Fred A. J. & Kessels Jos P.A.M. (1999). Linking Theory and Practice: Changing the Pedagogy of Teacher Education. Educational Researcher, Vol. 28, No. 4, pp. 4-17

Prawat, Richard S. (1992). Teachers' Beliefs about Teaching and Learning: A Constructivist Perspective. American Journal of Education, Vol. 100, No.3, pp.354-395

Courses related to Subject and Pedagogy

Course Code	Course Title		Marks		
			Internal	External	Total
C-5	Understanding Disciplines and Subjects	1st year	10	40	50

यह विषयपत्र प्रषिक्षुओं को षिक्षण के लिए तैयार करने में आधार का कार्य करेंगें जिसमें प्रषिक्षुओं को अपने द्वारा चुने गए दो षिक्षण विषयों के स्कूली पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करना अनिवार्य होगा। इस विषयपत्र को रखने के पीछे दो प्रमुख उद्देष्य हैं। पहला यह कि प्रषिक्षुओं में उन स्कूली विषयों के ज्ञान को मजबूत करना, जिनके भावी षिक्षक वे बननेवाले हैं। दूसरा यह कि अपने द्वारा षिक्षण किए जानेवाले विषय के अद्यतन ज्ञान से उनको अवगत कराना क्योंकि उन्होंने पहले जब उस विषय को पढ़ा होगा और आज उस विषय में जो नए ज्ञान जोड़े गये हैं, उनके बीच कई अन्तर आ चुके होंगे। इस विषयपत्र के अंतर्गत प्रषिक्षु विषयों की पाठ्यचर्या को समझेंगे और साथ में उनसे सम्बंधित माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के पाठ्यपुस्तकों से महत्वपूर्ण अवधारणाओं का अध्ययन करेंगें। इसके लिए बिहार बोर्ड अथवा सी.बी.एस.ई बोर्ड मे चलने वाली पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों (एस.सी.ई.आर.टी./एन.सी.ई.आर.टी.) को लिया जा सकता है।

Course Code	Course Title		Marks		
			Internal	External	Total
C-7a	Pedagogy of School Subject- Part I	1st year	10	40	50
C-7b	Pedagogy of School Subject- Part II	2nd year	10	40	50

Social Sciences		Sciences	
C-7a	**C-7b**	**C-7a**	**C7b**
Social Science ***Stream based Pedagogy***	History	Science ***Stream based Pedagogy***	Physics
	Geography		Chemistry
	Civics		Biology
	Economics		Mathematics
	Home Science		Home Science

Commerce	
C-7a	**C-7b**
Accountancy	Business Studies

Languages			
C-7b			**C-7a**
Hindi	English	Sanskrit	Social Science ***Stream based Pedagogy***
Maithili	Angika	Bengali	
Urdu	Arabic	Persian	

Stream: Social Sceinces

Aims :

- To develop an understanding of the nature of Social Sciences, both of individual disciplines comprising Social Sciences, and also of Social Sciences as an integrated/ interdisciplinary area of study.
- To acquire a conceptual understanding of the processes of teaching and learning Social Sciences;
- To enable student teachers examine the prevailing pedagogical practices in classrooms critically and to reflect on the desired changes.
- To acquire basic knowledge and skills to analyse and transact the Social Sciences curriculum effectively following wide-ranging teaching learning strategies in order to make it enjoyable and relevant for life.
- To sensitise and equip student teachers to handle social issues and concerns in a responsible manner, e.g., preservation of the environment, disaster management, promoting inclusive education, preventing social exclusion of children coming from socially and economically deprived backgrounds, and saving fast depleting natural resources (water, minerals, fossil fuels etc.).

PC: Pedagogy of Social Sciences

Unit-1	The Context of Social Sciences

- Distinguishing between Natural and Social Sciences
- Social Sciences: Concept of Social Science and Social Studies and major Social Sciences disciplines in Schools; Cross Cultural Perspectives and Issues in Social Science
- Aims and objectives of teaching Social Science at secondary level
- Social Sciences: Uniqueness of disciplines I interdisciplinarity; multiple perspectives/plurality of approaches for constructing explanations and arguments.

Unit-2	Teaching-Learning Resources in Social Sciences

- People as resource: The significance of oral data.
- Types of Primary and Secondary Sources: Data from field, textual materials, journals, magazines, newspapers, etc.
- Using the library for secondary sources and reference material, such as dictionaries and encyclopaedias.
- Various teaching aids: Using atlas as a resource for Social Sciences; maps, diagrams, globe, charts, models, graphs, Audio-visual aids, CD-Rom, multimedia, internet.
- Importance of excursion in Social Sciences
- Learning Plan for Social Sciences: Nature and Structure

Unit-3	Social Sciences Curriculum and Textbooks for Schools in India

- Curriculum development process: National and State levels.
- Studying the Social Sciences syllabus – aims and objectives, content 46 sys46ing46on and presentation of any State Board and CBSE for different stages of school education.
- Analysing textbooks in Social Sciences in the light of the syllabus and from the perspective of the child (Textbooks of the same class may be taken up for all subjects in Social Sciences)

Unit-4	Assessment for Learning in Social Sciences

- Characteristics of Assessment in Social Sciences: Types of questions best suited for examining/assessing/understanding the different aspect of Social Sciences; Questions for testing quantitative skills, Questions for testing qualitative analysis; Open-ended questions

- Open-book tests: Strengths and limitations
- Evaluating answers: What to look for? Assessing projects: What to look for?
- Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) in Social Sciences.
- Analysing question papers of any State Board/CBSE and NCERT's textbooks in the light of the subject specific requirements in terms of understanding and skills.

Unit-5	Inter-Disciplinarity in Social Sciences

- Geography and Economics: Transport and communication in a region – assessing current position with reference to development needs
- History and Civics: Socio-political systems
- Economics and History: Agrarian change in India; Industrialisation in India
- History and Geography: Migration of people in a particular region—past and present trends
- Civics and Geography: Sharing resources between regions/states and nations (e.g. water)
- Economics and Civics: Family budget and impact of change in prices of essential commodities.

Suggested Readings:

Batra, P. (Ed 2010). Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges. Sage Publications India Pvt. Ltd. New Delhi.

Bining, A.C. &Bining, D.H.(1952), Teaching of social studies in secondary schools, Tata McGraw Hill Publishing Co. Ltd. Bombay.

Crotty, M., (1998), The foundations of social research: Meaning and perspective in the research process, London: Sage Publication.

Edgar, B.W. &Stanely (1958), Teaching social studies in high school, Heath and company, Boston D.C.

Gallanvan&Kottler, Ellen (2008), Secrets to success for social studies teachers, Crowin Press, Sage Publication, Thousand Oaks, CA 91320.

George, A., M. &Madan, A. (2009). Teaching Social Science in Schools. Sage Publications India Pvt. Ltd. New Delhi.

Hamm, B. (1992).Europe – A Challenge to the Social Sciences. International Social Science Journal (vol. 44).

Haralambos, M. (1980). Sociology Themes and Perspectives. New York. O.U.P.

Haydn Terry,Arthur James and Hunt Martin. (2002),Learning to Teach History in the secondary school : A companion to school experience, Routledge, Falmer, (Taylor and Francis group), London, New York.

Kirkpatrick, Ecron, (1997). Foundation of Political Science: Research, Methods and Scope, New York, The free press.

Kochhar, S.K. (1985), Methods and Techniques for teaching History, Sterling Publishers Pvt. Ltd, New Delhi.

Kumar, Sandeep (2013).Teaching of Social Science, Project Report, University of Delhi, Delhi.

Mayor, F. (1992). The role of the Social Sciences in a changing Europe. International Social Science Journal (vol. 44).

Misra, Salil and Ranjan, Ashish (2012).Teaching of Social Sciences: History,Context and Challenges in VandanaSaxena (ed.),Nurturing the Expert Within, Pearson, New Delhi

NCERT (2006). Position Paper by National Focus Group on Teaching of Social Sciences. N.C.E.R.T. New Delhi

Popper, Karl. (1971). The Open Society and its Enemies. Princeton University Press.

UNESCO (2013). World Social Science Report.

Wagner, P. (1999). The Twentieth Century – the Century of the Social Sciences? World Social Science Report.

Wallerstein, I, et al., (1996). Open The Social Sciences: Report of the Gulbenkian commission on the Restructuring of the Social Sciences. Vistaar Publications, New Delhi.

Webb,Keith (1995). An Introduction to problems in the philosophy of social sciences, Pinter, London, New York.

Winch,Peter (1958).The idea of a Social Science and its relation to Philosophy Routledge and Kegan Paul, London, New York: Humanities Press.

Zevin, J., (2000), Social studies for the twenty first century, Lawrence Erilbaum Associates Publishers, London.

PC: Pedagogy of Geography

Unit-1	Geography Education: Perspective and Development

- Meaning, nature and Importance of Geography .
- Reflecting on the aims and objectives of teaching Geography.
- Geography and Human beings: Sustainability and cultivation of organic relationship.
- Relationship of Geography with other social and natural science subjects.
- Basic Principles and Approaches for the construction and thematic organization of Geography curriculum at secondary level.

Unit-2	Developing Skills in Geography

Observation, recording and interpretation of physical and social features and phenomena; Reading and interpreting geographical information through tables, figures, diagrams, photographs; Use of Globe; Map reading and interpreting using scale (distance), direction, symbols, point, line and area; Visual-to-verbal and verbal-to-visual transformation leading to mental mapping; Identifying, constructing and asking geographical questions; Developing and gathering relevant information and data and 48 sys48ing them to answer geographical questions and offering explanations and interpretations of their findings; applying acquired knowledge and skills for understanding the wider world and taking personal decisions; taking up activities to study environmental degradation in the local area and its preservation methods; studying any disaster involving all factors at the local/global levels; Importance of excursion for developing skills in Geography

Unit-3	Pedagogy and Assessment in Geography

- Methods: Questioning; Collaborative strategies; Games, simulations and role plays; Problem-solving and decision-making; Interactive verbal learning; Experiential learning through activities, experiments; Investigative field visits based on students' own interests with teacher's support as facilitator; Engagement with 'places' at an emotional or sensory level using art, poetry and literature.
- Techniques: Using textbooks and atlas as a part of oral lessons, non-oral working lessons; using medium and large scale maps; using pictures, photographs, satellite imageries and aerial photographs; using audio-visual aids, CDs, multimedia and internet; case study approach.
- Learning Plan for Geography: Nature and Structure
- Evaluation & Assessment Modes: formative-summative evaluation, Continuous and Comprehensive Evaluation Programme, Self-assessment, Peer assessment, Group assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' portfolio.

Suggested Readings:

Armstrong, D. and T. V. Savage (1994) Secondary education, Macmillan, New York.

Arora & Awasthy (2003), Political theory, Haranand Publication Pvt. Ltd. New Delhi.

Digumarti B.R. & Basha S.A., Methods of Teaching Geography, Discovery Publishing House, N. Delhi.

Dubey, S.K., Advanced Geography teaching, Book Enclave, Jaipur.

Ellis, A. K. (1995), Teaching and learning elementary social studies, Boston: Allyn and Bacon.

Hunt & Metcalf (1968), Teaching high school social studies, Harper & Row Publishers, New York, London.

Hussain Majid, Ed. Methodology of Geography

Keith, Webb (1995) An Introduction to problems in the Philosophy of Social Sciences,Pub.- Pinter, London, New York.

Kochhar, S.K.(1985), Methods and Techniques for teaching, Sterling Publishers Pvt. Ltd, New Delhi.

Martorella, Peter H. (1996), Teaching social studies in middle and secondary schools, Englwood Cliffs, N. J: Prentice Hall.

Nachmias, D.,Nachmias, C. F.(1996), Research methods in social science, St. Martin's Press, Inc, New York.

Negi Vishal, New Methods of Teaching Geography, Cybertech Publications New Delhi.

Philip, C. (1963). The Teaching of Geography, London: George Philip & Sons Ltd., 1963.

Rai, B. C., Teaching of Geography, Prakashan Kendra, Lucknow.

Savage, Tom V. and Armstrong, David G. (1992) Effective teaching in elementary social studies, Macmillan Publishing Co., New York

Shaida, B.D. and Shaida A.K.(1983), Teaching social science, Arya Book Depot, New Delhi.

UNESCO. Source Book for Geography Teaching, Long-mans.

Winch, Peter (1958), The Idea of a Social Science and its relation to Philosophy by, Pub.- Routledge and Kegan Paul, London, New York: Humanities Press.

Zaidi, S.M.; Modern Teaching of Geography, Anmol Publication, N. Delhi.

Zevin,J.,(2000), Social studies for the twenty first century, Lawrence Erilbaum Associates Publishers, London.

PC: Pedagogy of History

Unit-1	History: Principles and Practices
• Understanding history: Conceptual basis of history as a discipline, historical sources, objectivity and truth. • Philosophy of history- Speculative, Analytic, The end of history- the post modernist challenge. • Need and importance of history at school level. • Correlation of History with other social and natural sciences. • Basic Principles and Approaches for the construction and thematic organization of History curriculum at secondary level	

Unit-2	Developing Skills in History
Observation of skills relating to primary and secondary data; Observing coins, inscriptions (if available), the material remains of the past and visuals; Helping children to read passages from primary sources; Thinking about what all these sources might or might not reveal; Learning to analyse critically and to argue; Observing how arguments have been made in the standard secondary sources and how these muster facts and evidences; Helping children to develop oral and written expression; Importance of excursion in developing skills in History	

Unit-3	Pedagogy and Assessment in History
• Historical Method: Evidence, facts, arguments, categories and perspective; Distinctions between fact and opinion and between opinion, bias and perspective; Evidence-based History teaching; primary sources and the construction of History; Thinking in terms of problems for analysis in History. • Pedagogical Concerns Regarding School History: Interactive, constructivist and critical pedagogies in History; Going beyond the textbook; Getting children to craft little nuggets of History from primary sources; • Learning Plan for History: Nature and Structure • Evaluation & Assessment Modes: Formative-Summative Evaluation, Continuous and Comprehensive Evaluation Programme, Self-assessment, Peer assessment, Group assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' portfolio.	

Suggested Readings:

Arthur, James and Phillips,Robert (2004),Issues in History Teaching, Routledge Falmer ,London

Bhasin,Kamla (1994).What is Patriarchy?Kali for Women,New Delhi

Carr, E. H. (1961). What is History, University of Cambridge and Penguin, India. (Also available in Hindi as Itihaaskyahai Published by McMillan)

Das,Veena (1989). Subaltern as Perspective in Ranajit Guha(ed.)Subaltern Studies No.6 Writings on South Asian History and Society,Oxford University Press,London

Gallanvan&Kottler, Ellen (2008), Secrets to success for social studies teachers, Crowin Press, Sage Publication, Thousand Oaks, CA 91320.

Habib,Irfan (1995).Essays in Indian History – Towards a Marxist Perception.TulikaBooks,Delhi

Kochhar, S.K. (1985), Methods and Techniques for teaching History, Sterling Publishers, New Delhi.

Kumar,Krishna (2001),Prejudice and Pride: School Histories of the freedom Struggle in India and Pakistan,Penguin,New Delhi (Also available in Hindi as MeraDeshTumharaDesh published by Rajkamal in 2007).

Lemon, M. C. (2003), Philosophy of History, Routledge, Oxon, New York.

Menon,N.(2010),History,truth and Nation:Contemporary debates on education in India.

Misra, Salil and Ranjan, Ashish (2012).Teaching of Social Sciences: History,Context and Challenges in VandanaSaxena (ed.),Nurturing the Expert Within, Pearson,Delhi

Nambiar, Jayashree (2010).Beyond Retention:Meaningful Assessment in Social Science

Nawani, Disha (2015). Re-thinking Assessments in Schools,*Economic& Political Weekly,*Jan 17, Vol L, No. 3, 37-41.

Pathak, S.P. (2005), Teaching of History- The Paedo Centric Approach, Kanishka Publishers, New Delhi.

Phillips, Robert (2002), Reflective Teaching of History, 11-18, Continuum Studies, in Reflective Practice and Theory, Continuum, London, New York.

Phillips,Ian (2008),Teaching History.Sage,South Asia Edition,Delhi

Ranjan, Ashish (2009), "History curriculum" in T.Geetha (ed.) A Comparative Study of Curriculum inI.B., C.I.S.C.E. And C.B.S.E. Boards,Project Report of The International Baccalaureate,Singapore

Sreedharan, E. (2004), A Textbook of Historiography 500 B.C. to A.D. 2000, Orient Longman, New Delhi.

Thapar,Romila (1975).The Past and Prejudice (Sardar PatelMemorial Lectures), National Book Trust, New Delhi

Thapar,Romila (2014).The Past As Present: Forging Contemporary Identities Through History, Aleph,New Delhi

Tyagi, Gurusharan Das (1995).Itihas Shikshan,VinodPustakMandir,Agra.(In Hindi)

PC: Pedagogy of Civics

Unit-1	Civics: Principles and Practices

- Meaning, nature and scope of Civics and its philosophical and theoretical basis.
- Concept of Civics and Political Science.
- Need and importance of Civics at school level.
- Critical appraisal of existing curriculum of Civics and text book at school level.

Unit-2	Issues and Challenges of Teaching Civics

- Construction of knowledge and process of knowledge generation in Civics.
- Pre-conceptions and misconceptions in Civics
- Critical pedagogy in Civics
- Development of Teacher as a Reflective Practitioner and a Researcher
- Teaching Civics to the learners with special needs (differently abled and gifted).

Unit-3	Pedagogy and Assessment in Civics

- Aims and objectives of teaching Civics in a Democratic Country.
- Approaches of teaching Civics: Inductive, Deductive, Interdisciplinary and Constructivist approaches.
- Methods of Teaching Civics: story telling, lecture, question-answer, discussion, text-book; problem solving, project, source, activity methods, observation, excursion, dramatization, current events, community recourses, mass media.
- Material and Aids for Teaching- Learning Processes: Typologies and Justification.
- Learning Plan for Civics: Nature and Structure
- Evaluation & Assessment Modes: Formative-Summative Evaluation, Continuous and Comprehensive Evaluation Programme, Self-assessment, Peer assessment, Group assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' portfolio.
- Application of ICT in a Civics classroom

Suggested Readings:

Arora, P (2014). Exploring the Science of Society. Journal of Indian Education. NCERT, New Delhi.

Arora, P (2014). A Democratic Classroom for Social Science, Project Report, University of Delhi, Delhi.

Bining, A.C. & Bining, D.H.(1932), Teaching of political science in secondary schools, Tata McGraw Hill Publishing Co. Ltd. Bombay.

Edgar, B.W. & Stanely (1938), Teaching social studies in high school, Heath and company, Boston D.C.

George, A., M. &Madan, A. (2009).Teaching Social Science in Schools. Sage Publications India Pvt. Ltd. New Delhi.

Hamm, B. (1992).Europe - A Challenge to the Social Sciences. International Social Science Journal (vol. 44).

Kirkpatrick, Ecron, (1997). Foundation of Political Science: Research, Methods and Scope, New York, The free press.

Kumar, Sandeep (2013). Teaching of Social Science, Project Report, University of Delhi, Kirkpatrick, Ecron, (1997). Foundation of Political Science: Research, Methods and Scope, New York, The free press.

Mayor, F. (1992).The role of the Social Sciences in a changing Europe. International Social Science Journal (vol. 44).

Popper, Karl. (i9yi).The Open Society and its Enemies. Princeton University Press.

Prigogine, I., & Stengers I. (1984). Order Out of Chaos: Man's New Dialogue with Nature. Batnam Books.

Wagner, P. (1999). The Twentieth Century - the Century of the Social Sciences? World Social Science Report.

Wallerstein, I, et al., (1996). Open The Social Sciences: Report of the Gulbenkian commission on the Restructuring of the Social Sciences. Vistaar Publications, New Delhi.

PC: Pedagogy of Economics

Unit-1	Economics: An introduction

- Economics and Commerce
- Meaning, nature and scope of Economics
- Need and importance of teaching Economics at schools (Secondary and Senior Secondary level)
- Relationship and sharing of Economics with other disciplines and its role and position in constituting inter-disciplinarily.
- Economics teaching at micro and macro level.

Unit-2	Curricular Content of Pedagogy

- Aims and objective of learning and teaching of Economics at school (Secondary and Senior Secondary level).
- Approaches/Perspectives and principles of constructing curriculum for school Economics (With respect to independent or integrated or inter disciplinary).
- Critical understanding of Curriculum, Syllabus and textbooks of school Economics.

Unit-3	Pedagogy and Assessment in Economics

- Teaching-Learning Methods in Economics: In addition to usual methods like lecture, discussion, storytelling, other methods like problem-solving, simulation games, use of media and technology, concept mapping, project and activities like field visits (e.g. visit to a construction site for data on wages and employment), collection of data from documents (e.g. Economic Survey, Five Year Plan), analyzing and interpreting data (using simple tables, diagrams and graphs) can be undertaken. Self-study and collaborative learning activities should be encouraged.
- Teaching-Learning Materials: Using textbook, analysis of news (Newspaper, TV, and Radio); documents (e.g. Economics Survey, Five Year Plan), Journals and News Magazines.
- Learning Plan for Economics: Nature and Structure
  Evaluation & Assessment Modes: Formative-Summative Evaluation, Continuous and Comprehensive Evaluation Programme, Self-assessment, Peer assessment, Group assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' portfolio

Sugested Readings:

Agarwal Manju (2011), *'Economics as a Social Science' National Seminar on Economics in Schools.* NCERT (Follow the link http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dess/publication/print_material/ teaching-economics-in-india.pdf).

Agarwal Manju (2012) *'Teaching a Topic of Indian Economy using Unit Plan Approach'.* Teaching Economics in India - A Teacher's Handbook, NCERT Delhi Follow the link http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dess/publication/print_material/ teaching-economics-in-india.pdf).

Agarwal Manju, *'Consumer Education',* (2013) Study Material for Secondary Level Economics' – NIOS, Delhi.

Agarwal, Manju (2012), *"Planning for Effective Economics Teaching: Teaching economics in India-* A Teachers' Handbook' NCERT Delhi.

Agarwal, Manju, Arora, N. (2014), *'Concept Learning in Economics, at Secondary Level: A Curricular Dimension'.*A report of National Seminar on Economic Curriculum in Schools. Emerging Trends and Challenges, NCERT, (Follow the link – http://www.ncert.nic.in/departments/nie/ dess/publication/non print/seminars.pdf).

Hutchings,A N S.Assistant Masters Association 1971.Teaching of Economics in Secondary schools

Katty R Fox (2010), *"Children making a difference : Developing Awareness of Poverty Through Service Learning".* The Social Studies',Vol. 101, Issue 1, 2010.

Lutz,Mark A (1999). Economics for the Common Good-Two Centuries of Social Economic Thought in the Humanistic Tradition,Routledge: London.

Shiva Vandana (1998) *Biodiversity, A Third World Perspective*, RFSTE, Navdanya.

Shiva Vandana (1998), *'Towards the Real Green Revolution, RFSTE, Navdanya.*.

Shiva Vandana, Jain Shreya (2011): *The Young Ecologist Imitative, Garden's of Hope Lesson Plan for Cultivating Food Democracy.* RFSTE, Navdanya.

Shiva Vandana, Singh Vaibhav (2011), *Health per acre, Organic Solutions to Hunger and Malnutrition*. Pub. byNavdanya, Research Foundations for Science, Technology and Environment.

Shiva Vandana; Kester Kevin, Jain Shreya (2007): *The Young Ecologist Initiative, Water Manual, Lesson Plans for Building Earth Democracy'.* Pub. by Navdanyas, Research Foundation for Science Technology and Environment.

Thomas Misco and James Shiveley (2010). *Seeing the Forest Through the Trees : Some Renewed Thinking on Dispositions Specific to Social Studies Education",* The Social Studies, Vol. 101, Issue 3, May/June 2010, Routledtge, Taylor and Francis Group.

Walstad,WilliamB,Sopar JohnC.1994.EffectiveEconomic Education in the Schools:Reference and Resource series.Joint Council on Education and the National Educational Association:New York.

PC: Pedagogy of Commerce

- To develop an understanding of pedagogical processes and critical issues related to the teaching-learning of Commerce.
- To enable students appreciate the relevance of studying Commerce at senior secondary level.
- To help evolve a national and international perspective through comparative analysis of curricula.
- To enable the students to become effective teachers of Commerce.
- To prepare the students for leadership roles in schools and other educational institutions.
- To orient them to research and exploration in the field of teaching of Commerce.

Unit-1	Commerce Education: Issues and Concerns

- Nature of Commerce and its evolution as an area of study.
- Generation of knowledge in Commerce: Understanding the role of Research, Role of Business institutions, Legal dimensions, Trade practices and Industry.
- Relationship of Commerce with other disciplines such as History, Geography, Law, Psychology, Sociology and Economics.
- Commerce Education in everyday life.

Unit-2	Commerce Curriculum: Issues and Concerns

- Place of Commerce in school curriculum.
- Aims, objectives of teaching Commerce
- Structure of Commerce curriculum.
- Organization of content in Commerce.
- Policy perspectives.
- Analyses of commerce syllabus: focusing on their structure and organization of content.

Unit-3	Pedagogy and Assesment in Commerce

- Teaching-learning Process: Lecture, Interaction, Question-Answer technique, Discussion, Seminar, Case Study, Role-Playing, Report-back sessions, Project and Problem solving.
- Planning the Teaching-Learning process: Development of Unit plans and Learning plans.
- Learning Materials: Relevance, selection and use.
- Role of ICT in Commerce Education: Need, function and techniques; E-commerce, E-learning environments and Commerce pedagogy.
- Related pedagogic issues: Reflective teaching; Inclusion and culturally responsive pedagogy; Action research in commerce classroom.
- Assessment in Commerce: Quantitative techniques of test construction and statistical analysis of test results; Assessment modes: Self-assessment, Peer Assessment, Group Assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' Portfolio; Enrichment after Assessment.

Suggested Readings:

Afzal, M. (2005). Analytical Study of Commerce Education at Intermediate Level in Pakistan. Doctoral Thesis. University of Punjab, Lahore.

Armitage, A. (2011). Critical Pedagogy and Learning to Dialogue: Towards Reflexive Practice for Financial Management and Accounting Education, *Journal for Critical Education Policy Studies.* 9(2). 104-124.

Bhatia, S.K. (2012). *Teaching of Business Studies and Accountancy*. New Delhi: Arya Book Depot.

Bonk, C.J. and Smith, G.S. (1998). Alternative Instructional Strategies for Creative and Critical Thinking in the Accounting Curriculum. *Journal of Accounting Education*. 16 (2), 261-293.

Carmona, S., Ezzamel, M., Gutiérrez, F. (2004). Accounting History Research: Traditional and New Accounting History Perspectives, Spanish Journal of Accounting History. 1, 24-53.

Cherunilam, F. (2000). *Business Environment*. (11th ed.). New Delhi: Himalaya Publishing House. (Chapter-4: Social Responsibility of Business)

Dymoke, S. and Harrison, J. (Ed.) (2008). Reflective Teaching and Learning. New Delhi: Sage. (Chapter- 1: Professional Development and the Reflective Practitioner)

Holtzblatt, M. and Tschakert, N. (2011). Expanding your accounting classroom with digital video technology. *Journal of Accounting Education.* 29, 100-121.

Lal, J. (2002). Accounting Theory. (2nd ed.). New Delhi: Himalaya Publishing House. (Chapter-2 Classification of Accounting Theory.

Mingers, J. and Syed, J. and Murray, P.A. (2009) *Beyond Rigour and Relevance: A Critical Realist Approach to Business Education*. Working paper. University of Kent Canterbury, Canterbury.

National Council of Educational Research and Training (2005). *Position Paper (2.2) National Focus Group on Systemic Reforms for Curriculum Change.* New Delhi: NCERT.

NCERT (n.a.). *In Service Teacher Education Manual for Teachers and Teacher Educators in Commerce (higher secondary stage)*. New Delhi: NCERT.

Wadhwa, T. (2008). Commerce Curriculum at Senior Secondary Level: Some Reflections. *MERI Journal of Education.* III (2), 52-59

Stream: Sceinces

Aims :

- To develop a critical understanding about the nature of science and its interface with society
- To develop an understanding about the nature of science curriculum and its transactional implications
- To acquire a conceptual understanding of the processes in learning of science and pedagogical issues
- To develop competencies in assessment of learning in science
- To Address the major concerns relating to science education
- To acquaint with need and processes for professional development and become a reflective practioner in science education

PC: Pedagogy of Sciences

Unit-1	Nature of Science and Science Education
• Nature of Science: Science as a process and science as a body of knowledge • Science-Technology-Society interface • Aims of teaching Science: Objectives of teaching as secondary and senior secondary level. • Science Education in the context of India: policy perspectives	

Unit-2	Curriculum in Science
• Nature of curriculu in Scince and general principles of curriculum construction in Science, organization of content in sciene curriculum, integrated approach to teaching of science; • National and International perspectives in science curriculum frameworks; • Analysis of existing school science curriculum and science textbooks; • Science Curriculum evaluation: observation of science related processes in schools.	

Unit-3	Teaching-learning in Science
• Cognitive development of learners and teaching of science, constructivist approach to teaching of science, pre-conceptions and misconceptions of learners in science, • Thinking Skills in Science: development of inquirey skills, inductive, deductive logic and problem solving skills • Process Skills in Science: Experimentation, observation, inferring, predicting. • Role of demonstration and activities in learning in science, creative expressions in science, science projects, science fairs and field visits, science clubs. • Understanding Learning plan for Science: Nature and structure	

Unit-4	Evaluation in Science
• Evaluation of learning outcomes in Science: Thinking skills and process skills; Portfolios as a means for contimuous and comprehensive assessment. • Assessment of projects and creative expressions; Remedial programmes and activities	

Unit-5	Major Issues in Science Education
• Science Education for Children with Special needs (challenged as well as gifted); • indigenous pedagogy, critical pedagogy in science, socio-cultural dimension in science teaching, gender issues; • Need of professional development of the Science Teachers	

Suggested Readings:

Aikenhead, W. W. (1998). Cultural aspects of learning science. *Part one* , pp 39-52. (B. F. Tobin, Ed.) Netherlands: Kluwer academic Publisher.

Barba, H.R. (1997).*Science in Multi-Cultural Classroom: A guide to Teaching and Learning*. USA: Allyn and Bacon.

Bevilacqua F, Giannetto E, & Mathews M.R., (eds.). Science Education and Culture: The Contribution of History and Philosophy of Science. The Netherlands: Kluwer Academic Publishers.

Cobern, W. W. (1998). *Socio-Cultural Perspectives on Science Education.* London: kluwer Academic Publisher.

Deo, M.G. & Pawar, P.V. (2011), General Article**:** Nurturing Science Talent in Villages, In *Current Science*, Vol. 101, No. 12, pp1538-1543.

Hines, S. M. (Ed.). (2005). Multicultural science Education: Theory, Practice, and Promise (Vol. 120). New York, U.S.A: Peter Lang.

Kuhn, T. S. (1970, 2nd Ed)*The Structure of Scientific Revolutions*. Chicago: the University of Chicago

Lee, E. & Luft, J. (2008), Experienced Secondary Science Teachers' Representation of Pedagogical Content Knowledge. *International Journal of Science Education* 30(10), 1343-1363(21), August

Lee, O. (2003). Equity for Linguistically and Culturally Diverse Students in Science Education. *Teachers College Record , 105* (3), pp 465-489.

Lynch, S. J. (2000). *Equity and Science Education Reform.* Mahwah, NJ: LawrenceErlbaum Associates, Inc.

National Curriculum Framework for Teacher Education: Towards Preparing Professional and Human Teacher (2009-10), NCERT: New Delhi

Newsome, J. G. & Lederman, N. G. (Eds.) (1999), *Examining Pedagogical Content Knowledge: The Construct and its Implications for Science Education*. Kluwer Academic Publishers, The Netherlands

Parkinson, J. (2002). Chapter-1. Learning to Become an Effective Science Teacher. In *Reflective Teaching of Science 11-18: Continuum Studies in Reflective Practice and Theory*. New York: Continuum. pp. 1-12.

Quigley, C. (2009). Globalization and Science Education: The Implications for Indigenous knowledge systems. International Educational Studies , 2 (1), pp 76-88.

Rivet, A.E. & Krajick, J.S. (2008), Contextualizing Instruction: Leveraging Students' Prior Knowledge and Experiences to Foster Understanding of Middle School Science, In *Journal of Research in Science Teaching*, Vol. 45, No. 1, pp 79-100.

Sears, J. and Sorensen, P. (Eds.). (2000) *Issues in Science Teaching*. Routledge Falmer, The Netherlands.

Tobin, K. (Ed.). (1993). The Practice of Constructivism Science Education . Hillsdale, New Jersey: Lawrence Erlbaum Associates, Inc.

Van Driel, J.H.V., Beijaard, D. & Verloop, N. (2001), Professional Development and Reform in Science Education: The Role of Teachers' Practical Knowledge. *Journal of Research in Science Teaching*, 38(2), 137-158, February

Wallace J. and Louden W. (eds.). *Dilemmas of Science Teaching: Perspectives on Problems of Practice*. London: Routledge Falmer. pp. 191-204.

Wang, H. A and Schmidt, W. H. (2001). - History, Philosophy and Sociology of Science in Science Education: Results from the Third International Mathematics and Science Study. In F. Bevilacqua, E. Giannetto, and M.R.

Mathews, (eds.). *Science Education and Culture: The Contribution of History and Philosophy of Science*. The Netherlands: Kluwer Academic Publishers. pp.83-102.

PC: Pedagogy of Chemistry

Unit-1	Nature of Chemistry and its role in Society

- The nature of Chemistry as a discipline in science, majore landmarks in the development of knowledge in chemistry.
- Chemistry in socio-cultural and historical perspective with focus on societal issues and concerns which relate to the role of Chemistry in society.
- Contemporary curriculum and syllabus of Chemistry.

Unit-2	Teaching learning Process in Chemistry

- Teaching learning process in Chemistry (with reference to the socio-cultural and developmental context of the learner): Problem solving, experementaion, peer learning, seminar presentation .
- Simulated teaching and demonstration of activities in Chemistry.
- Chemistry in daily life of the learners and its utility for enriching classroom learning.
- Nature and structure of Learning Plan.
- Assessment in Chemistry.

Unit-3	Laboratory and related work in Chemistry

- Organisation of chemistry laboratory: Layout and design.
- Storage of apparatus and Chemicals.
- Safety measures in Chemistry laboratory.
- Conduct and assessment of laboratory experiments and project work.

Suggested Readings:

Tobin, K. (Ed.). (1993). The Practice of Constructivism Science Education . Hillsdale, New Jersey: Lawrence Erlbaum Associates, Inc.

Van Driel, J.H.V., Beijaard, D. & Verloop, N. (2001), Professional Development and Reform in Science Education: The Role of Teachers' Practical Knowledge. *Journal of Research in Science Teaching*, 38(2), 137-158, February

Wallace J. and Louden W. (eds.). *Dilemmas of Science Teaching: Perspectives on Problems of Practice*. London: Routledge Falmer. pp. 191-204.

Wang, H. A and Schmidt, W. H. (2001). - History, Philosophy and Sociology of Science in Science Education: Results from the Third International Mathematics and Science Study. In F. Bevilacqua, E. Giannetto, and M.R. Mathews, (eds.). *Science Education and Culture: The Contribution of History and Philosophy of Science*. The Netherlands: Kluwer Academic Publishers. pp.83-102.

PC: Pedagogy of Physics

Unit-1	Nature of Physics

- A historical perspective: The development of Physics as discipline.
- The nature of Physics in the senior secondary school curriculum.
- Aims and objective os teaching Physics: Linkages with elementary and secondary level.
- Role of experiments in science with particular reference to Physics.
- Interface of Physics with Mathematics.

Unit-2	Classroom Processes in Physics

- Lecture cum discussion, problem solving, experimentation, investigatory projet, individually paced programmes, guided independent study, peer learning, seminar presentations, observation based survey.
- Physics in daily life of the learners and its utility for enriching classroom learning.
- Developing unit and learning plans in Physics.
- Assessment of differential skills and processes while learning physics.

Unit-3	Laboratory Organisaton and Experimentation in Physics

- Organisation of physics laboratory: layout and design.
- Storage of apparatus .
- Maintenance at laboratory records.
- Conduct and assessment of laboratory experiments and project work.

Suggested Readings:

Bal, V. (2005). *Women scientists in India: Nowhere near the glass ceiling*. Current Science: 88(6). pp. 872-878.

Bevilacqua F, Giannetto E.& Mathews M.R. (Ed.) (2001), *Science Education and Culture The Contribution of History and Philosophy of Science* . Netherlands: Kluwer Academic Publishers.

Bowling, J. & Martin, B. (1985). *Science: a masculine disorder?* Science and Public Policy: 12(6). pp. 308-316

Cobern W.W.(Ed.) (1998), *Socio-Cultural Perspectives on Science Education An international Dialogue*. Netherlands: Kluwer Academic Publishers.

Cole, Jonathan R. and Harriet Zuckerman. 1987. "Marriage and Motherhood and Research Performance in Science" Scientific American 256: 119-125.

Hiroko, H. (2012).Modernity, Technology and Progress of Women in Japan: Problems and Prospects. In D. Jain & D. Elson(Ed.), *Harvesting feminist Knowledge for Public policy Rebuilding Progress.* New Delhi :Sage Publication.

Kumar, N. (Ed.)(2009). *Women and Science in India A Reader.* India: Oxford University Press.

Oakes, J. 2007 More than misplaced technology : A normative and political response to Hallinan on tracking in *Sociology of Education* by Alan R. Sadovnik (Ed.). New York: Routledge

Okebukola, O. J. (1991). The Effect of Instruction on Socio-Cultural beliefs Hindering the Learning of Science. *Journal of Research in Science Teaching, 28* (3), pp 275-285.

Osborne, J. F. (1996). Beyond Constructivism. *Science Education, 80* (1), pp 53-82.

Sur, A. (2011). Dispersed Radiance: Caste, Gender and Modern Science in India. Navayana : India

Taylor, P.C. &Cobern W. W. 1998 Towards a Critical Science Education in Socio-Cultural Perspectives on Science Education- An international Dialogue By William W. Cobern (Ed.) Dordrecht: Kluwer Academic Publishers.

Wallace J.& Louden W (Ed.) (2002)*Dilemmas of Science Teaching Perspectives on Problems of Practice*. Routledge: NewYork.

PC: Pedagogy of Biology

Unit-1	Nature and significance of Biology

- Nature of Biology as a discipline in science; majore landmarks in the development of knowledge in Biology.
- Understanding contemporary issues in relation to Biology.
- The changing character of school Biology.
- The contemporary curriculum and syllabus of Biology.

Unit-2	Curricular and Pedagogic issues in Biology
• Objectives of teaching Biological sciences at secondary and senior secondary level. • Pedagogical practices: problem-solving, peer-learning and seminar presentation. • Biology in dailiy life of the learners and its utility for enriching classroom learning. • Nature and structure of Learning Plan. • Role of Biology teacher in curriculum development and transaction.	

Unit-3	Laboratory and related work in Biology
• Biology teacher and organization of the Biology Laboratory • Conduct and assessment of laborartory experiments and project works	

Suggested Readings:

Collette, Alfred T. and Eugene L. Chappetta, (1994) *Science Education in the Middle and Secondary Schools*; MacMillan : N. Y.

Driver, R., Squires, A., Rushworth, P. and Wood- Robinson, V. (2006) *Making Sense of Secondary Science: Research into Children's Ideas*, London: RoutledgeFalmer.

Eklavya, *BalVigyan – Class 6, 7, 8. (*1978) *Madhya Pradesh Pathya Pustak Nigam*; Bhopal, (English & Hindi Versions both).

Friedrichsen, P.M. & Dana, T. M. (2005). Substantive-Level Theory of Highly Regarded Secondary Biology Teachers' Science Teaching Orientations. Journal of research in science teaching vol. 42, no. 2, pp. 218–244

Lovelock, James (2000) [1979]. Gaia: A New Look at Life on Earth (3rd ed.). Oxford University Press

Minkoff, E. C. & Baker, P. T. *(*2004) *Biology Today – An Issues Approach* (III Ed.), Garland Science.

Muralidhar, K., '*What Organisms Do?' in* Rangaswamy, N. S. (Ed.) *Life and Organism, Vol. XII (Part 6)* in Chattopadhyaya, D. P. (Gen. Ed.). *History of Science, Philosophy and Culture in Indian Civilization.* MunshiramManoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.

Reiss, M. (Ed.). (1999) *Teaching Secondary Biology*. Association for Science Education.

Siddiqi and Siddiqi. (2002) *Teaching of Science Today and Tomorrow*, Doaba House, New Delhi.

Siddiqi and Siddiqi. *Teaching of Biology*, Doaba House, New Delhi.

Wellington, J. (2004) *Teaching and Learning Secondary Science – Contemporary Issues and Practical Approaches*, London: Routledge.

Wilson, E. O. (1999). Consilience: *The Unity of Knowledge, Vintage Books*. New York.

PC: Pedagogy of Mathematics

Unit-1	Mathematics: An Introduction
• Meaning, significance and nature of Mathematics. • Mathematisation and it domains with reference to children, community and school. • Myth and misconception; children mathematisation and school. • Pedagogic implications of history of mathematics and some research articles/papers. • Critical understanding of significance of mathematical axioms, postulates, propositions, logic, proofs algorithm in mathematisation. • Aims and objectives of Teaching Mathematics.	

Unit-2	Mathematics: Understanding of Pedagogy and Curriculum
• Critical understanding of inductive-deductive, analytic-synthetic, laboratory method, problem solving and constructivist approach (Piaget, Vygostky, Dumo, Heile) with special reference to	

pedagogic implication for Mathematics.
- Critical understanding of Mathematics curriculum, syllabus and text books.
- Hidden curriculum: In the context of democratizing Mathematics classroom and empowering learners' identity(self) in Mathematics.
- Nature and structure of Learning Plan in Mathematics.

Unit-3	Pedagogical Implication

- Threshold concepts of Mathematics
- Ethno Mathematics and folk Mathematics in the context of socio cultural underpinnings of learning-teaching.
- Material and situation based activities
- Mathematical kit, mathematical corner, Mathematical laboratory.
- School building/space, monuments as learning aids.
- Projects (individual and group) concept, planning , enactment and organization
- Issues and possibilities of recreational and learning without burden in Mathematics learning: Mathematical club, puzzles, games and magic squares.
- Issues and possibilities of contextualizing learning-teaching Mathematics
- Mathematics teacher: qualities and belongings
- Concept, principles and new trends in planning of pedagogic process and actions/strategies
- Constructing plan for content/content points and activity
- Constructing temporal plan and strategies

Unit-4	Assessment of and for Mathematics Learning

- Concept and issues of measurement, assessment and evaluation in the context of school Mathematics
- Modern trends of evaluation in school Mathematics
- Continuous and comprehensive evaluation: Concept and tools
- Concept, types and remedies of erring and deviations in the learning-teaching of mathematics
- Achievement test: construction, conduction and report-writing
- Diagnostic test and remedial teaching

Suggested Readings:

Ball, D. L., & Bass, H. (2003). Making mathematics reasonable in school.In *A research companion to principles and standards for school mathematics* (pp. 27–44).

Ball. D.L, Hill H.C. & Bass, H.(2005). Knowing mathematics for teaching.*American Educator*.Fall 2005.

Bishop, A. J. (1988). The interactions of mathematics education with culture.*Cultural Dynamics*, *1*(2), 145–157.

Boaler, J. & Humphreys, C. (2005).Connecting mathematical ideas: Middle school video cases to support teaching and learning (Portsmouth, NH, Heinemann).

Boaler, J. (1993). The role of contexts in the mathematics classroom: Do they make mathematics more"real"? *For the Learning of Mathematics, 13*(2), 12–17.

Boaler, J. (2010). *The elephant in the classroom. Helping children love and learn maths*. Souvenir Press Ltd

Boaler, J. (2013, March). Ability and Mathematics: The mindset revolution that is reshaping education. In *Forum* (Vol. 55, No. 1, pp. 143-52).Symposium Journals.

Burns, M. (2007).*About teaching mathematics: A K–8 resource*, Third Ed. Math Solutions Publications.

Chapin, O'Connor, & Anderson (2009).*Classroom discussions: Using math talk in elementary classrooms*. Math Solutions.

Cirillo, M. (2009).Ten things to consider when teaching proof.*Mathematics Teacher*, *103*(4), 250-257.

D'Ambrosio, U. (1985). Ethnomathematics and its place in the history and pedagogy of Mathematics.*For the Learning of Mathematics*, *5*(1), 44–48.

Davis, B. (1995). Why teach Mathematics? Mathematics education and enactivist theory. *For the Learning of Mathematics*, *15*(2), 2–9.

Davis, B. (2001). Why teach Mathematics to all students? *For the Learning of Mathematics*, *21*(1), 17–24.

Deborah Ball video on eliciting student thinking, MSRI interview of 6th graders. http://www.msri.org/workshops/696/schedules/16544

Dweck, C.S. (2006). Is Math a gift? Beliefs that put females at risk. In W.W.S.J.Ceci (Ed.), *Why Aren't More Women in Science? Top Researchers Debate the Evidence*. American Psychological Association.

Eccles, J & Jacobs, J.E. (1986). Social forces shape Math attitudes and performance. *Signs: Journal of Women in Culture and Society*, *11*(21), 367-380.

Ernest, P. (2009). New philosophy of mathematics: Implications for mathematics education. In B. Greer, S. Mukhopadhyay, A. B. Powell, & S. Nelson-Barber (Eds.), *Culturally responsive mathematics education* (pp. 43–64). Routledge.

Fuller, E., M Rabin, J., &Harel, G. (2011).Intellectual need and problem-free activity in the mathematics classroom.*Journal International de Estudosem EducaçãoMathemátics 4*(1).

Greer, B., Mukhopadhyay, S., & Powell, A. B. (Eds.). (2009). *Culturally responsive mathematics education*. Routledge.

Gutstein, E. (2007). "And that's just how it starts": Teaching Mathematics and developing student agency. *Teachers College Record*, *109*(2), 420–448.

Gutstein, E., Lipman, P., Hernandez, P. & de los Reyes, R. (1997). Culturally relevant Mathematics teaching in a Mexican American context, *Journal for Research in Mathematics Education*, *28*(6), 709- 737.

Hiebert, J., Carpenter, T., Fennema, E., Fuson, K., Wearne, D., Murray, H. (1997). *Making Sense: Teaching and learning mathematics with understanding.* Portsmouth, NH: Heinemann.

Jackson, K. J., Shahan, E., Gibbons, L., & Cobb, P. (2012).Setting up complex tasks.*Mathematics Teaching in the Middle School*, (January), 1–15.

Kazemi, E. (1998). Discourse that promotes conceptual understanding.*Teaching Children Mathematics*, *4*(7), 410-414.

Kazemi, E., &Stipek, D. (2001).Promoting conceptual thinking in four mathematics classrooms.*The Elementary School Journal*, *102*(1), 59–80.

Knuth, E., Choppin, J., &Bieda, K. (2009). Proof: Examples and beyond. *Mathematics Teaching in the Middle School*, *15*(4), 206-211.

Lampert, M. (2001).*Teaching problem and problems for teaching*.Yale University.

Lockhart, P., & Devlin, K. J. (2009).*A mathematician's lament*. New York: Bellevue Literary Press.

Martino, A.M. & Maher, C. (1999). Teacher questioning to promote justification and generalization in mathematics: What research practice has taught us?.*Journal of Mathematical Behaviuor*, *18*(1), 53-78.

MESE -001(2003).Teaching and Learning Mathematics. IGNOU series

Parish, S. (2014).*Number talks: Helping children build mental math and computation strategies, Grades K-5, Updated with Common Core Connections.* Math Solutions.

Rampal, A., Ramanujam, R. &Saraswathi, L.S. (1999).*Numeracy counts!* and *Zindagikahisaab*(2001). National Literacy Resource Centre, Mussoorie. Available at www.arvindguptatoys.com

Reinhart, S. (2000). Never say anything a kid can say! *Mathematics Teaching in the Middle School*, *5*(8), 478-483.

Rousseau, C.,&Tate,W. (2003). No time like the present: Reflecting on equity in school mathematics. *Theory Into Practice*, *42*(3).

Schifter, D. (2001). Learning to see the invisible. What skills and knowledge are needed in order to engage with students'mathematical ideas? In T. Wood & B. Scott Nelson & J. Warfield (Eds.), *Beyond classical pedagogy: Teaching elementary mathematics*. Mahwah, (pp. 109-134). NJ: Lawrence Erlbaum Associates

Schoenfeld,A.(2002).Making mathematics work for all children: Issues of standards, testing and equity. *Educational Researcher*,*31*(1), 13-25.

Skemp, R. (1978). Relational understanding and instrumental understanding. *Arithmetic Teacher26* (3), 1-16.

Smith & Stein (2011).*Five practices for orchestrating productive mathematics discussions.*

Solomon, Y., & Black, L. (2008). Talking to learn and learning to talk in the mathematics classroom. In N. Mercer & S. Hodgkinson (Eds.), *Exploring talk in school* (pp. 73–90).

Timothy Gowers (2002). Mathematics: A Very Short Introduction. Oxford University Press

TIMSS Videos of mathematics classrooms available at: http://www.timssvideo.com/videos/Mathematics

Wheeler D (1983). Mathematisation matters. *For the Learning of Mathematics*, *3*(1).

PC: Pedagogy of Home Science

Unit-1	Understanding Home Science

- Home Science: Concept, components and importance.
- Natue and scope of Home science at secondary and higher secondary level.
- Study of local, National and international programmes relating to Health, Nutrition, Child care, Housing, Consumer problems.
- Socially Useful Productive Work related to Home Science.

Unit-2	Curriculum of Home Science

- Objectives of teaching Home Science in Schools
- Scope of Home Science in School: Principles of curriculum planning; Critical study of Home Science syllabus and textbooks
- Development of Home Science syllabus.
- Correlation of Home Science with other school subjects

Unit-3	Teaching-learning of Home Science

- Methods of teaching Home Science: Discussion, Demonstration, Laboratory work project. Problem solving, Field trip, Micro-teaching. Use of Community resources in teaching Home Science. Use of mass media in teaching Home Science
- Space and Equipment for Home Science
- Utility of Home science knowledge at school: Study of School lunch programmes; Development of unit in Home Science for adult/ out of school youth, based on needs and interests.
- Teaching Aids in teaching Home Science – audio and visual, Charts, graphs, specimens, samples short answer tests, score cards checklist.
- Learning plans for teaching Home Science.
- Evaluation in Home science: Tools and techniques

Suggested Readings:

Gary D. Borich (2013). Effective Teaching Methods: Research-Based Practice (8th Edition) Paperback, Pearson

Asthana N. (2006). Home Science Education: Growth and future prospects(paper) Meri Journal of Education,vol1,no.1, Management Education and Research Institute, Delhi

Chandra,A., Shah,A. & Joshi ,A. (1989). Fundamental of Teaching Home Science. New Delhi. Sterling Publishers Private Limited

Malaviya,R. (2010). Influence of Technology: Adolescent's Interests, Journal of Psychosocial Research, Vol.5 No.1

Malaviya, R. (2007). Evolution of Home Science Education: The Metamorphosis. University News: Journal of Higher Education. Vol. 45, No.08, Feb 19-25, 2007

Lady Irwin College (2008). Excellence in Home Science: Contemporary Issues and Concerns, Delhi. Academic Excellence

Lakshmi, K. (2006). Technology of teaching of Home Science. New Delhi: Sonali Publishers.

Seshaih, P.R. (2004). Methods of teaching Home Science. Chennai: Manohar Publishers & Distributors.

Nibedita, D.(2004).Teaching of Home Science. New Delhi: Dominant Publishers and Distributers.

Shalool, S. (2002). Modern methods of teaching of home science.(I Edition). New Delhi: Sarup&Sons.

Jha, J.K. (2001). Encyclopaedia of teaching of Home Science.(Vol I&II), New Delhi: Anmol Publications Private Limited.

Yadav, S. (1997). Teaching of Home Science.New Delhi: Anmol Publishers.

Yadav, S. (1997). Text book of nutrition and health. New Delhi: Anmol Publishers.

Shah, A. et al (1990). Fundamentals of teaching Home Science. New Delhi: Sterling Publishers Private Limited.

Bhatia, K.K. (1990). Measurement and evaluation in education. Ludhiana: Prakash Brothers.

Stream: Languages

उद्देष्य :

अपने भाषा कोर्स के माध्यम से विद्यार्थी–षिक्षक :

- *भाषा* के प्रयोग के अलग–अलग रूपों के बारे में समझ बना सकेंगे।
- *भाषा* के इतिहास को उस *भाषा* की बहुभाषिकता के संदर्भ में समझ सकेंगे।
- माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए संबंधित *भाषा* के उद्देष्यों के बारे में समझ बना सकेंगे।
- संबंधित *भाषा* साहित्य तथा उसकी विधाओं का भाषा–षिक्षण में उपयोग करने के बारे में समझ बना सकेंगे।
- *भाषा* के व्याकरण की समझ बनाकर उसका संदर्भाधारित षिक्षण करने के बारे में समझ बना सकेंगे।
- *भाषा* –षिक्षण को षिक्षण की विभिन्न संकल्पनाओं के आलोक में समझ पाएंगे।
- *भाषा* –षिक्षण के लिए उपयुक्त विधियों, योजनाओं, रणनीतियों, तथा कक्षा प्रक्रियाओं के बारे में समझ बना सकेंगे।
- स्वयं की लिखने की क्षमताओं का विकास कर पाएंगे।
- विभिन्न विधाओं में लिखने की क्षमता का विकास कर पाएंगे।
- विभिन्न स्थितियों, जैसे– औपचारिक, अनौचारिक, कम षिक्षित, अधिक षिक्षित लोगों, के लिए लिखने में अंतर करते हुये लिख सकने की क्षमता का विकास कर पाएंगे।
- संविधान तथा त्रि– भाषा सूत्र के आधार पर संबंधित भाषा के स्थान के बारे में समझ बना सकेंगे।
- सतत एवं समग्र मूल्यांकन तथा संबंधित भाषा में उसके उपयोग के बारे में समझ बनाएँगे।

PC: Pedagogy of Hindi
हिन्दी का षिक्षणषास्त्र

इकाई–1	हिन्दी भाषा : स्वरूप तथा विकास का संक्षिप्त इतिहास

- हिन्दी के विकास के विभिन्न काल खंडों से कुछ रचनाओं के उदाहरण चुनकर उनके आधार पर हिन्दी के स्वरूप को समझना।
- हिन्दी के स्वरूप को समझने के आधार : विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों में हिन्दी; दृश्य–श्रव्य माध्यमों में उपयोग में लाई जा रही हिन्दी; बी. एड. की कक्षा में उपयोग में लाई जा रही हिन्दी; सामान्य बोल–चाल की हिन्दी।
- उपर्यक्त सभी स्थितियों के आधार पर हिन्दी के वाचिक रूपों की विविधताओं की समझ
- हिन्दी के वाचिक रूपों तथा लिखित रूप/रूपों के बीच अंतःसम्बन्धों की समझ
- संविधान में हिंदी : संविधान में कौन से अनुच्छेद हिन्दी से संबन्धित हैं ?
- त्रि– भाषा सूत्र में हिंदी।

इकाई–2	हिंदी–षिक्षण के उद्देष्यों (6 –12 कक्षा) तथा पाठ्यपुस्तकों की आलोचनात्मक समझ

- स्कूल में हिंदी : विषय और माध्यम के रूप में।
- बिहार राज्य द्वारा अनुमोदित कक्षा 6–12 के लिए हिंदी के पाठ्यक्रम की समीक्षात्मक समझ।
- एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनुमोदित कक्षा 6–12 के लिए हिंदी के पाठ्यक्रम की समीक्षात्मक समझ।
- उपर्युक्त पाठ्यक्रमों में प्रत्येक स्तर के लिए दिए गए उद्धेष्यों में परस्पर तार्किक संगतता की समीक्षा करने की समझ का विकास।
- मिडिल, माध्यमिक, तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए भाषा उपयोग की दृष्टि से उपयुक्त पाठों का चयन करने के आधार कौन–कौन से हैं? उदाहरण के लिए; शब्द चयन, वाक्य संरचना (सरल, संयुक्त, या जटिल), पैराग्राफ, तार्किकता, वैचारिक जटिलता, शब्द शक्ति, बिंब, प्रतीक, छंद, अलंकार, मुहावरे, लोकोक्ति, सामाजिक–राजनैतिक मूल्य आदि के उपयोगों का स्तर।

इकाई–3	विद्यार्थी–षिक्षकों के लेखन क्षमता का संवर्धन तथा लेखन प्रक्रिया, रूपों, तथा चरणों की समझ

- विद्यार्थी–षिक्षक लिखने को सुनने, कहने, तथा पढ़ने के साथ तारतम्यता में देख पाएंगे।
- लिखने के बारे में अपनी समझ का विकास।
- लिखने में शामिल प्रक्रियाओं के बारे में समझ का विकास : जैसे–सोचना, सुनना, पढ़ना, विचार को मानसिक रूप से व्यवस्थित करना आदि।
- विभिन्न विधाओं में अनुभवों को रचनात्मकता के साथ लिखने की स्वयं की कुषलता का विकास।
- औपचारिक तथा अनौपचारिक अवसरों के लिए लिखने की समझ तथा कुषलता का विकास।
- पठित तथा अपठित सामग्री का संक्षेपण तथा विस्तारण करने की क्षमता का विकास।
- लेखन का मूल्यांकन करने के तरीकों के बारे में समझ बनाना।
- बच्चों में रचनात्मक लेखन का विकास करने के तरीकों तथा प्रक्रियाओं के बारे में समझ बनाना।

इकाई–4	साहित्य एवं साहित्यिक विधाएँ : समझ और षिक्षण

- साहित्य क्या है ?
- साहित्य को समझने के लिए साहित्यिक तत्वों (षब्द शक्ति, बिंब, प्रतीक, छंद, अलंकार, मुहावरे, लोकोक्ति आदि) की समझ तथा उनका षिक्षण में उपयोग।
- बिहार राज्य में कक्षा 6–12 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में दी गयी विधाओं की विषेषताओं की समझ।
- उपर्युक्त विधाओं की समझ के आधार पर षिक्षण में उनके उपयोग की समझ।

इकाई–5	हिंदी व्याकरण : समझ और षिक्षण

- बिहार राज्य में कक्षा 6–12 के लिए हिंदी के पाठ्यक्रम में दिए गए व्याकरणिक तत्वों के बारे में समझ।
- उपर्युक्त व्याकरणिक तत्वों का संदर्भानुसार षिक्षण करने की समझ।
- हिंदी–षिक्षण में व्याकरण का महत्व।
- व्याकरण और भाषा के अंतर्संबंधों की समझ।

इकाई–6	हिन्दी : षिक्षणषास्त्र एवं आकलन

- षिक्षण क्या है ? (बुनियादी पर्चों के आधार पर बनी समझ का हिन्दी–षिक्षण में उपयोग)।
- हिन्दी षिक्षण के विभिन्न उपागम
- हिन्दी के सीखने–सिखाने को कक्षा सम्बन्धों, बहुशषिकता, लोकतान्त्रिक कक्षा, कक्षा प्रक्रियाओं आदि के संदर्भ में समझना।
- उपर्युक्त के आधार पर हिन्दी– षिक्षण के लिए उपयुक्त विधियों का चुनाव तथा सृजन।
- हिन्दी–षिक्षण हेतु रणनीतियाँ एवं 'सीखने की योजना':षिक्षण–पूर्व, षिक्षण करते हुए, व षिक्षण–पष्चात।
- रचनात्मक तथा आलोचनात्मक उपागमों के साथ–साथ व्यवहारवादी उपागमों के बारे में आलोचनात्मक समझ।
- एक से अधिक विधियों का उपयोग करने की संभावनाओं के बारे में समझ।
- कक्षा में जाने से पहले कक्षा प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में की जाने वाली तैयारी के बारे में समझ।
- कक्षा में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं के बारे में समझ।
- कक्षा में भौतिक तथा मनोवैज्ञनिक षिक्षण–साधनों के उपयोग के बारे में समझ।
- हिन्दी षिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन का अर्थः समग्र मूल्यांकन; मिडिल, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी षिक्षण में सतत एवं समग्र मूल्यांकन के उपयोग के बारे में समझ।

- अग्रवाल, पुरुषोत्तम , कुमार संजय (2000), हिन्दीः नई चाल में ढलीः एक पुनर्विचार, देशकाल प्रकाशन, नई दिल्ली
- अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन (2010), वत्सल निधि प्रकाशन माला : संवित्ति, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली
- कुमार, कृष्ण (2004), बच्चे की भाषा और अध्यापक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली कौशिक, जयनारायण (1987), हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
- गुप्ता,मनोरमा (1984), भाषा अधिगम, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार (1990), साहित्य भाषा और साहित्य शिक्षण, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार एवं शुक्ल देवेन्द्र (1992), साहित्य शिक्षण, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, मद्रास
- चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2005), हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
- जोसेफ जेस्सी(1997), भाषा की जैविकता, ज्ञानोदय प्रकाशन, धारवाड़

- तिवारी, पुरुषोत्तम(1992), हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
- तिवारी, भोलानाथ(1990), हिन्दी भाषा शिक्षण, लिपि प्रकाशन, दिल्ली
- पाण्डेय, रामशकल(1993), हिन्दी शिक्षण,विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- पांडेय, हेमचन्द्र (2001), भाषिक सम्प्रेषण और उसके प्रतिदर्श
- प्रसाद, केशव (1976), हिन्दी शिक्षण, धनपत राय एंड संस, दिल्ली
- बाछोतिया हीरलाल (2011), हिन्दी शिक्षण: संकल्पना और प्रयोग, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
- नागोरी,शर्मा एवं शर्मा (1976) हिन्दी भाषा एवं साहित्य शिक्षण,राजस्थान प्रकाशन
- लहरी,रजनीकान्त (1975),हिन्दी शिक्षण, राम प्रसाद एंड संस , आगरा
- व्यागात्सकी (2009), विचार और भाषा(अनू॰), ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली
- श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ (2009) , भाषाई अस्मिता और हिंदी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- शर्मा रामविलास (1978), भारत की भाषा समस्या, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- सिंह, निरंजन कुमार (1981) माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
- सुरेशकुमार (2001), शैलीविज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

PC: Pedagogy of English

Unit-1	Basic Concepts about English as Second Language

- Concept of language, language acquisition, language-learning
- Concept of Mother Tongue and Second Language
- Principles of Second Language Teaching: English as a Second language (ESL); psychological factors affecting second language learning, problem of effective teaching
- The function of second languages in a multilingual society: The context of India with special focus on Bihar

Unit-2	Pedagogy for teaching English

- Direct Method and Bilingual Method; Role play-simulation and group work
- Computer Assisted language Learning (CALL) and Computer assisted language teaching (CALT)
- Second language teaching: Structural situational approach, Communicative approach, Constructivism approach, Eclectic approach
- Teaching Aids in English: Text book, Work book, Reference book, Newspaper/Magazines, Chart, Pictures, Flash cards, Pannel board, black board, Tape-recorder, Radio, OHP, Computer, Substitution tables, Language lab, Authentic materials
- Pedagogical methods and approaches for teaching poetry, prose and grammar in English
- Learning Plan for English: Nature and structure

Unit-3	DevelopingTeaching skills in English

- Teaching of listening skills: Concept of listening in second language, Difference between hearing and listening, Difference between listening and listening comprehension, Techniques of teaching listening, Note taking
- Teaching of speaking skills: Concepts of speaking in second language, Organs of speech elements, Use of pronouncing dictionary phonetic transcription, teaching speaking skills and pronunciation, Role of Audio Visual aids and drills, Language games

Unit-4	Teaching Reading Comprehension and writing

- Concept of reading in second language: Mechanics of reading (silent, aloud, intensive and extensive, Using Dictionary), Maze method; Scanning, skimming, inferences and extrapolation; Top down and bottom up; Language games; Role of speed and pace
- Concept of writing: Types of Composition (Oral, Written, Controlled, Guided, Free, Contextualized and integrated composition), Developing stories

Unit-5	English: Understanding Curriculum, Textbooks and Assessment

- Understanding curriculum of Engish at school level: Content analysis, Review of syllabus and Textbooks.
- English Textbooks: New Lexical items (Vocabulary), New structural items, Textual Exercises, Reading comprehension, Writing/composition, Unit test
- Assessment and Evaluation in English: CCE; Self-evaluation, peer evaluation
- Concept of testing in English as a second language
- Testing language skills, lexical, structure items, poetry, prose and grammar.
- Difference in testing in content subjects and skill subjects
- Error analysis ; Concept of remedial teaching and re-material

References:

Doff, A. (1988) Teach English. CUP : Cambridge.

Morgan J. & Rinvolucri M. (1986). Vocabulary, OUP : Oxford.

Hayes, B.L. (ed) (1991). Effective Strategies for Teaching Reading. Allyn & Bacon.

Grellet, F. (1981). Developing Reading Skills, CUP : Cambridge.

Nutall, Chrishrine (1987) Teaching Reading Skills in a Foreign Language. London : Heinemann Educational Books Ltd.

Parrott, M. (1993). Tasks for Language Teachers. Cambridge : CUP.

Richards & Lockhart (1994) Reflective Teaching in Second Language Classrooms. Cambridge: CUP.

Hughes, A. (1989). Testing for Language Teachers Cambridge : CUP.

Nunan, D. and C. Lamb (1996). The Self-directed Teacher : Managing the Learning Process. Cambridge: CUP.

Weir, C. J. (1993). Understanding and Developing Language Texts. London's Prentice Hall.

Asher, R. E. (ed.) (1994). The Encyclopedia of Language and Linguistics.

Hedge,T.(1998). Writing : Resource Book for Teachers. Oxford : OUP.

Bygate, M. (1987). Speaking : Oxford: OUP.

Kuppel, F. (1984). Keep Talking : Communicative Fluency Activities for Language Teaching. Cambridge : CUP.

Littlewood, W. (1992). Teaching Oral Communication. Oxford : Blackwell Publishers.

Nunan, D. (1989). Designing Tasks for the Communicative Classroom. Cambridge : CUP.

Anderson & Lynch (1988). Listening. Oxford: OUP.

Brumfit, C. (ed.) (1983). Teaching Literature Overseas : Language – Based Approaches, ELT Document : 115, Oxford : Pegamon.

Brumfit and Carter (1986). Literature and Language Teaching : Oxford : OUP.

Underhill, N. (19870. Testing Spoken Language : Cambridge : CUP.

Ur, P. (1991). Discussions that work. Cambridge : CUP.
Ur,P. (2014). A Training Course in Teaching of English. CUP: Cambridge

Richards and Rodgers (1986). Approaches and Methods in Language Teaching. Oxford : OUP.

Prabhu, N. S. (1987). Second Language Pedagogy. Oxford : OUP.

Agnihotri & Khanna (eds.) (1991). Second Language Acquisition. New Delhi : Sage.

Stern, H. H. (1983). Fundamental Concepts of Language Teaching. Oxford : OUP.

PC: Pedagogy of Sanskrit
संस्कृत का षिक्षणषास्त्र

इकाई–1	संस्कृत की प्रकृति, उद्देष्य एवं पाठ्यचर्या की समझ

- संस्कृत की प्रकृति एवं विषेषताएं
- संस्कृत भाषा की संरचनागत विषेषताएं
- संस्कृत षिक्षण के उद्देष्य की समझ : बिहार राज्य द्वारा अनुमोदित कक्षा 6–12 का पाठ्यक्रम; एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनुमोदित संस्कृत पाठ्यक्रम; प्रत्येक स्तर दिए गए उद्देश्यों में परस्पर तार्किक संगतता
- स्कूली पाठ्यचर्या में संस्कृत का स्थान
- कक्षा षिक्षण में संस्कृत के आंचलिक भाषा के साथ संबंध

इकाई–2	विद्यार्थी–षिक्षकों में संस्कृत लेखन, पठन तथा वाचन क्षमता का संवर्धन

- लिखने को, सुनने, कहने तथा पढ़ने के साथ तारतम्यता में देख पाने की समझ का विकास : चिन्तन, सुनना, पढ़ना, मानसिक रूप में व्यवस्थित करना।
- विभिन्न विधाओं में अपने अनुभवों को रचनात्मकता के साथ लिखने की कुषलता विकसित करना।
- स्वयं के लेखन का मूल्यांकन करने के तरीकों के बारे में समझ बनाना।
- विद्यार्थी–षिक्षकों में रचनात्मक लेखन को विकासित करने के तरीकों तथा प्रक्रियाओं के बारे में समझ विकसित करना।

इकाई–3	संस्कृत साहित्य एवं व्याकरण षिक्षण

- संस्कृत साहित्य : श्लोक (पद्य), गद्य (निबंध, नाटक आदि)
- कक्षा 6–12 के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तकों में दी गई विधाओं की समझ एवं षिक्षण।
- व्याकरण षिक्षण की विविध विधियाँ एवं नवाचार : संस्कृत षिक्षण में व्याकरण का महत्त्व; कक्षा 6–12 के लिए संस्कृत के पाठ्यक्रम में दिए गए व्याकरणिक तत्वों के बारे में समझ; व्याकरणिक तत्वों का संदर्भानुसार षिक्षण करने की समझ
- संस्कृत व्याकरण और भाषा के अन्तर्संबंधों की समझ।

इकाई–4	संस्कृत षिक्षण, कक्षा प्रक्रिया एवं आकलन के तरीके

- श्रवण कौषल एवं इसके विकास की विधियाँ
- पठन कौषल एवं पठन कौषल के विकास की विधियाँ समस्याएँ एवं निदान
- लेखन कौषल की विभिन्न विधियाँ
- वाचन कौषल (मौखिक अभिव्यक्ति)
- संस्कृत षिक्षण : रचनात्मक तथा अन्य उपागमों के बारे में आलोचनात्मक समझ।
- कक्षा षिक्षण रणनीतियाँ एवं 'सीखने की योजना': षिक्षण पूर्व, षिक्षण करते हुए तथा षिक्षण पष्चात्।
- संस्कृत षिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन : संकल्पना एवं अवधारणा, विभिन्न विधाओं का मूल्यांकन, प्रष्न पत्र निर्माण कला, संस्कृत के षिक्षण में सतत एवं समग्र मूल्यांकन के उपयोग के बारे में समझ।

- आप्टे, डी. जी, 1960 : टीचिंग ऑफ संस्कृत इन सेकेण्ड्री स्कूल्स, आचार्य बुक डिपो, बड़ोदा
- चतुर्वेदी, आर. एस. : संस्कृत शिक्षण पद्धति
- त्रिपाठी, राधाबल्लभ 1999 : संस्कृत साहित्य; 20वीं शताब्दी, राष्ट्रिय –संस्कृत–संस्थानम्, नई दिल्ली
- पाण्डेय, रामशुक्ल, 2000 : संस्कृत–शिक्षण, मेरठ, विनोद पुस्तक भंडार, आगरा

- बोकील, वी. पी, 1956 : ए न्यू एप्रोच टू संस्कृत, चित्रशाला प्रकाशन, पूना
- भारत सरकार, शिक्षा–मंत्रलय : संस्कृत आयोग का प्रतिवेदन (1956–57)
- मानव संसाधन विकास (दिसम्बर 1990): राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की समीक्षा समिति की रिपोर्ट (प्रबुद्ध और मानवीय समाज की ओर)
- _____ : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986, 1992
- मिश्र, प्रभाशंकर, 1979 : संस्कृत–शिक्षण, चण्डीगढ़, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी
- मित्तल, संतोष, 2000 : संस्कृत–शिक्षण, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण, (जून 2009) : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र
- _____(मई 2006) : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
- _____(जून 2006) : सिलेबस फॉर क्लासेज एट द एलीमेन्ट्री लेवल, वाल्यूम–1
- _____(मार्च 2006) : सिलेबस फॉर सेकेन्ड्री एण्ड हायर सेकेण्ड्री क्लासेज, वाल्यूम 2
- _____(नवम्बर 2000) : विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
- _____(नवम्बर 2001) : गाइड लाइन्स एण्ड सिलेबाई फॉर अपर प्राइमरी स्टेज
- _____(नवम्बर 2001) : गाइड लाइन्स एण्ड सिलेबाई फॉर सेकेण्ड्री स्टेज
- _____(नवम्बर 2001) : गाइड लाइन्स एण्ड सिलेबाई फॉर हायर सेकेण्ड्री स्टेज
- _____(मई 1988) : प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम : एक रूपरेखा
- _____(फरवरी, 1988) : गाइड लाइन्स एण्ड सिलेबाई फॉर अपर प्राइमरी स्टेज
- _____(फरवरी 1988) : गाइड लाइन्स एण्ड सिलेबाई फॉर सेकेण्ड्री स्टेज
- _____(फरवरी 1995) : सिलेबस फॉर हॉयर सेकेण्ड्री स्टेज
- राज किशोर, 1975 : संस्कृत भाषा विज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- शर्मा, देवीदत्त : संस्कृत का ऐतिहासिक एवं संरचनात्मक परिचय, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी
- शर्मा, नन्दराम, 2007 : संस्कृत–शिक्षण, साहित्य चन्द्रिका, प्रकाशन, जयपुर

PC: Pedagogy of Maithili
मैथिलीक षिक्षणषास्त्र

इकाई–1	मैथिली विभिन्न रूप तथा मैथिलीक विकासक संक्षिप्त इतिहास ओ मैथिली सीखन–सिखएबाक लेल ओकर महत्व

- विभिन्न काल खण्ड सँ किछु रचनार्कें उदाहरण स्वरूप चुनिकऽ मैथिलीक स्वरूपर्कें बूझब।
- विभिन्न पत्र–पत्रिकामे प्रयुक्त मैथिलीक रूपर्कें बूझब।
- बी.एड. कक्षाक विद्यार्थी–षिक्षक द्वारा प्रयुक्त मैथिलीक आधार पर मैथिलीक स्वरू र्कें बूझब।
- मैथिलीक विकासक इतिहासक आधार पर मैथिलीक स्वरूपर्कें बूझब।
- उपर्युक्त सभ बिन्दुर्कें मैथिली सीखब–सिखएबाक (विद्यार्थी–षिक्षक सम्बन्ध, बहुभाषिकता, लोकतान्त्रिक कक्षा, कक्षा–प्रक्रिया आदि) क संदर्भ में बूझब।
- मैथिलीक वाचिक रूपक विविधतार्कें बूझब।
- मैथिलीक वाचिक ओ लिखित रूपक अन्तर्सम्बन्ध के बूझब।
- संविधानमे मैथिली

इकाई–2	मैथिली षिक्षण का उद्देष्य तथा पाठ्यपुस्तकक आलोचनात्मक समझ

- स्कूली पाठ्यचर्या मे मैथिलीक स्थान : मैथिली विषय ओंर माध्यम भाषाक रूपमे
- विद्यार्थी–षिक्षक बिहार राज्य द्वारा अनुमोदित कक्षा 6 सँ 12 मैथिलीक पाठ्यक्रम समीक्षात्मक समझ बना सकताह।
- विद्यार्थी–षिक्षक पाठ्यक्रममे प्रत्येक स्तर लेल देल गेल उद्देष्य में परस्पर तार्किक संगतताक समीक्षा करबाक क्षमता पाबि सकताह।
- विद्यार्थी–षिक्षक ई बुझि सकताह जो उच्च प्राथमिक (6–8), माध्यमिक (9–10) ओ उच्चतर माध्यमिक (11–12) कक्षा लेल उपयुक्त पाठ्यवस्तुक चयन करबाक आधार कोन–कोन अछि (यथा– शब्द, वाक्य संरचना, अनुच्छेद, तार्किकता, वैचारिक जटिलता, कहबी (लोकोक्ति), मुहावरा, अलंकार, छनद आदि)

इकाई–3	लिखबा के क्षमताक संवर्द्धन ओं लिखबाक प्रक्रियाक बारेमे समझ

- विद्यार्थी–षिक्षक सुनब, कहब तथा पढ़बाक संग 'लिखबाक' तारतम्यता र्कें बूझि सकताह, जेना–चिन्तन, सुनब, पढ़ब, मानसिक रूपसँ व्यवस्थित करब आदि।
- विद्यार्थी–षिक्षक विभिन्न विधामे अपन अनुभवर्कें रचनात्मकता संग लिखबाक कौषलल विकसित करसकता है।
- विद्यार्थी–षिक्षक लिखबाक मूल्यांकन हेतु विभिन्न तरीकाक बारेमे बूझि सकताह।
- विद्यार्थी–षिक्षक छात्रमे रचनात्मक लेखन क विकास करबाक तरीका ओ प्रक्रिया के बारे मे बूझि सकता है।

इकाई–4	मैथिली साहित्य ओ व्याकरण : समझओं षिक्षण

- साहित्ययक अर्थ
- शब्द–षक्तिक सामर्थ्य र्कें बूझब ओं ओकर षिक्षणमे उपयोग
- विद्यार्थी–षिक्षक बिहार राज्य में कक्षा 6–12 घरि लेल मैथिलीक पाठ्यपुस्तकमे देल गेल विधासमक विषेषताओं से अवगत करा सकता है।
- विद्यार्थी–षिक्षक उपर्युक्त विधा समर्कें बूझि षिक्षण में ओकर उपयोग करबाक ऊहि (समझ) पाबि सकताह।
- विद्यार्थी–षिक्षक बिहार राज्य में कक्षा 6–12 लेल अनुमोदित मैथिली पाठ्यक्रममे देल गेल व्याकरणिक तत्वक विषयमे बूझि सकताह।

- विद्यार्थी–षिक्षक उपर्युक्त व्याकरणिक तत्वकेँ संदर्भानुसार षिक्षण करबाक योजना बना सकताह।
- विद्यार्थी–षिक्षक ई बूझि सकताह जे मैथिली षिक्षणमे व्याकरणक की महत्व अछि ?
- विद्यार्थी–षिक्षक व्याकरण ओं भाषाक अन्तर्सम्बन्धक समझ बना सकताह।

इकाई–5	मैथिली : षिक्षण, कक्षा प्रक्रिया ओं मूल्यांकन

- षिक्षण समझ ओं षिक्षण विधिक चुनाव
- षिक्षण रणनीति ओं 'सीखने की योजना': षिक्षण पूर्व, षिक्षण काल ओ षिक्षण बाद
- एहि इकाई मे विद्यार्थी–षिक्षक रचनात्मक तथा आलोचनात्मक उपागम संग व्यवहारवादी उपागमक विषय मे आलोचनात्मक समझ बना सकता ह।
- विद्यार्थी–षिक्षक एकसँ अधिक षिक्षण विधिक उपयोग करबाक सम्भावना पर विचार कऽ सकताह।
- कक्षा–प्रक्रियाक संदर्भ मे कएल जएबाक तैयारीक सम्बन्धमे बूझि सकताह।
- कक्षामे भौतिक ओं मनोवैज्ञानिक षिक्षण–साधनक उपयोग करबाक बारेमे सोचि सकताह।
- विद्यार्थी–षिक्षक सतत मूल्यांकन अवधारणा बूझि सकताह।
- विद्यार्थी–षिक्षक समग्र मूल्यांकनक बारेमे बूझि सकताह।
- विद्यार्थी–षिक्षक मैथिलीक षिक्षणमे सतत ओं समग्र मूल्यांकनक उपयोगक विषय मे जानि सकताह।

- श्रीश, दुर्गानाथ झा (1991½. मैथिली साहित्यक इतिहास. दरभंगा : भारती पुस्तक केन्द्र.
- झा, दिनेश कुमार (1989½. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास. पटना : मैथिली अकादमी.
- झा, शक्ति घर (1986½. मैथिलीक स्वरूप विधान. पटना : मैथिली अकादमी.
- बासुकीनाथ झा (2006½. मैथिली साहित्यक रूपरेखा. पटना : चेतना समिति.
- गोविन्द झा (2008½. मैथिली भाषा का विकास. बिहार : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.

PC: Pedagogy of Angika
अंगिका का षिक्षणषास्त्र

इकाई–1	अंगिका भाषा की प्रकृति, उद्देष्य एवं पाठ्यचर्या की समझ

- अंगिका की प्रकृति एवं विशेषताएं
- अंगिका भाषा की संरचनागत विशेषताएं
- अंगिका षिक्षण के उद्देष्य की समझ : बिहार राज्य द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम तथा प्रत्येक स्तर पर दिए गए उद्देष्यों में परस्पर तार्किक संगतता
- स्कूली पाठ्यचर्या में अंगिका भाषा का स्थान
- कक्षा शिक्षण में अंगिका भाषा के आंचलिक भाषा के साथ संबंध

इकाई–2	विद्यार्थी–षिक्षकों में अंगिका लेखन, पठन तथा वाचन क्षमता का संवर्द्धन

- अंगिका भाषा में लिखने को, सुनने, कहने तथा पढ़ने के साथ तारतम्यता में देख पाने की समझ का विकास : चिन्तन, सुनना, पढ़ना, मानसिक रूप में व्यवस्थित करना।
- विभिन्न विधाओं में अपने अनुभवों को रचनात्मकता के साथ लिखने की कुषलता विकसित करना।
- अंगिका में स्वयं के लेखन का मूल्यांकन करने के तरीकों के बारे में समझ बनाना।
- अंगिका में विद्यार्थी–षिक्षकों के रचनात्मक लेखन को विकसित करने के तरीकों तथा प्रक्रियाओं के बारे में समझ विकसित करना।

इकाई–3	अंगिका साहित्य एवं व्याकरण षिक्षण

- अंगिका साहित्य की समझ
- अंगिका के पाठ्यपुस्तकों में दी गई विधाओं की समझ एवं षिक्षण।
- व्याकरण शिक्षण की विविध विधियाँ एवं नवाचार : अंगिका षिक्षण में व्याकरण का महत्त्व; अंगिका के पाठ्यक्रम में दिए गए व्याकरणिक तत्वों के बारे में समझ; व्याकरणिक तत्वों का संदर्भानुसार षिक्षण करने की समझ
- अंगिका व्याकरण और भाषा के अन्तर्संबंधों की समझ।

इकाई–4	अंगिका षिक्षण, कक्षा प्रक्रिया एवं आकलन के तरीके

- श्रवण कौशल एवं इसके विकास की विधियाँ
- पठन कौशल एवं पठन कौशल के विकास की विधियाँ, समस्याएँ एवं निदान
- लेखन कौशल की विभिन्न विधियाँ
- वाचन कौशल (मौखिक अभिव्यक्ति)
- अंगिका षिक्षण : रचनात्मक तथा अन्य उपागमों के बारे में आलोचनात्मक समझ।
- कक्षा षिक्षण रणनीतियाँ तथा 'सीखने की योजना' : षिक्षण पूर्व, षिक्षण करते हुए तथा षिक्षण पश्चात्।
- अंगिका षिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन : संकल्पना एवं अवधारणा, विभिन्न विधाओं का मूल्यांकन, प्रश्न पत्र निर्माण कला, संस्कृत के षिक्षण में सतत एवं समग्र मूल्यांकन के उपयोग के बारे में समझ।

PC: Pedagogy of Bengali
बंगाली का षिक्षणषास्त्र

Unit-1	Nature, Scope and Aim

- The place and importance of the mother tongue in life and education.
- Aims and objectives of teaching the mother tongue.
- Principles and methods to be followed in different school stages for Bengali teaching.
- Need for professional orientation of a teacher in Bengali
- Study of the Prescribed courses in Bengali in Secondary and Higher Secondary classes in Bihar

Unit-2	The development of Bengali Literature

- The origin and development of Bengali Prose- importance of Vidyasagar, Bankim Chandra
- The origin and development of Bengali Novel and Short stories – Importance of Bankim Chandra, Rabindranath Tagore and Sarat Chandra.
- The origin and development of Bengali drama – Madhusudan ,Dinabandhu, Girish Ghosh
- The origin and development of Modern Bengali Poetry- importance of Madhusudan Dutta, Biharilal Chakravorty, Rabindranath.
- Characteristics of Bengal Renaissance or Nava jagran in 19^{th} century and its influence on literature and life of Bengal.
- Brief history of Bengali Language – Origin and development, upto Magadhi Prakrit stage. Bengali shabda bhandar.

Unit-3	Bengali speaking, reading and writing

- Influence of local dialects on speech habits
- The importance of the study of the phonetics for language teachers. Reading loud, silent, intensive and extensive.

- Qualities of good reading.
- Qualities of good hand writings.
- Problems of Bengali speaking.
- Causes of Bengali spelling mistakes and corrective measures.

Unit-4	Bengali: Curriculum, Pedagogy and Assessment

- Methods of teaching different areas – Prose, poetry, essay writing, grammar and composition
- Teaching aids – aims and utility – classifications and their uses.
- Learning plan for Bengali: Nature and structure
- Test and Evaluation **:** Planning of unit test and achievement test in Bengali; Objectives and Evaluation in Bengali teaching and importance of feed-back; Preparation of achievement test in Bengali—oral and writing in Bengali; Evaluation of creative writing in Bengali.
- Literary activities: Recitation, Debates, Lecture, Music, Dance, Drawing and Painting; Little magazine and wall magazines; Literacy discussion and acting drama

PC: Pedagogy of Urdu

Unit-1	Nature, Scope and Aims

- Language- its meaning and functions. The role of mother-tongue in the education of a child.
- Special features of Urdu language and its universal significance- the cultural, practical, literary and linguistic.
- Aims and objectives of Teaching Urdu as mother-tongue.
- The principles of the development of curriculum with special reference to Urdu.
- The place of Urdu in school curriculum with special reference to B.S.E.B.
- Development of Urdu language in India with special focus on Bihar

Unit-2	Understanding pedagogy of Urdu

- General principles of language teaching with special reference to Urdu as mother-tongue.
- Problems of teaching the mother-tongue.
- Making Learning Plan for Urdu: Nature and structure
- Skills of Teaching: basic skills, Core skills and planning micro-lessons for their development.
- Methods of teaching Urdu for Non-Urdu speaking people.
- Teaching Aids: Blackboard, Picture, Chart and Map, Models, Flash cards, Puppets, Magnetic board, Radio, Tape-recorder, Television, Video, Overhead projector, LCD projector, Gramophone and lingua phone, Computer Assisted Urdu language learning.
- Language laboratory and its importance in the teaching of Urdu Language.

Unit-3	Specific Instructional Strategies

- Teaching of Prose; Dastan, Afsana, Novel, Drama, Sawanih, Makateeb and Insha. Major steps in the planning of a prose lesson.
- Teaching of Poetry-Nazam, Ghazal and Rubaee; Objectives of poetry lesson. Importance of recitation, Major steps in a poetry plan.
- Teaching of Grammar: Place of grammar in the teaching of Urdu, Inductive and Deductive methods and their relative merits.
- Teaching of Reading: Attributes of good reading, Types of reading; Scanning, Skimming, Intensive reading, Extensive reading, Silent reading, Reading aloud. Various methods of reading; The phonic method, Alphabetical method, Word method and Sentence method.

- Teaching of vocabulary- Its ways and means.
- Teaching of writing and composition: Khutoot Nigari (Letter writing), Mazmoon Nigari (Essay writing) and Ikhtesar Nigari (Précis writing).
- Other literary activities in Urdu: Khush Nawesi, Mushairah, Baitbazi, Bazm-e-Adab, Adbi Numaish, Adbi Maqale, Mojallah wa Moraqqa.

Unit-4	Evaluation Techniques

- Concept and types of Evaluation.
- Concept and Components of Continuous Comprehensive Evaluation (CCE).
- Characteristics of a good test.
- Construction of achievement test in Urdu with Essay type, Short answer type and Objective type items.
- Ways of testing reading, writing, speaking, grammar and vocabulary.
- Qualities of an Urdu Teacher- an evaluative approach.

Rai, Alok. 2001 India Nationalism: Tracks for Times: Orient Longman

Shahabuddin,Syed *Economic and Political Weekly*Vol. 34, No. 10/11 (Mar. 6-19, 1999), p. 566

Russell, Raplh.Urdu in India since Independence *Economic and Political Weekly* Vol. 34, No. 1/2 (Jan. 2-15, 1999), pp. 44-48

Ather Farouqui, Urdu Education in India: Four Representative States*Economic and Political Weekly* Vol. 29, No. 14 (Apr. 2, 1994), pp. 782-785

Reflections on Teaching Urdu in GermanyChristina Oesterheld*Economic and Political Weekly*Vol. 37, No. 2 (Jan. 12-18, 2002), pp. 112-115

Minorities, Education and Language: The Case of UrduHasan Abdullah*Economic and Political Weekly*Vol. 37, No. 24 (Jun. 15-21, 2002), pp. 2288-2292

A History of Urdu Literature. Second Edition, Revised and Enlarged. by Muhammad Sadiq

Trouble over Urdu and ArabicMukundan C. Menon*Economic and Political Weekly*Vol. 15, No. 35 (Aug. 30, 1980), pp. 1467-1468

Perspectivs on Urdu Language and Education in India, Mazhar Hussain., *Social Scientist*Vol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 1-4

Linguistic Diversity in Global Multicultural Civic Politics: The Case of Urdu in India, Jagdish S. Gundara S*ocial Scientist*Vol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 38-56

Urdu Language and Education in India, David J. Matthews, *Social Scientist*Vol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 57-72

The Appeal of Urdu: Its Significance and Potential. Daniel Gold. *Social Scientist*Vol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 73-79

Abdullah, Saleem. Urdu Kaise Parhaen, Aligarh: Educational Book House.

Alderson, C. (2000). Assessing Reading, New York: Cambridge UniversityPress.

Bachman, L. and A. Palmer.(1996). Language Testing in Practice, New York:Oxford University Press.

Beg, Mirza Khalil. Urdu Zaban Ki Tareekh, Aligarh: Educational Book House.

Brown, H. D. (2007). Principles of Language Learning and Teaching, 5th Edition, White Plain, New York: Pearson Education Inc.

Buck, G. (2001). Assessing Listening, New York: Cambridge University Press.

Douglas, D. (2000). Assessing Language for Specific Purposes, New York: Cambridge University Press.

Lado, R. (1983). Language Teaching: A Scientific Approach, New Delhi: McGraw Hill.

Larsen-Freeman, D. (2000). Techniques and Principles in Language Teaching, 2nded. New York: Oxford University Press.

Littlewood, W. (1981). Language Teaching: An Introduction, Cambridge: Cambridge University Press.

McNamara, T. (2000). Language Testing, New York: Oxford University Press.

Moinuddin. (2002). Urdu Zaban Ki Tadrees, New Delhi: NCPUL.

Quazi, Shahbaz & Akhtar, Muhammad Naeem (2007). Urdu Tadreesi Tareeqa, Nagpur: Authors.

Read, J. (2000). Assessing Vocabulary, New York: Cambridge University Press.

Richards, J. C. (2001). Curriculum Development in Language Teaching, New York: Cambridge University Press.

Richards, J. C. and T. S. Rodgers. (2001). Approaches and Methods in Language Teaching, 2nd ed. New York: Cambridge University Press.

Sherwani, Inamullah Khan (1989). Tadrees Zaban-e-Urdu, Kolkata: Anjali Ghose.

Subbiah, Pon (2003). Test of Language Proficiency: Urdu, Mysore: Central Institute of Indian Languages.

Tabassum, Razia Aamozish-e-Urdu, Patna: Author.

Weigle, S. (2002). Assessing Writing, New York: Cambridge University Press.

Woodward, T. (2001).Planning Lessons and Courses: Designing Sequences of Work for the Language Classroom, New York: Cambridge University Press.

PC: Pedagogy of Arabic

Unit-1	Nature, Scope and Aims

- Language- its meaning and functions. The role of mother-tongue in the education of a child.
- Special features of Arabic language and its universal significance- the cultural, practical, literary and linguistic.
- Aims and objectives of Teaching Arabic as a foreign language.
- The principles of the development of curriculum with special reference to Arabic.
- The place of Arabic in school curriculum with special reference to B.S.E.B.
- Development of Arabic language in India with special focus on Bihar

Unit-2	Understanding pedagogy of Arabic

- General principles of language teaching with special reference to Arabic as mother-tongue.
- Problems of teaching the mother-tongue.
- Salient features of a good text-book in Arabic. Comparative Analysis of prescribed text-books of different Boards

- Making Learning Plan for Arabic: Nature and structure
- Skills of Teaching: basic skilss, Core skills and planning micro-lessons for their development.
- Translation and Direct method for teaching Arabic:advantages, limitations and comparison
- Teaching Aids: Blackboard, Picture, Chart and Map, Models, Flash cards, Puppets, Magnetic board, Radio, Tape-recorder, Television, Video, Overhead projector, LCD projector, Gramophone and lingua phone, Computer Assisted Arabic language learning.
- Language laboratory and its importance in the teaching of Arabic Language.

Unit-3	Specific Instructional Strategies

- Teaching of Prose; Maqamah, Qissah (Story) and Riwayah (Novel), Major steps in the planning of a prose lesson.
- Teaching of Poetry-Tashbeeb, Ghazal, Madah, Heja, Rasa and Fakhra; Objectives of poetry lesson. Importance of recitation, Major steps in a poetry plan.
- Teaching of Grammar: Place of grammar in the teaching of Arabic, Inductive and Deductive methods and their relative merits.
- Teaching of Reading: Attributes of good reading, Types of reading; Scanning, Skimming, Intensive reading, Extensive reading, Silent reading, reading aloud.Various methods of reading; The phonic method, alphabetical method, word method and sentence method.
- Teaching of vocabulary- Its ways and means.
- Teaching of writing and composition: Letter writing, Essay writing and Précis writing.
- Other literary activities in Arabic: Elegant writing, Musabiqah-al-Abyat, MutahiratunShe'riah.

Unit-4	Evaluation Techniques

- Concept and types of Evaluation.
- Concept and Components of Continuous Comprehensive Evaluation (CCE).
- Characteristics of a good test.
- Construction of achievement test in Arabic with Essay type, Short answer type and Objective type items.
- Ways of testing reading, writing, speaking, grammar and vocabulary.
- Qualities of an Arabic Teacher- an evaluative approach.

Alderson, C. (2000). Assessing Reading, New York: Cambridge UniversityPress.

Al-Naqa, Mahmum K. (1978). Asasiyat Talim-al-Lugha-al Arabic Li Ghairal- Arabic, ALESCO, Khartoum (Sudan), International Institute of Arabic Language.

Bachman, L. and A. Palmer.(1996). Language Testing in Practice, New York: OxfordUniversity Press.

Bailey, K. (1997). Learning About Language Assessment: Dilemmas, Decisions, and Directions, Boston: Heinle & Heinle.

Brown, H. D. (2007). Principles of Language Learning and Teaching, 5th Edition, white Plain, New York: Pearson Education Inc.

Buck, G. (2001). Assessing Listening, New York: Cambridge University Press.

Douglas, D. (2000). Assessing Language for Specific Purposes, New York: Cambridge University Press.

Khan, Muhammad Sharif Arbi Kaise Parhaen, Aligarh: Educational Book House.

Lado, R. (1983). Language Teaching: A Scientific Approach, New Delhi: McGraw Hill

Larsen-Freeman, D. (2000). Techniques and Principles in Language Teaching, 2nd ed. New York:

Oxford University Press.

Littlewood, W.(1981). Language Teaching: An Introduction, Cambridge: Cambridge University Press.

McNamara, T. (2000). Language Testing, New York: Oxford University Press.

Nadvi, A.H. (1989). Arabi Adab Ki Tareekh, New Delhi: NCPUL.

Read, J. (2000). Assessing Vocabulary, New York: Cambridge University Press.

Richards, J. C. (2001). Curriculum Development in Language Teaching, New York: Cambridge University Press.

Richards, J. C. and T. S. Rodgers (2001). Approaches and Methods in Language Teaching, 2nd ed.

NewYork: Cambridge University Press.

Rivers, W.M. (1968). Teaching Foreign Language skills, Chicago University Press.

Samak, S.M. (1975). Fan-al-Tadris-bil-Lugha-al Arabic, Cairo: Al- Anglo- Misriya.

Weigle, S. (2002). Assessing Writing, New York: Cambridge University Press.

Woodward, T. (2001).Planning Lessons and Courses: Designing Sequences of Work for the Language Classroom, New York: Cambridge University Press.

PC: Pedagogy of Persian

Unit-1	Nature, Scope and Aims

- Language- its meaning and functions. The role of mother-tongue in the education of a child.
- Special features of Persian language and its universal significance- the cultural, practical, literary and linguistic.
- Aims and objectives of Teaching Persian as a foreign language.
- The principles of the development of curriculum with special reference to Persian.
- The place of Persian in school curriculum with special reference to B.S.E.B.
- Development of Persian language in India with special focus on Bihar

Unit-2	Understanding pedagogy of Persian

- General principles of language teaching with special reference to Persian as mother-tongue.
- Problems of teaching the mother-tongue.
- Salient features of a good text-book in Persian. Comparative Analysis of prescribed text-books of different Boards
- Making Learning Plan for Persian: Nature and structure
- Skills of Teaching: Basic skills, Core skills and planning micro-lessons for their development.
- Translation and Direct Method for teaching Persian: Advantages, limitations and comparison
- Teaching Aids: Blackboard, Picture, Chart and Map, Models, Flash cards, Puppets, Magnetic board, Radio, Tape-recorder, Television, Video, Overhead projector, LCD projector, Gramophone and lingua phone, Computer Assisted Persian language learning.
- Language laboratory and its importance in the teaching of Persian Language.

Unit-3	Specific Instructional Strategies

- Teaching of Prose; Dastan-e-Kotah (Short Story), Hikayat (Story), Ruman (Novel),Tamseel (Drama), Tanqeed (Criticism), Sawanih (Biography) and KhudNavist (Autobiography), Major steps in the planning of a prose lesson.

- Teaching of Poetry-Hamd, Na't, Ghazal, Rubaee, Masnawi and Qaseedah; Objectives of poetry lesson. Importance of recitation, Major steps in a poetry plan.
- Teaching of Grammar: Place of grammar in the teaching of Persian, Inductive and Deductive methods and their relative merits.
- Teaching of Reading: Attributes of good reading, Types of reading; Scanning, Skimming, Intensive reading, Extensive reading, Silent reading, reading aloud. Various methods of reading; The phonic method, alphabetical method, word method and sentence method.
- Teaching of vocabulary- Its ways and means.
- Teaching of writing and composition: Letter writing, Essay writing and Précis writing.
- Other literary activities in Persian: Elegant writing, Baitbazi, Mushaira etc.

Unit-4	**Evaluation Techniques**

- Concept and types of Evaluation.
- Concept and Components of Continuous Comprehensive Evaluation (CCE).
- Characteristics of a good test.
- Construction of achievement test in Persian with Essay type, Short answer type and Objective type items.
- Ways of testing reading, writing, speaking, grammar and vocabulary.
- Qualities of a Persian Teacher- an evaluative approach.

Ash'ari, Mohammad (1994). Teaching Persian by Persian. Tehran: Monir: Cultural Centre Publication.

Avchinika, A. & A. Mohammed Zadeh (1996). Teaching Persian Language, Moscow: University of Moscow.

Bachman, L. and A. Palmer (1996). Language Testing in Practice, New York: Oxford University Press.

Baghcheban (Pirnazar), Samineh(1971). A Guide to Teach Persian to Non-Persian Speakers. Tehran: Ministry of Art and Culture.

Baghcheban (Pirnazar), Samineh (1971). Persian for Non-Persian Speakers. Tehran: Ministry of Art and Culture.

BananSadeghian, Jalil (1997). Persian for Non-Natives (Volume I) Tehran:Council for Promotion of Persian Language and Literature.

BananSadeghian, Jalil (1998) Persian for Non-Natives (Volume II) Tehran: Council for Promotion of Persian Language and Literature.

Brown, H. D. (2007). Principles of Language Learning and Teaching, 5th Edition, white Plain, New York: Pearson Education Inc.

Larsen-Freeman, D. (2000). Techniques and Principles in Language Teaching, 2nded. New York: Oxford University Press.

Mirdehghan, Mahin-naz(2002). Teaching Persian to Native speakers of Urdu and Urdu to Native speakers of Persian. Tehran: Alhoda International.

Moshiri, Leila(1995). Colloquial Persian. London: Routledge.

Rassi, Mohsen(2000). An Introduction to Persian. Tehran: Council for Promotion of Persian Language and Literature.

Richards, J. C. and T. S. Rodgers.(2001). Approaches and Methods in Language Teaching, 2nd ed. NewYork: Cambridge University Press.

Rivers, W.M. (1968). Teaching Foreign Language skills, Chicago University Press.

Samareh, Yadollah. (1993). Persian Language Teaching (AZFA: EnglishVersion) Elementary Course,Book 1-5. Tehran: Al-hoda Publisher and Distributors.

Woodward, T. (2001).Planning Lessons and Courses: Designing Sequences of Work for the Language Classroom, New York: Cambridge University Press.

Zarghamian, Mehdi. (1997).The Persian Language Training Course: Preliminary to Advanced, Volume-I& II, 1999 Vol. III, Tehran: Council for Promotion of Persian Language and Literature.

Zarghamian, Mehdi. 1999. Basic Vocabulary and Basic Grammar: Teaching Persian for Non-native speakers, Tehran: Council for Promotion of Persian Language and Literature.

OPTIONAL COURSE (OC)

Any one of the following					
Course Code	**Course Title**		**Marks**		
			Internal	External	Total
C-11 (a)	Basic Education	2^{nd} year	10	40	50
C-11 (b)	Health, Yoga and Physical Education				
C-11 (c)	Guidance and Counseling				
C-11 (d)	Environmental Education				
Other relevant optional courses such as Teacher Education, Rural Education, etc. may also be introduced.					

C-11 (a)
Basic Education

बुनियादी षिक्षा की अवधाणा के पीछे महात्मा गांधी द्वारा किए गए वे तमाम प्रयोग हैं जिनको उन्होंने दक्षिण अफ्रिका और भारत में किया, इसलिए बुनियादी षिक्षा को समझने के लिए उसकी पृष्ठभूमि में जाना जरूरी है। अक्तूबर, 1937 में गांधी जी के सभापतित्व में वर्धा में षिक्षा–क्षेत्र के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें बुनियादी षिक्षा की अवधारणा को मूर्त रूप दिया गया जिसके आधार पर बुनियादी विद्यालयों की स्थापना हुई। यह भी विषेष बात है कि सबसे पहले बिहार से ही बुनियादी विद्यालयों के स्थापना की शुरूआत हुई और आज भी इस राज्य में बहुत सारे बुनियादी विद्यालय हैं हालाकि उनका स्वरूप विकृत हो गया है। अतः बिहार राज्य के संदर्भ में बुनियादी षिक्षा के बारे में विषेष समझ बनाना इस विषय का एक प्रमुख उद्देष्य है। यदि देखा जाए तो बुनियादी षिक्षा वाले विद्यालयों ने औपनिवेषिक मानसिकता की गुलामी से मुग्ध तात्कालीन समाज को यह आईना दिखाया कि हमारे देष की हमारी षिक्षा और उस षिक्षा के लिए हमारे विद्यालय भी हो सकते हैं। उस समय, बुनियादी विद्यालयों ने भारतीय जनता के समक्ष विद्यालयी षिक्षा के लिए एक नया विकल्प प्रस्तुत किया, जिसमें खुद का इज़ाद किया हुआ पढ़ने–लिखने का अपना एक अनुठा तरीका था। एक प्रकार से, बुनियादी षिक्षा ने देष के राष्ट्रीय चरित्र को प्रस्तुत किया, जिसमें देष के गांवों को केन्द्र में रखा और गांव के हर कारीगर व्यक्ति के हुनर को विद्यालय से जोड़ने का प्रयास किया गया। किसान, कुम्हार, बढ़ई, लोहार, आदि उत्पादक वर्गों के पारम्परिक षिल्प और श्रम को महत्व देते हुए उनके कौषलों को वैज्ञानिक ज्ञान की प्राप्ति का माध्यम बनाया गया। बुनियादी विद्यालयों ने षिक्षा की पाठ्यचर्या को समाज के कार्यसंस्कृति के साथ ऐसे पिरोया, जिससे सीखना मात्र एक शैक्षिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज उपयोगी ज्ञान का कर्म बन सके और राष्ट्र के विकास में भूमिका निभा पाए। इस क्रम में, बुनियादी षिक्षा के सहसम्बंधीय सिद्धांतों को समझना जरूरी है जो प्रषिक्षुओं को एक अलग प्रकार के सषक्त षिक्षणषास्त्रीय दृष्टिकोण से अवगत कराते हैं। लेकिन, इतना सषक्त षिक्षणषास्त्र और प्रभावी ज्ञान प्रक्रिया होने के बावजूद, इसे समाज ने नजरंदाज कर दिया। आज, यह जरूरी है कि बुनियादी षिक्षा की पाठ्यचर्या को पुनः विद्यालयों में स्थापित किया जाए। इसके लिए विद्यालय, समाज और षिक्षक, तीनों की तैयारी जरूरी है, जिसके लिए इस विषयपत्र को यहां प्रस्तुत किया गया है। इसमें चार इकाईयों को इस क्रम में दिया गया है कि प्रषिक्षुओं की गहरी समझ इसके प्रति बन सके।

Unit-1	
गांधी दर्षन की समझ	**Understanding Gandhian Philosophy**
• महात्मा गांधी का जीवन दर्षन : इसका बुनियादी षिक्षा के सिद्धांतों व कार्यों पर प्रभाव • महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण अफ्रिका और भारत मे किए गए उन प्रयोगों की समीक्षा जिसके आलोक में बुनियादी षिक्षा का उद्भव हुआ	• Gandhian philosophy of Life: Its bearing on the principles and the practice of Basic Education . • A review of the different experiments and experiences of Mahatma Gandhi made in South Africa and in India which lead to the evolution of Basic Education.

Unit-2	
बुनियादी षिक्षा व्यवस्था : अवधारणा, विकास एवं नीतिगत प्ररिप्रेक्ष्य	**Basic Education system: Concept, development and policy perspectives**
• बुनियादी षिक्षा की अवधारणा एवं अंतर्निहित मान्यताएं • बुनियादी षिक्षा की व्यवस्था : पृष्ठभूमि एवं विकास (वर्धा समिति और उसके बाद) • बुनियादी षिक्षा का बिहार में विकास • बुनियादी षिक्षा से सम्बंधित नीतिगत परिप्रेक्ष्य : महत्वपूर्ण आयोगों, समितियों व दस्तावोजों द्वारा इसके बारे में की गई अनुषंसाओं का विष्लेषणात्मक समझ	• The concept and inherent assumptions of Basic Education; • Basic Education System: Backdrop and its development (Wardha Committee and after) • The Development of Basic Education System in Bihar • Policy perspectives related to Basic Education: An analytical understanding of the recommendations made by the important committees, commissions and documents

Unit-3	
सहसम्बंध का सिद्धांत एवं इसके षिक्षणषास्त्रीय आयाम	**The Principle of Correlation and its pedagogical aspects**
• उत्पादक गतिविधियों के साथ सहसम्बंध • भौतिक परिवेष के साथ सहसम्बंध • सामाजिक परिवेष के साथ सहसम्बंध • बच्चों के अपने अनुभवों के साथ सहसम्बंध	• Correlation with productive activity • Correlation with the physical environment • Correlation with the social environment • Correlation with children's experiences

Unit-4	
बुनियादी षिक्षा : पाठ्यचर्या, विद्यालय और षिक्षक	**Basic Education: Curriculum, School and Teacher**
• बुनियादी षिक्षा की पाठ्यचर्या : विष्लेषण एवं समीक्षा तथा सामान्य स्कूली पाठ्यचर्या कें साथ तुलनात्मक समझ • बुनियादी षिक्षा की पाठ्यचर्या में आकलन की प्रकृति • समकालीन परिदृष्य के आलोक में बुनियादी षिक्षा की पाठ्यचर्या : उद्देष्य, संरचना और ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया • बुनियादी विद्यालय : संगठनात्मक व्यवस्था, अवसंरचना, कार्यप्रणाली, दैनिक कार्य की रूपरेखा, समुदाय के साथ सम्बंध • बुनियादी विद्यालय के षिक्षक : अपेक्षा एंव वृत्तिक तैयारी	• The curriculum of Basic Education: Analysis and review; Comparitive understanding with the general school curriculum; • Nature of Assessment in the curriculum of Basic Education • Curriculum of Basic Education for contemporary scenario: Objectives, structure and process of knowledge generation • Basic Schools: Organizational set up, infrastructure, functioning, routine work, relation with community • Teachers for Basic Education: Expectations and professional preparation

C-11 (b)

Health, Yoga and Physical Education
स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक षिक्षा

व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक विकास के संदर्भ में स्वास्थ्य, योग एवं शरीरिक शिक्षा के महत्त्व को देखा जा सकता है। बदलते समय व परिवेश के अनुसार हमारे जीवनशैली में भी कई बदलाव आ रहे हैं जिससे हमारे शारीरिक और मानसिक, दोनो पक्षों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। उदाहरण के तौर पर, आज के समय में स्वास्थ्य सम्बंधी रोग लगातार बढ़ते जा रहे हैं और अपने स्वास्थ्य के प्रति हमारा ध्यान कम होता जा रहा है। इसलिए, कहीं न कहीं, ऐसी षिक्षा की जरूरत है जो इस समस्या के प्रति हमें पहले से सजग और सक्षम बनाये। इसी बात को ध्यान में रखते हुए यह महसूस किया गया कि सजगता और सक्षमता की शुरूआत विद्यालयों से होनी चाहिए ताकि षिक्षार्थी आरम्भ से ही ऐसी जीवन शैली को अपनाये जिसमें वे अपने शरीर और मन को सम्मान दे पाएं। अतः स्वास्थ्य, योग और शारीरिक शषिक्षा को विद्यालयी पाठ्यचर्या का अंग बनाने पर जोर दिया जा रहा है और इसके लिए षिक्षकों की तैयारी भी अपेक्षित है। जब तक षिक्षक इस विषय के महत्व को नहीं समझेंगे तब तक वे विद्यालयों में इसके प्रति बाकी लोगों को सजग नहीं बना पाएंगें। क्योंकि, हर व्यक्ति के जीवन से जुड़ा विषय होने के बावजुद, अब तक इस विषय को विद्यालयी पाठ्यचर्या में गम्भीरता से नहीं लिया जाता रहा है, जो कि स्वयं में इस विषय के लिए एक चुनौती है। यहां यह अपेक्षा की जाती है कि प्रषिक्षुओं को इस विषय के अध्ययन और जीवन प्रयोग से जो दृष्टि मिलेगी उसे वे विद्यालय में भी उतार पाएंगे। इस विषय के पाठ्यक्रम में चार इकाइयां हैं, जिसमें सबसे पहली इकाई स्वास्थ्य षिक्षा से सम्बंधित है। इस इकाई में स्वास्थ्य की सामान्य समझ और उसके चुनौतियों के प्रति उचित दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया गया है। यह एक व्यावहारिक षिक्षा है, जो न सिर्फ स्वास्थ्यवर्धक तरीकों का ज्ञान करयेगी, बल्कि उन आदतों के निर्माण के लिए अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण में भी महत्पूर्ण भूमिका निभायेगी। अध्ययन व अध्यापन के लिए भी शिक्षार्थियों व षिक्षकों का स्वस्थ्य होना आवश्यक है। स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से प्रशिक्षुओं को स्वास्थ्य के प्रति संवेदशील बनाया जाएगा। दूसरी इकाई में योग और शारीरिक षिक्षा की चर्चा की गई है। योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है जिसके कई शैक्षिक निहितार्थ हैं। यह व्यायाम मात्र नहीं है बल्कि इससे मानसिक स्वास्थ्य व एकाग्र चिंतन का संवर्द्धन भी होता है। शारीरिक षिक्षा के रूप में खेलों के महत्व को भी यहां समझने की कोषिष तीसरी इकाई में की गई है। और अंत में, उपरोक्त सभी बिन्दुओं की समझ को विद्यालय में कैसे सम्मिलित किया जाए और उसमें षिक्षक की क्या भूमिका हो, इसकी चर्चा चौथी इकाई में की गई है।

Unit-1	
स्वास्थ की समझ	**Understanding Health**
• स्वास्थ्य : अवधारणा, महत्व एवं सम्बंधित कारक • बच्चों एवं किषोरों के स्वास्थ्य सम्बंधी जरूरतें • भोजन एवं पोषण : खाने की आदतें, खाने का समय, पोषक तत्व एवं उनका कार्य, भोजन को लेकर साफ–सफाई, कुपोषण, मोटापा, आदि के मुद्दे • सामान्य स्वास्थ्य समस्याएं एवं रोग : कारण, रोकथाम एवं ईलाज, प्रतिरक्षण एंव प्राथमिक चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवाएं एवं जागरूकता कार्यक्रम • स्वास्थ्य, इसकी समस्याएं और उपचार सम्बंधी देषज ज्ञान	• Health: Concept, importance and related factors. • Health needs of children and adolescents. • Food and Nutrition: Food habits, Timing of food, Nutrients and their functions, Practices related to food hygiene, Malnutrition including obesity . • Common health problems and diseases: Causes, prevention and cure, immunization and first aid, health services and awareness programs. • Indigenous knowledge about health, its issues and cure.

Unit-2	
योग और शारीरिक षिक्षा	**Yoga and Physical Education**
• योग : अर्थ एवं महत्व; योगासन, क्रिया एवं प्राणायाम करना • विद्यालय एवं कक्षाओं की गतिविधियों में योग का समावेष • शारीरिक षिक्षा : अवधारणा, प्रमुख अवयव; व्यायाम; सम्बंधित देषज ज्ञान; नीतिगत परिप्रेक्ष्य • शारीरिक षिक्षा को लेकर विभिन्न संस्थाओं (विद्यालय, परिवार, मीडिया एवं खेल संगठन) की भूमिका; शारीरिक षिक्षा कार्यक्रम	• Yoga: meaning and importance of yoga, practicing *yogasanas*, *kriyas* and *pranayams*. • Ingrating Yoga in school and classroom practices • Physical Education: Concept and components, physical exercises, related indigenous knowledge, policy perspectives • Role of institutions (school, family, media and sports organizations), physical education programmes

Unit-3	
खेल गतिविधियां	**Games and sports**
• खेलों के प्रकार एवं प्रत्येक षिक्षार्थी के लिए उनका महत्व • एथलेटिक्स, खेल, लयवद्ध व्यायाम गतिविधियां, जिम्नास्टिक • खेलों का आयोजन : नियमों की समझ, योजना एवं प्रबंधन • ओलम्पिक्स, राष्ट्रमंडल खेल, राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय खेल आयोजनों एवं संस्थाओं की जानकारी	• Different types of Games and Sports and their importance for each learner • athletics, games, rhythmic activities, gymnastics • Organization of games and sports: understanding rules and regulations; Planning and management • About Olympics, Commonweath and National games about the state level sports events and authorities

Unit-4	
स्वास्थ्य, योग और शारीरिक षिक्षा : पाठ्यचर्या, विद्यालय और षिक्षक	**Health, Yoga and Physical Education: Curriculum, School and Teacher**
• स्वास्थ, योग एवं **शारीरिक** षिक्षा : विद्यालयी पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक विष्लेषण; समेकित पाठ्यचर्या उपागम • स्वास्थ, योग एवं **शारीरिक** षिक्षा का विद्यालयों में स्थान : योजना, संसाधनों का सृजन एवं उपयोगिता, विद्यार्थियों का इस क्षेत्र में भविष्य • स्वास्थ, योग एवं **शारीरिक** षिक्षा के षिक्षक : पेषेवर तैयारी तथा विद्यालय में भूमिका	• Health, Yoga and Physical Education: A critical analysis of school curriculum; Integrated curriculum approach • Spaces for Health, Yoga and Physical Education in School: Planning, resource creation and optimum utility; future prospects for students • Teacher for Health, Yoga and Physical Education: Professional Preparation and role in school

C-11 (c)
Guidance and Counselling
मार्गदर्षन एवं परामर्ष

आज की षिक्षा में षिक्षार्थियों को न सिर्फ नए–नए ज्ञान का अनुभव हो रहा है बल्कि उनके समक्ष नयी–नयी चुनौतियां भी आ रही हैं। षिक्षार्थियों के जीवन में सामाजिक, मानसिक और शैक्षिक, तीनों प्रकार के दबाव लगातार हावी हो रहे हैं। समाज की उनके प्रति अपेक्षा बढ़ रही है जिसमें अभिभावकों व समुदाय के प्रति आकांक्षाओं पर खरा उतरने का दबाव षिक्षार्थियों को कई प्रकार से प्रभावित कर रहा है। वे क्या करें कि समाज की अपेक्षा को वे पूरा कर पाएं, इसके लिए सही दिषा की खोज में वे सदैव लगे रहते है। इसके साथ ही, षिक्षा के बदलते स्वरूप एवं प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति भी उनके समझ एक चुनौती प्रस्तुत कर रही है और इन सब के कारण उनका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है जिसके परिणाम स्वरूप हम पाते हैं कि बच्चों में षिक्षा के प्रति उपेक्षा या अनपेक्षित व्यवहार, आत्महत्या और हिंसा की प्रवृतियां बढ़ती जा रही हैं। शोधों में पाया गया है कि अपने भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना बच्चों में बहुत शुरूआत से ही आने लगी है जिसके कारण वे अपने स्वाभाविक जीवन को छोड़कर उस चिंता के प्रति सक्रिया होते दिखते हैं जिससे उनके सामाजिक व सांस्कृतिक सम्बंध कमजोर हो रहे हैं। इसलिए, यह जरूरी है कि विद्यालय वह स्थान बने जो षिक्षार्थियों को उन स्थितियों से जुझने और उबरने में मदद करें जिससे उनका वर्तमान और भविष्य बेहतर बन सके। इन बातों को ध्यान में रखकर मार्गदर्षन एवं परामर्ष का यह विषयपत्र यहां प्रस्तुत किया गया है। ताकि, इसके माध्यम से प्रषिक्षु यह समझ सकें कि उन्हे विद्यालयों में अपने विद्यार्थियों का विकास कैसे करना है। यह विषय पत्र एक प्रकार से षिक्षक की षिक्षण के अलावा जो अलग महत्वपूर्ण भूमिका है, उसको स्थापित करने की कोषिष करता है। षिक्षक के माध्यम से दिया जानेवाला मार्गदर्षन और परामर्ष षिक्षार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उनका अपने षिक्षकों के प्रति यह विष्वास होता है कि वे उन्हें सही सुझाव देंगे। इसलिए, षिक्षक को भी यह समझना होगा कि मार्गदर्षन या परामर्ष का कार्य कोई सामान्य कार्य नहीं है बल्कि इसके लिए विषेष समझ की आवष्यकता है। अतः, मार्गदर्षन और परामर्ष से सम्बंधित सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान की समझ होने के बाद ही षिक्षक उस प्रकार के कार्य करने के लिए सही रूप में सक्षम हो पाएंगे।

Unit-1	
मार्गदर्षन की बुनियादी समझ	**Fundamentals of Guidance**
• मार्गदर्षन : अवधारणा, प्रकृति एवं आवष्यकता • मार्गदर्षन के उद्देष्य एवं सिद्धांत • मार्गदर्षन के प्रकार : शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत • विद्यार्थियों में मार्गदर्षन के मुद्दे एवं समस्याएं	• Concept, nature and need of guidance. • Objectives and principles of guidance. • Types of Guidance: Educational, Vocational and Personal. • Issues and problems of guidance in students.

Unit-2	
परामर्ष की बुनियादी समझ	**Fundamentals of Counselling**
• परामर्ष : अवधारणा, प्रकृति एवं आवष्यकता • परामर्ष और मार्गदर्षन में अंतर की समझ • परामर्ष के उद्देष्य एवं सिद्धांत • विद्यार्थियों में परामर्ष के मुद्दे एवं समस्याएं	• Concept, Nature and Need of Counseling • Difference between Guidance and Counseling • Objectives and principles of Counseling • Issues and Problems of counseling in students

Unit-3	
मार्गदर्षन एवं परामर्ष के तरीकें	**Techniques in Guidance and Counselling**
• मार्गदषन में उपयोग किए जानेवाले टूल्स : अवलोकन, प्रष्नावली, एनेकडोटल रिकार्ड, संचयी रिकार्ड, साक्षात्कार, केस स्टडी	• Tools used in guidance: Observation, Questionnaire, Anecdotal record, Cumulative record, Interview, Case study

• परामर्ष की विधियां : निदेषात्मक, अनिदेषात्मक, चयनषील; • परामर्ष की प्रक्रियाओं की समझ • विषेष आवष्यकतावाले बच्चों के लिए मार्गदर्षन एवं परामर्ष की प्रक्रिया	• Methods of counselling: Directive, Non-Directive, Eclectic. • Understanding the procedures of counselling. • Guidance and Counselling for children with special needs.

Unit-4	
विद्यालय में मार्गदर्षन एवं परामर्ष सेवा	**Guidance and Counselling Services at School**
• विद्यालय में मार्गदर्षन एवं परामर्ष सेवाओं का आयोजन : योजना, क्रियान्वयन एवं आगे की कार्यवाही • विद्यालय में परामर्षदाता एवं षिक्षकों की भूमिका • रोजगार सम्बंधी मार्गदर्षन सेवाएं, रोजगार सूचना केन्द्र, युवा केन्द्र	• Organizing Guidance and Counseling services at school: Planning, execution and follow-up • Role of counsellor and teachers in organizing guidance services • Career guidance services, Career Information Centre, Youth Centres , Career Bulletin

References:

Books

Agochiya, D. (2010). Life Competencies for Adolescents: Training Manual for Facilitators, Teachers and Parents. New Delhi: Sage.

Archer, S.L. (1994). Interventions for Adolescent Identity Development. New Delhi: Sage.

Atwater, E. (1994). Psychology for Living: Adjustment, Growth and Behaviour Today. (5th ed.). New Jersey: Prentice Hall.

Baron, Robert. (2000). Psychology. (3rd ed.). New Delhi: Prentice Hall.

Bernard, H. W. (1951). Towards Better Personal Adjustment. New York: McGraw Hill.

Bernard, H. W. (1961). Mental Hygiene for Classroom Teachers. New York: McGraw Hill.

Bhatnagar, A. and Gupta, N. (Eds).(1999). Guidance and Counselling, Vol. I: A Theoretical Perspective, New Delhi: Vikas.

Bhatnagar, A. and Gupta, N. (Eds). (1999). Guidance and Counselling, Vol. II: A Practical Approach. New Delhi: Vikas.

Capuzzi, D. and Gross, D. R. (1991). Introduction to Counselling: Perspectives for the 1990s. Massachusetts: Allyn and Bacon.

Caroll, H. A. (1952). Mental Hygiene: The Dynamics of Adjustment. New York: Prentice Hall.

Carson, R. C., Butcher, J. N., Mineka, S. (2000). Abnormal Psychology and Modern Life. (11th ed.). New Delhi: Pearson Education.

Chowdhary, G.B. (2014). Adolescence Education. New Delhi: PHI.

Davar, B. (2001). Mental Health from a Gender Perspective. New Delhi: Sage.

Dusek, J. B. (1991). Adolescent Development and Behaviour. New Jersey: Prentice Hall.

Goode, William. (1994). The Family. (2nd ed.). New Delhi: Prentice Hall

Hariharan, M. and Rath, R. (2008).Coping with Life Stress: The Indian Experience. New Delhi: Sage.

Martin, G. L. and Osborne, G. J. (1989).Psychology, Adjustment and Everyday Living. New Jersey: Prentice Hall.

Nayar, U.S. (Ed.) (2012). Child and Adolescent Mental Health. New Delhi: Sage.

Paloutzian and Santrock.(2005). Psychology of Religion Module.In J. W. Santrock.Psychology. (7th ed.). New Delhi: Tata Mc-Graw Hill.

Patel, V. and Thara, R. (Ed).(2003). Meeting the Mental Health Needs of Developing Countries. New Delhi: Sage Publications

Ranganathan, N. (Ed.) (2012). Education for Mental Health. New Delhi: Shipra.

Saraswathi, T. S., Brown, B. B. and Larson, R. W. (2002). The World's Youth: Adolescence in Eight Regions of the Globe. Cambridge: Cambridge University Press.

Schaefer, C. E. and Millman, H. L. (1981).How to Help Children with Common Problems. New York: Van Nostrand Reinhold Company.

Spielberger, C. (1979). Understanding Stress and Anxiety: A Life Cycle Book. London: Harper and Row.

Veeraraghavan, V., Singh, S. and Khandelwal, K. (2002).The Child in the New Millennium. New Delhi: Mosaic Books.
Verma, S. and Saraswathi, T.S. (2002). Adolescence in India: An Annotated Bibliography. Jaipur: Rawat.

Research Papers

Arnett, J. J. (2007). Suffering, Selfish, Slackers?Myths and Reality about Emerging Adults.J Youth Adolescence. 36. 23–29.
Gupta, L. (2008). Growing Up Hindu and Muslim: How Early Does it Happen? Economic and Political Weekly.43(6).35-41.
Kakar, S. (2007). Family Matters. India International Centre Quarterly. 33 (3/4). 214-221.
Ranganathan, N. (2008). Changing Contours of Family Dynamics in India: A Perspective. Paper presented at National Conference on India in the 21st Century. Mumbai: University of Mumbai.
Ranganathan, N. (2011). Puberty, Sexuality and Coping: An Analysis of the Experiences of Urban Adolescent Girls. In A. K. Dalal and G. Misra (Eds.).New Directions in Health Psychology.(pp 141-154). New Delhi: Sage.
Razzack, A. (1991). Growing up Muslim.Seminar. 387. 30-33.
Thapan, M. (2001). Adolescence, Embodiment and Gender Identity in Contemporary India: Elite Women in a Changing Society. Women's studies International Forum. 24(3/4). 359-371.

Documentaries and Films:

Alexander, A. (2014). Elee: The Invisible Child [Animation]. India: NID (Diploma Project).
Bandyopadhyay, M. (2006). Being Male, Being Koti [Documentary]. India: PSBT.
Sanyal, A. (Director). (2011). A Drop of Sunshine [Documentary]. India: PSBT.
Srinivasan, A. (Director). (2009). I Wonder… [Documentary]. India: PSBT.
Farooqui, S. and Hassanwalia, S. (2013). Bioscope: Non Binary conversations on Gender and Education [Documentary]. India: Nirantar.

C-11 (d)
पर्यावरणीय षिक्षा

विकास की होड़ में मनुष्य द्वारा किए जा रहे कार्य न सिर्फ पर्यावरण के लिए संकट बन रहे हैं बल्कि वे कार्य स्वयं मनुष्य के लिए भी आत्मघाती हैं। लेकिन, चिंता का यह विषय है कि हम फिर भी अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनषील नहीं हो पा रहे हैं और लगातार अपने पर्यावरण को क्षति पहुंचा रहे हैं। ऐसा क्यों हो रहा है? यदि उसके पीछे के कारणों की पड़ताल करें तो हम पाएंगे कि कहीं न कहीं पर्यावरणीय षिक्षा की कमी हमारे समाज में है जिसके कारण लोग यह समझ ही नहीं पा रहे हैं कि उनके कार्य पर्यावरण को कैसे नुकसान पहुंचा रहे हैं। अतः समाज को सजग बनाने के लिए पर्यावरणीय षिक्षा की अवधारणा को विद्यालयों में लाया जाना बहुत आवष्यक हो गया है ताकि षिक्षार्थी विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय मुद्दों को संवेदनषील तरीके से समझ सकें तथा अपने माध्यम से अपने समुदाय को सजग बना सकें। इस काम के लिए, षिक्षकों को सबसे पहले तैयार होना होगा ताकि वे अपने षिक्षार्थियों को बेहतर तरीके से सजग बना पाएं। इस उद्देष्य की पूर्ति के लिए इस विषयपत्र को निर्मित किया गया है जिसके माध्यम से प्रषिक्षु पर्यावरणीय षिक्षा की समकालीन अवधारणा से अवगत हो सकेंगे तथा उसके षिक्षणषास्त्र को समझ सकंगे। अभी के जो प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दे हैं उनको समाज कैसे देख रहा है और उनके प्रति किस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, यह भी समझना जरूरी है जिसकी चर्चा इकाई दो में की जा रही है जिसमें बिहार विषेष को केन्द्र में रखा गया हैं। इसके साथ ही, यह समझ भी इस विषय के प्रषिक्षु प्राप्त करेंगें कि वे अपने विद्यालयी एवं स्थानीय पर्यावरण को कैसे समझ सकते हैं तथा उनको बेहतर बना सकते हैं। और अंत में, चौथी इकाई पर्यावरणीय षिक्षा को विद्यालयी पाठ्यचर्या से जोड़ने के प्रभावी तरीकों की चर्चा करती है। चर्चाओं के माध्यम से प्रषिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति एक सजग दृष्टिकोण बन पाएगा।

Unit-1	
पर्यावरणीय षिक्षा की समझ	**Understanding Environmental Education**
• पर्यावरणीय षिक्षा की अवधारणा : अर्थ, प्रकृति एवं प्रमुख अवयव • पर्यावरण एवं संवहनीय विकास • पर्यावरण का पारम्परिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ सम्बंध • पर्यावरण के प्रति सजगता में षिक्षा की भूमिका • पर्यावरण संरक्षण सम्बंधी संवैधानिक प्रावधानों की समझ	• Concept of Environmental Education: Meaning, nature and major components. • Environment and sustainable development. • Relating environment with traditional knowledge and cultural practices. • Role of Education in creating environmental awareness. • An overview of constitutional provisions related to environment and its protection.

Unit-2	
प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दे	**Major Environmental issues**
• स्थल, जल और वायु सम्बंधी प्रदूषण • वनों का कटना : वनाच्छादित भूमि का लगातार घटना • कूड़ा का निकलना तथा इसका प्रबंधन • पर्यावरण का खराब होना तथा इसका लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ता प्रभाव • ग्रीन हाउस गैस का स्राव तथा भूमण्डलीय ताप में वृद्धि • जलवायु परिवर्तन : मौसम चक्र का बिगड़ना • प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं का पर्यावरण पर प्रभाव • बिहार के संदर्भ में पर्यावरणीय मुद्दे	• Pollution related to land, water and air. • Deforestation: Change in forest cover over time. • Waste generation and management. • Environmental degradation and its impact on the health of people. • Green house gas emission and global warming. • Climatic changes: Disturbance in weather cycle. • Impact of natural-disaster/man-made disaster on environment. • Environmental issues in the context of Bihar.

Unit-3	
स्थानीय पर्यावरण की समझ	**Understanding Local Environment**
• स्थानीय पर्यावरण : प्रमुख घटक एवं मुद्दे • पर्यावरण एवं समुदाय : स्थानीय परम्पराएं एवं सांस्कृतिक रीति–रिवाज • विद्यालय का पर्यावरण : अन्दर और आस–पास, प्रमुख मुद्दे • स्थानीय पर्यावरण के प्रति संवेदनषीलता : विविध तरीके, मीडिया की भूमिका, इको–टूरिज्म	• Local environment: Understanding of components and major issues • Environment and Community: Local traditions and cultural practices • The environment of school: Within and surroundings, major issues • Sensetization towards local environment: different ways, role of media, ecotourism

Unit-4	
पर्यावरणीय षिक्षा : पाठ्यचर्या, षिक्षणषास्त्र एवं षिक्षक	**Environmental Education: Curriculum, Pedagogy and Teacher**
विद्यालयी पाठ्यचर्या में पर्यावरणीय षिक्षा : विभिन्न विषयों में पर्यावरणीय षिक्षा से संबंधित विषयवस्तुओं की पहचान तथा उनका पर्यावरण षिक्षा के प्रति समेकित पाठ्यचर्या का उपागम; हरित की अवधारणा • विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर पर्यावरणीय षिक्षा के षिक्षणषास्त्र की समझ • षिक्षक की भूमिका : षिक्षण के दौरान पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनषील; इकोक्लब बनाना, प्रदर्षनी लगाना, क्षेत्र भ्रमण, विद्यालय के पर्यावरण के प्रति संवेदनषील	• Environmental Education in School Curriculum: Identification of topics related to environmental education in school subjects and their analysis, integrated approach towards environmental education in school curriculum; idea of Green Curriculum. • Understanding pedagogy for Environmental Education at school for different levels. • Role of teacher: Sensitive towards environmental issues while teaching, making Ecoclubs, organising exhibitions, field trips, sensitive towards the environment of school.

References:

Agarwal, A et. al. (ed.) (2001). Green Politics : Global Environment Negotiations. New Delhi: Centre for Science and Environment

Agarwal, A. &Narain S. (1991). The State of India's Environment – The Third Citizen's Report. New Delhi: Centre for Science and Environment.

Agenda 21, UN Conference on Environment and Development (The Earth Summit)(1991). In Palmer, J. and Neel, P. (Ed.). The Handbook of Environmental Education, London: Routledge.

Alkazi, F., Jain, O. and Ramdas, K. (2001). Exploring our Environment– Discovering the Urban Reality. New Delhi: Orient Longman

CEE (1986). Joy of Learning, Handbook of Environmental Educational Activities. Ahmadabad: Centre for Environment Education

Centre for Environmental Education (1997). The Green Teacher: Ideas, Experience and Learning. In Educating for the Environment. Ahmadabad: CEE.

Driver R. Guesne, E. &Tiberghien, A. (1985). Children's Ideas in Science. U.K.: Open University Press

Harvey, B. &Hallet, J. (1977). Environment and Society–An Introduction and Analysis. London: Macmillan Press.

Kumar, D. K. Chubin, D. (2000). Science, Technology and Society : A source book on research and practice. London: Kluwer Academic Publication

Kumar, Krishna (1996). Learning from Conflict. New Delhi: Orient Longman.

NCERT (2006). Position paper on Habitat & Learning. New Delhi: National Council for Educational Research and Training.

Pedretti, E. (2003). Teaching Science, Technology, Society and Environment (STSE)Education. In *The Role of Moral Reasoning on Socio-scientific Issues and Discourse in Science Education*. Science and Technology Education. Vol. 19, 219-239.

Raghunathan, Meena&Pandy, Mamta(Eds) (1999). The Green Reader: An introduction to Environmental Concerns & Issues. Ahmadabad: Centre for Environment Education

Scrase, T. J. (1993). Image, Ideology and Inequality. New Delhi: Sage Publication

UNEP (2013). Emerging issues in our global environment (year book).United Nations Environment Programme.

UNESCO – UNEP (1980). Environment Education: What, Why, How . . . Paris: International Education Series.

UNESCO-UNEP (1990). Basic Concepts in Environmental Education. In *Environment Education Newsletter*. Paris: UNESCO

VidyaBhawan Society (1995). Report of the Seminar on Environmental studies (23rd-25th November, 1995). Udaipur

Yencker, D., Fier, J. & Sykes, H. (2000). Environment Education and Society in the Asia– Pacific. London & New York: Routledge Publication.

मिश्र, अनुपम (1985). देष का पर्यावरण. नई दिल्ली : गाँधी प्रतिष्ठान।

मिश्र, अनुपम (1993). आजभी खरे है तालाब. नई दिल्ली : गाँधीप्रतिष्ठान।

Reports and Journals for study

- Journal “Terra Green” by TERI, India.
- Journal of Environmental Sciences, Elesvier

School Internship Programm

School Internship Programm (Second Year)			Four month Tentatively October-January
Tasks	**Details**		**Marks**
1	School Diary		10
2	Classroom Observation		20
3	School Observation (Interaction with school management or Meeting with SMCs		10
4	Teacher-Student Dialogue (बतकही)		10
5	Professional Ethics		10
6	Project Work or Action Research		40
7	Teaching Practice (Learing Plan Transaction in Classroom)	Assessment by Mentor	100
		External Assessment	50
		Grand Total	**250**